* श्रीः *

लखनऊ की कब्र

या

शाही महलसरा ।

उपन्यास ।

तीसरा हिस्सा ।

किशोरीलाल गोस्वामि लिखित ।

श्री छबीलेलाल गोस्वामि अध्यक्ष

श्री सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन

द्वारा प्रकाशित

बार
००

सन् १९२५

मूल्य
दस आने

* श्री *

लखनऊ की क़ब्र

या

शाही महलसरा

उपन्यास

---

* तीसरा हिस्सा *

श्रीकिशोरीलालगोस्वामि लिखित

श्रीछबीलेलाल गोस्वामी अध्यक्ष

श्री सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन

द्वारा प्रकाशित।

दूसरी बार १०००]   सन् १९२५   [मूल्य दस आने]

* श्रीः *

लखनऊ की क़ब्र

या

शाही महलसरा

उपन्यास

तीसरा हिस्सा

पहला बयान

ताज्जुब होगा, जब नाज़रीन यह देखेंगे कि मेरी 'सवानह उमरी का सिलसिला दूसरे हिस्सेके आख़िरी बयान के अख़ीर में क्या था, और अब इस तीसरे हिस्सेके शुरू बयान में क्यों कर शुरू होताहै !!!

इस बातको पढ़नेवाले भूले न होंगे कि 'शाहीमहलसरा' के दूसरे हिस्सेके आख़िरी बयानमें मेरी क्या हालत थी और अब मैं इस तीसरे हिस्से के शुरू बयान में क्यों कर पढ़ने वालों के सामने आता हूं !

आह, वह भी कैसा ख़तरेनाक वक़्त था कि जब मैं उस ख़ंजर वाले पुतलेमें बंधा हुआ था और कंबख़्त आसमानी मेरी तरफ़ अपनी ख़ौफ़नाक आंखोंसे घूरकर यह कह रही थी कि,—

"बस, यूसुफ़ ! तेरी सारी शरारतों का अब ख़ातमा हुआ चाहता है ! पस, तू जल्द अपने ख़ुदाको याद करले, ताकि मैं इस पुतले का पेंच घुमाऊं और तेरी बोटियां उड़ादूं !!!"

ओफ़ ! वह भी कैसा नाज़ुक वक़्त था, जबमैं उस क़ालिब

पुतले से जकड़कर बंधा हुआ था! और आसमानी उसके पेंच घुमाने के लिये आमादा होरही थी! अल्लाह, अगर उस वक्त मेरी उम्र कुछ भी बाक़ी न रही होती तो मेरा बिलकुल ख़ातमा होगया होता! मगर ख़ैर उस सिलसिले को छोड़कर और अभी यह बात न लिखकर कि मुझे उस बदज़ात आसमानी के चङ्गुलसे खुदावंद करीमने क्योंकर छुड़ाया, मैं इस हिस्से में अपनी दास्तान का सिलसिला यों शुरू करता हूं।

इस किताबके पहिले हिस्सेके शुरू बयानका पहिला वर्क नाज़रीन खोलकर देखेंगे तो उन्हें यह बखूबी मालूमहोजायगा कि महीना जेठका था और रात आधीसे ऊपर पहुंचचुकी थी, जबमैं दर्याये गोमतीके किनारे दिलरुबा दिलाराम की यादमें दीवानाहो, घूम रहाथा। एक तो प्यारी दिलारामकी जुदाईने मुझे पूरा सौदाई बनाही दियाथा, दूसरे जब उस लांबे क़दके आदमी ने, जिसका नाम नज़ीरथा, मुझे आकर नाहक छेड़ा, गालियां दी और तलवार का वार मुझपर किया तो मैं मारे गुस्सेके एक दम बदहवास हो गया और उसके वारको बचाकर मैंने भी अपनी तलवारका वार उसपर किया। खुदाके फ़ज़लसे वह बदकार मारा गया और मैंने अपनी तलवारको खून पोंछकर मियान के अन्दर किया।

इसके बाद जब मैंने मोमबत्ती जलाकर उसके उजाले में उस शख़्सके चेहरे को देखाथा तो नफ़रतसे उसके ऊपर मैंने थूक दिया।

लेकिन, ऐसा मैंने क्यों कियाथा, इसकी एक वजह ख़ासहै और वह यहहै कि इस शख़्सको मैंने अकसर अपनी गली में गश्त लगाते हुए देखा था। यह कंबख़्त अकसर दिनको और रात को भी, मेरी गलीमें फेरी लगाया करता सीटी बजाता तानें उड़ाता और मेरे मकान की खिड़की के नीचे चहलकदमी करता। मैंने इसे कई मर्तबः ऐसी हर्कत से बाज़ आने के लिये नसीहत की, लेकिन इसने मेरे

कहने पर कुछ भी अमल न किया।

एक रोज़का ज़िक्र है किमैं एक अमीर के यहां एक तस्वीर रंगने गया था, वहांसे जब वापस आया और ज्योंही अपने मकान के क़रीब पहुंचा तो क्या देखता हूं कि वही पाजी मेरे मकानके अंदरसे निकला और मुझे देख कर तेज़ी के साथ दूसरी तरफ़ भागा। यह देख कर मेरा ख़ून उबल उठा। मैंने चाहा कि दौड़ कर इसे पकड़ूं और इसका चुल्लूभर गरमागरम ख़ून पीलूं, लेकिन मेरा पैर आगे न बढ़ा और मैं देर तक बाहर ही ठिठकी रह कर मकान के अंदर गया।

अंदर आकर मैंने दिलाराम से पूछा,—"अभी, अभी कोई अजनबी इस मकान के अन्दर से निकल कर गया है,तू जानती है कि वह कौन है?"

मेरी त्योरी, मेरी आखें मेरी आवाज़ और मेरे जिस्म का तनाव देख कर दिलाराम समझगई होगी कि यह गुस्सेमें भरा हुआ है; इस लिये उसने बड़ी ही आजिज़ी के साथ कहा,-"प्यारे, शौहर! यह मैं नहीं कह सकती कि वह शख़्स कौन था, या उसकी सूरत शकल कैसी थी। उसने आकर जब कई आवाजें लगाईं और तुम्हारा नाम लेकर पुकारा, तो मैने अन्दर से सिर्फ़ इतनाही कह दिया कि वे मकान पर मौजूद नहीं है।"

मैंने झिड़क कर कहा,—"लेकिन, तुझे किसी ग़ैरशख़्स से बोलने की किसने इजाज़त दी!"

दिलाराम ने कहा,—"अल्लाह, यह तुम क्या कह रहेहो! अय, वाह, यह तो तुम्हींने कई मर्तबः मुझसे कहा है कि, अबकि ग़रीबीके सबब मैं लौंडी या ग़ुलाम नहीं रख सकता तो ऐसी हालत में, जब किमैं घर में मौजूद न रहूं, तुझे लाज़िम है कि अगर कोई शख़्स आवे और कुछ कहे तो उसे सुनकर उसका जवाब परदेके अंदरसे देदिया कर! मगर ख़ैर; आज तो मुझसे कुसूर हुआ कि मैं इस अजनबी से बोली, लेकिन, आइन्दः मुझसे ऐसी ग़लती हर्गिज़ न होगी।"

नाज़रीन, वह बात बिलकुल सही थी, यानी मैंने दिलाराम को ऐसाही हुक्म देरक्खा था, जैसा कि ऊपर उसके बयान में कहा गया है, इसलिये मैं चुप होगया और कुछ देर तक खामोश रहकर फिर मैंने कहा,—" लेकिन, यह तो बतला कि मकान का सदर दरवाज़ा तो बेशक दिनभर खुला रहता है, लेकिन यह बीचवाली ड्योढ़ी का दरवाज़ा क्यों खुला है, जिसे कि मैं बाहर जाते वक्त बंद करा गया था और जो मेरी गैरमौजूदगी में बंद रक्खा जाता है ? "

दिलाराम ने इसका जवाब बड़ी सफ़ाई के साथ दिया। उसने कहा,—" मैं ऊपर अपनी खिड़की में बैठी थी कि मेरी नज़र तुमपर पड़ी, बस, चटमैं नीचे उतर आई और आकर मैंने दरवाज़ा खोल दिया।

यह बात उसने इस सफाई के साथ कही कि जिसे सुनकर मुझे फिर उस पर कोई शक बाकी न रह गया। फिर मैंने उससे कुछ न कहा और मैं अपने काम में मशगूल हुआ। लेकिन, इस फ़िराक में मैं ज़रूर लगा रहा कि अगर अब यह कमीना मेरी गली में आये तो इसकी जूतियों से खूबही खबर लूं, मगर उस रोज़ के बाद यह फिर मेरी गली में नज़र न आया और उस वारदात के ठीक एक महीने बाद दिलाराम यकबयक गायब होगई !!!

आह, मैंने दिलाराम को जाभजा बहुत ढूंढा, लेकिन वह कहीं न मिली ! उस वक्त मेरा ध्यान इस कमीने की तरफ़ भी गया था कि शायद इसी बदज़ात ने उस बेचारी को अपने चंगुल में फंसा रक्खा हो ! यह सोच कर मैं इस बदमाश कोभी बराबर ढूंढता रहा, लेकिन उस रोज़ के पेश्तर, जबकि यह मारा गया था, मेरे सामने नहीं आया। यही वजह थी कि मोमबत्ती के उंजाले में इस की सूरत देखतेही मैंने इसके नापाक चेहरे पर थूका था।

आह, उस दिन दिलाराम को गायब हुए पूरे दो महीने होचुके थे, जिस दिन गोमती के किनारे इस कंबख्त को मैंने मारा था।

बाद इसके, उसकी तलाशी लेने पर मैंने उसके जेब में से एक

खन हाथीदांत पर बनी हुई एक तस्वीर, एक छोटासा छुरा और कई अशर्फ़ियां पाई थीं। उन सब चीज़ों को अपने जेब के हवाले कर मैंने मय उस शख्स की तलवार के, उसे गोमती में बहा दिया और उस जगह की ज़मीन को जहां पर खूनगिरा था, साफ़ कर दिलाराम की याद में मशगूल हुआ।

थोड़ीही देर के बाद वह नकाबपोश, जो दरअसल, आसमानी थी, आई और मुझे 'नज़ीर' समझ और मेरी आंखों पर पट्टी बांध कर अपने हमराह लेगई थी।

गो उस वक्त आंखों पर पट्टी बंधी रहने के सबब पूरे तौर से यह मैं न जान सका था कि यह आफ़त की बुढ़िया मुझे इस तरह घुमाती फिराती कहां या किस राह से लेजारही है, लेकिन तो भी इतना मैंने ज़रूर समझा था कि यह मक्कारा मुझे धोखे में डालने के लिये थोड़े से रास्ते में ही घुमा फिरा रही है। दर असल बात ऐसे ही थी, क्यों कि आंखें बंद रहने पर भी मैं उस रास्ते का कुछ कुछ अंदाज़ा करता जाता था, जो पीछे ठीक उतरा और जिस का हाल मैं यहां पर लिखता हूं।

नाज़रीन ग़ौर से सुनें,—जिस मुकाम पर मैंने नज़ीर को मारा था, उससे कुछ पूरब की तरफ हट कर मुझसे और आसमानी से मुलाक़ात हुई थी और वहांसे वह मेरी आंखों पर पट्टी बांधकर और अपने हाथ की छड़ी का एक छोर मुझे थम्हा कर दक्खिन की तरफ़ बढ़ी थी। गो, वह बराबर चक्कर लगाती हुई मुझे अपने साथ लेजारहीथी लेकिन वह बराबर दक्खिन की तरफही बढ़ती जातीथी।

उस मुकाम से, जहां से कि मैं आसमानी के साथ हुआ था, गोमती किनारे से अंदाज़न सौ कदम पर एक उजाड़ और टूटा फूटा कब्रिस्तान था। वह चहार तरफ़ से पक्की और क़द आदम चहार दीवारी से घिरा हुआ था, लेकिन उस वक्तकी तबदीलीके साथ ही साथ उस दीवार की हालत भी बदल गई थी; यानी वह बहुत ही बे मरम्मत हो कर जा बजा

कुछ कुछ गिर गई थी। उसके अन्दर जाने के लिये सिर्फ एक ही फाटक था, वह भी टूट फूट गया था और उसके किवाड़ नदारद थे। उस क़बरिस्तान का घेरा करीब सौगज़ की लम्बाई, चौड़ाई में होगा और उसमें इतनी कबरें बनी हुई थी कि जिन्होंने अपने फैलाव से इतनी भी जगह ख़ाली नहीं छोड़ी थी कि अब उसमें एक भी मुरदा दफ़नाया जासके।

नाज़रीन यहां पर यह खयाल करते होंगे कि यह क़बरिस्तान बहुत पुराना होगा, यही सबब है कि अब वह इस नौबत को पहुंच गया है। लेकिन नहीं, उसमें कुछ बात और ही थी। यानी वह दरअसल क़बरिस्तान न था, लेकिन किसी ख़ास काम के लिये और लोगों को धोखे में डालने के लिये उसकी सूरत कबरिस्तान सी बनाई गई थी, और इसीलिये वह इस अबतर हालत में रक्खा गया था कि वहां पर किसीका गुज़र न हो और जगह खाली न रहने के सबब उसमें कोई मुर्दा भी न गाड़ा जासके। किस्सहकोताह, यह कि न वह कबरिस्तान था और न उसके अन्दर बनी हुई कबरों के भीतर एक भी मुरदा गाड़ा हुआ था। तो वह क्या था! सुनिए, अर्ज़ करता हूं,—

गरज़ उसी कबरिस्तान के अन्दर, जोकि बिलकुल सुनसान रहता था और उस वक्त भी था, आसमानी मुझे लेगई और मेरा हाथ छोड़ कर वह उन कबरों के बीचोंबीच बनी हुई एक बड़ी कबर पर खड़ी होकर उसे अपने पैर के दाब से दबाने लगी।

दो चार बेर के दबाने पर उस कबर के बराबर बनी हुई एक दूसरी कबर के ऊपर का तख्ता पल्ले की तरह अन्दर की ओर झूल गया, जिसके खुलने की आवाज़ मैंने सुनी थी। इसके बाद आसमानी मेरे नज़दीक आकर मुझे उस कबर के ऊपर, जिसका कि दरवाज़ा खुल गया था, चढ़ा लेगई और हम दोनों, एक के बाद दूसरा, नीचे उतरने लगे।

चालीस डंडे सीढ़ियां, जो कि पत्थरः बनी हुई थीं, उतर कर, आसमानी ने अपने पैर का भरपूर दाब सबसे अखीरवाली सीढ़ी

करने का कोई निशान नहीं पाया था। दो ही चार कदम आगे बढ़ने पर मुझे सीढ़ियां फिर चढ़नी पड़ी थीं, जो गिनती में चालीस थीं सीढ़ियों के खतम होने पर सामने का दरवाज़ा खुला हुआ मिला, जोकि नीचेवाले दरवाज़े के साथ ही साथ खुलता और बंद होता था

और, तो उस दरवाज़े को पार कर के उस बुड्ढी ने मुझे एक कोठरी में पहुंचाया था, और मेरी आंखों पर की पट्टी खोल दी थी, और जिस दरवाज़े से होकर मैं उस कोठरी में पहुंचा था, उसे बंद करके वह गायब हो गई थी। मगर उस वक्त तो अंधेरे के सबब मैं वहां का हाल कुछ नहीं जान सका था; पर अब, जब कि मुझे वहां का सारा हाल मालूम हो गया है, मैं उसे यहां पर लिखता हूं।

उस कोठरी, में जिसमें उस बुड्ढी ने मुझे पहुंचाया था सफेद काले और लाल पत्थरों का फ़र्श लगा था। सो एक कोने के लाल पत्थर पर खड़ी होकर उस बुड्ढी ने उसे पैरों से भरज़ोर दबाया, जिससे उस कोठरी का दरवाज़ा, जिससे हो कर मैं उस कोठरीमें गया था; और नीचे सुरङ्गवाला दरवाज़ा, ये दोनों, एक साथ बंद होगए। अगर इन दोनों दरवाज़ों को खोलना होता तो उसी कोने के लाल पत्थर के बगल में बिछे हुए सफ़ेद पत्थर को दबाना पड़ता था, जिससे एक साथ दोनों दरवाज़े खुल जाते थे।

वह कोठरी आठ हाथ की लंबी चौड़ी चौकोर थी, और उस में लाल, सफ़ेद, और स्याह रंग के पहिलदार पत्थरों का फ़र्श लगा हुआ था। दीवारें साफ़, चिकनी और चूने की गच की हुई थीं। उस कोठरी में हर तरफ़ एक एक दरवाज़े बने हुए थे। उनमें एक तो वही था, जिससे हो करमैं उस कोठरी में दाखिल हुआ था। उंचाई भी उस कोठरी की आठ ही हाथ की थी और उसकी पाटन बिलकुल लदाव की, गोल बनी हुई थी।

पहले जब मैं उस बुड्ढी के साथ इस कोठरी में आया था तो अंधेरे के सबब मैंने यही समझा था कि कोठरी का फ़र्श गच किया

हुआ है, लेकिन नहीं, फिर उसके देखने से मैंने जाना कि वह गच नहीं बल्कि तीन रंग के पत्थरों का फ़र्श है और वे पत्थर ऐसी सफ़ाई से जमाए गए हैं कि नाखून रगड़ने परभी उनका जोड़ नहीं मालूम होता।

कोठरी के चारों दरवाज़ों में से किसीमें भी ताला नहीं नज़र आता था, लेकिन वे सब बन्द थे, जिनमें सुरङ्गवाले दरवाज़े को तो आसमानी ने जिस हिक्मत से बन्द किया था, उसे नाज़रीन जान ही चुके हैं, बाक़ीके तीन दरवाज़े भी उसी कोठरीकी दूसरी तरफ़ वाले दोनों कोनों के सफेद पत्थरों के दबाने से खुलते और लाल पत्थरों के दबाने से बन्द होते थे। लेकिन उन तीनों या चारों ही दरवाज़ों में अगर अन्दर से ताला लगा दिया जाता था तो वे फिर सिर्फ़ पत्थरों के दबाने ही से नहीं खुल सकते थे।

नाज़रीन भूले न होंगे कि मैं देरतक उसी अँधेरी कोठरी में बैठा हुआ उस आफ़त की बुढ़िया की राह तक रहा था, कि इतने ही में वह दरवाज़ा खुला था, जो सुरङ्गवालेदरवाज़े के ठीक सामने पड़ता था, और उसके खुलते ही हाथ में मोमी शमादान लिए हुए एक परी-जमाल मेरे सामने आईथी जिसका हालमैं पेश्तर लिख आयाहूं। (१)

वह परीजमाल कौन थी, इसे शायद नाज़रीन जानना चाहते होंगे; मैं भी यहां पर उसी परीजमाल के कुछ मुख़्तसर हाल को लिख कर, तब आगे बढ़ना मुनासिब समझता हूं।

तो वह नाज़नी कौन थी, बतलाऊं? अच्छा, सुनिए,—

वह थी, लखनऊ के ऐयाश बादशाह नसीरुद्दीन हैदर की बड़ी बेगम मलिका ज़मानी !!!

(१) पहिले भाग का पहिला परिच्छेद देखो।

दूसरा बयान।

नाज़रीन इस नामको सुनकर शायद चिहुंकेंगे, लेकिन जब वे इस बेगमके गुज़श्तः हालत सुनेंगे तो और भी हैरान होंगे और कहेंगे कि,—"अल्लाह, बादशाह नसीरुद्दीन हैदरकी बड़ी बेगम यही है, जिसका बाप एक कुरमी था और जो किसी वक्तमें रोटियों की भी मुहताज थी! लेकिन ख़ुदाके फ़ज़लसे उसकी किस्मत ने ऐसा पलटा खाया कि वह अवध के ख़ुदमुख़्तार बादशाह नसीरुद्दीन हैदरके सिर्फ़ मालही की नहीं, बल्कि उसके जानकी भी पूरी मालिक बन गई थी!!!

अकसर, हिन्दूभाई, जो मुसलमानों को यह इलज़ाम लगातेहैं कि,—"इन मुसलमानों को ज़ात पांत या नीच ऊंच का कुछ भी ख़याल नहींहै! इनका दिल अगर किसी नाज़नीपर चलगया, तो चाहें वह कैसीहो नीच जातकी क्यों न हो, ये चट उसे कलमा पढ़ा कर मुसलमान करलेते और अपनी बीबी बनालेते हैं। और ख़ास कर यहांके बादशाह, वज़ीर, वा अमीर उमरा तो नज़र पड़ने पर किसी औरत को भी, अगर वह उनके काबूमें आसके, हर्गिज़ नहीं छोड़ते और उसकी जात पांतका मुतलक ख़याल न कर उसे अपनी बीबी बना लेतेहैं, वगैरह, वगैरह।"

मैं भी आज़ादीके साथ इस बातको कबूल करूंगा, कि दर असल बात ऐसीही है। क्योंकि कुरान शरीफ़के हुक्म ब मूजिब तमाम दुनियांके काफ़िरोंको मुसलमान बना लेना और उनकी बीबीयोंको अपनी बीबी बनाना जायज़ वो दुरुस्त है, लेकिन हां, इतना मैं ज़रूर कहूंगा कि सिर्फ़ ऐयाशी और नफ़्सपरस्ती ही के ख़यालसे किसीकी औरतको छीनकर अपनी बीबी बनाना सरासर ज़ुल्म वो गुनाहमें दाख़िल है। ख़ैर, जो हो, मैं यहांपर मज़हबी बहस को तय करके सिर्फ़ मलिका ज़मानीकी निस्बत कुछ कहा चाहताहूं।

सूबे अवधमें सीतापुर ज़िलेके करीब ख़ैराबाद एक आबाद कस्बाहै, जिसके करीब 'पोरू' गांवमें 'रामभरोसे' नाम का एक

कुरमी रहताथा। गो, उसके पुरखे काश्तकारी का काम करते थे, लेकिन रामभरोसे ऐसा आलसी वो बदकिस्मत था कि वह महज़ मामूली मज़दूरीसे भी अपना पेट नहीं भर सकता था।

उसी (पीरू) गांवमें एक खुशहाल काश्तकार रहता था, जिसका नाम फ़तहमुराद था। उसी फ़तहमुरादके यहां रामभरोसे चार रुपय महीने पर नौकर था और उस (फ़तहमुराद) की खेती बारीका काम करता था।

बहुत रोज़तक रामभरोसेने नौकरीकी और बड़ी दियानतदारी के साथ उसके कामका अंजाम किया, लेकिन जब वह (रामभरोसे) मरा तो उसपर फ़तहमुरादके सौरुपये बाकी निकले, जिनके एवज़में उसने रामभरोसे की जोरू और पांच बरस की लड़की को पकड़ मंगाया और उन दोनोंको अपने घरके अन्दर क़ैद किया।

रामभरोसेकी जोरू, गो तीस सालके करीब पहुंच चुकीथी, लेकिन वह निहायत हसीन औरत थी, जिसके हुस्न को देखकर फ़तह मुराद फड़क उठा और उसने रामभरोसे की जोरूसे, जिसका नाम 'पियारी' था, कहाकि;—"तेरे शौहरके पास मेरे सौरुपए बाकी हैं, पस, जबतक मेरे रुपए तू अदा न करेगी, मैं तुम दोनों मां बेटियों को अपने घरके बाहर न जाने दूंगा।"

यह सुनकर पियारी बहुत कुछ रोई गिड़गिड़ाई और फ़तह मुरादके पैरोंपर अपना सर रगड़ने लगी और कहने लगी कि,—"मुझे तो रोटियोंके ही लाले पड़रहे हैं, भला मैं इतने रुपये, एक साथ क्यों कर दे सकती हूं! हां, अगर तुम ज़रा कुछ रोज़ सब्र करो और मुझे मुहलत दो तो मैं मेहनत मज़दूरी करके किसी न किसी तरह धीरे धीरे तुम्हारे रुपये चुका दूंगी।"

लेकिन, फ़तहमुराद तो उसके हुस्न पर दीवाना होरहा था, भला वह कब उसे अपने काबू से निकलने देता? सो उसने पियारी से कहा,—"नहीं, मैं तुझे मुहलत तो एक लहज़े की भी न दूंगा, और

बगैर दाम दाम रुपये चुकाए, अपने घर के बाहर भी न जाने दूंगा लेकिन हां अगर तू मेरा कहना मानले तो मैं कुल रुपयों को भी छोड़ दूंगा और अपने पास से भी बहुत कुछ तुझे दूंगा।

गरज़ यह कि फ़तहमुराद ने अपनी दिली ख्वाहिश 'पियारी' पर ज़ाहिर की जिसे सुन कर पहिले तो उसने इस काम से इनकार किया लेकिन जब उस ने देखा कि रुपये अदा करने की कोई सूरत नहीं नज़र आती तो लाचारी से फ़तहमुराद की बात पर वह राजी हुई।

पियारी बड़ी होशियार औरत थी। उसने देखा कि फ़तहमुराद की तीन बीबियां हैं, जिनमें पहिली तो काहिल, लावल्द और करीबुल मौत हो रही है, लेकिन दूसरी जो अधेड़ और मामूली सूरत शक्ल की है और जिसका लड़का 'रुस्तम, आठ बरस का है वह ज़रा कजोदराज है और इस की तीसरी बीबी के, जो कुछ हसीन और पूरी जवान है, सात और नौ बरस के दो लड़के हैं, जिनका नाम फतहअली और वारिसअली है और यही बीबी इस वक्त घर की मालिक हो रही है। पस, अगर इससे मेरी न पटी और मुझे खराब कर के फ़तहमुराद ने चार रोज के बाद मुझे निकाल दिया तो मैं अपने दीन और ईमान को खोकर कहीं की भी न रहूंगी। इसलिये बिहतर होगा कि एक इकरारनामा मैं फ़तहमुराद से इस मज़मून का लिखालूं तब अपनी ज़ात और पाक दामनी में धब्बा लगाऊं कि जब मेरी बेटी दुलारी स्यानी हो तो उस का ब्याह इन तीनों लड़को में से किसी एक के साथ कर दे।

लेकिन थोड़ी देर तक इस बात पर ग़ौर कर उसने अपने इस इरादे को दिल से निकाल दिया, क्यों कि वह यह बात जानती थी कि रुस्तम तो फ़तहमुराद के नुतफ़े से नहीं है और दीगर दोनों लड़के वैसे खूबसूरत नहीं हैं, जैसी कि दुलारी है।

ने इन्तकाल किया था तो रुस्तम की मां 'ज़हूरन' को फ़तहमुराद ने अपनी बीबी बना लिया था, जो फ़तहमुराद के घर रहती थी और उसका लड़का रुस्तम भी उसके साथ ही रहता था।

ऐसी हालत में पियारी ने सोचा कि ऐयाश फ़तहमुराद अगर कुछ दिनों के बाद 'ज़हूरन' को निकाल देगा तो रुस्तम भी निकाला जायगा; फिर मेरी 'दुलारी' की उसके साथ शादी का होना फ़ज़ूल वो बेकार होगा; और उसके साथ ही अगर यह फ़तहमुराद मुझे और मेरी बेटी दुलारी को भी कुछ दिनों के बाद निकाल दे तो क्या होगा।

गरज़ यह कि इन्हीं सब बातों पर ग़ौर कर के पियारी ने अपनी किस्मत और खुदा पर भरोसा रक्खा और हिन्दू से मुसलमान हो और कलमा पढ़ कर वह फ़तहमुराद की बीबी बनी।

पियारी ने थोड़े ही दिनों में अपनी अकलमंदी और कारगुज़ारी से फ़तहमुराद, उसकी तीनों जोरूओं और उसकी बेवा बहिन 'करी मुन्निसा' को, जो फ़तहमुराद के ही यहां रहती थी, अपनी मुट्ठी में कर लिया और सभोंने, पियारी को घर की मालिक बना दिया।

करीमुन्निसा फ़तहमुराद की हक़ीकी बहिन थी और बचपन से उसीके यहां रहती थी। शादी होने के थोड़ेहीदिनों बाद वह बेवा हो गई थी, तबसे फिर वह कभी ससुरार नहीं गई। वह औरत बड़ी पाकदामन और कुछ मालदार थी, क्योंकि उसने अपने शौहर के तरके से कुछ माल पाया था। सो उसने पियारी की होनहार लड़की, खूबसूरत लड़की, दुलारी को गोद लेलिया और उसे अपने मालका वारिस कायम किया। अब गोया पियारी की कुल ख़्वाहिशें पूरी होगई और वह दुलारी की तरफ़ से बिलकुल बेफिक्र होगई।

करीमुन्निसा खूब फ़ाज़िल औरतथी और कुरान तक मजेमें पढ़लेती थी सो वह बड़ी मुहब्बतके साथ दुलारी को फ़ारसी पढ़ाने लगी। रुस्तम फ़तहअली और वारिसअली ये तीनों तो पहिलेही से उससे पढ़ते थे।

दिन रात एक साथ रहने और जवानी की चढ़ाई से धीरे २ हज़रत इश्क ने भी मिहरबानी की और दुलारी तो रुस्तम के दिल में धीरे २ बढ़ते बढ़ते मुहब्बत ने अपना घर कर लिया।

उस वक्त, जिस वक्त का हाल मैं लिख रहा हूं, दुलारी बारह बरस की हो चुकी थी, रुस्तम को पन्द्रहवां साल था और फ़तह अली चौदह, और वारिसअली सोलह बरस का हो चुका था।

यों, ख़ूबसूरत दुलारी के साथ ये तीनों ही छेड़छाड़ किया करते थे, लेकिन दुलारी के दिल की दुलन ख़ूबसूरत रुस्तम के ऊपर ही थी और वह ज़ियादह छेड़छाड़ करने पर रुस्तम को तो कुछ नहीं कहती, लेकिन फ़तहअली और वारिसअली को फटकार देती थी और उन दोनों की शरारत की चुगली करीमुन्निसा से खाकर उन दोनों को खूब जलील करती थी। यही सबब था कि फ़तहअली और वारिसअली तो दुलारी से दबने गए और रुस्तम शह पाकर दिन ब दिन ढीठ होता गया। यहां तक कि दुलारी और रुस्तम में चुपके चुपके आशिक माशूक़ का रिश्ता कायम होगया, जिसका हाल पियारी और करीमुन्निसा को बहुत जल्द मालूम होगया। और उन दोनों ने आपस में सलाह करके फ़ौरन दुलारी की शादी रुस्तम के साथ करदी, क्योंकि दुलारी हमल से थी।

इसी दर्मियान में फ़तहमुराद, बूढ़ा तो हो ही चुका था यकबयक कज़ा कर गया और तब लोगों को यह मालूम हुआ कि उस(फ़तह मुराद) के कुल मालकी मालिका उसकी पहली बीबी लुत्फ़उन्निसा है। क़िस्सहकोताह, उसने अपने शौहर के मरनेके कई दिनोंके बाद अपने भाइयों की मदद से फ़तहमुराद की दूसरी बीबी ज़हूरन को घर से निकाल बाहर किया, रुस्तम भी उसके साथ निकाला गया। इसके बाद उसने फ़तहमुरादकी तीसरी बीबी गफ़ूरनको निकाला, जिसके साथ उसके दोनों लड़के फ़तहअली और वारिसअलीभीनिकाले गए। इन दोनों के निकाले जाने के बाद तीसरा नंबर पियारी का था, जो

अपनी लड़की दुलारी के साथ निकाल बाहर की गई उसके साथ ही करीमुन्निसा भी निकाली गई।

गरज़ यह कि लुत्फ़ुन्निसा ने एक एक करके फ़तहमुराद के घर को एकदम से साफ कर दिया और अपने भाइयों को अपने माल का वारिस बनाया।

इधर जब ज़हूरन, गफ़ूरन, पियारी और करीमुन्निसा निकाली गईं तो उस वक्त सब तो एक तरह से नाउम्मीद होगई थीं, लेकिन करीमुन्निसा के पास कुछ माल था, इसलिये वह बेफ़िक्र थी, सो वह उन सभों को अपने साथ लिये हुए लखनऊ के करीब रुस्तमनगर नाम कस्बे में आ बसी, जहां फ़तहमुराद की चाची रहती थी। यह औरत आलिम और बेवा थी औरनव्वाबमुहब्बतखांकेयहांउसकी लड़कियों को कुरान पढ़ाती थी। इसलिये वह अकसर नव्वाब के ही यहीं रहती और उसका घर ख़ाली रहता था; क्योंकि उसकी बेटी जमालुन्निसा अपने ससुरार रहती थी और बेटा कासिमबेग फैज़ाबाद में, एक मदरसे में पढ़ाता था। सो उसने अपनी भतीजी करीमुन्निसा और इसके साथ के सभी लोगों को अपने घरमें रख लिया और उन लोगों के पर्वरिश का भी कुछ इन्तज़ाम कर दिया।

यहीं आकर दुलारी को एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम मुहम्मदअली रक्खा गया। इसके बाद तो दुलारी और रुस्तम में बराबर खट पट रहा करती, क्यों कि दुलारी का चाल चलन बिगड़ चला था और वह खुल्लम खुल्ला फ़तहअली वारिसअली से दिल्लगी मज़ाक करने लगी थी; सिर्फ़ इतनाही नहीं, बल्कि रुस्तम के सामने भी उसके जो जी में आता, वही करती।

इससे रुस्तम बहुत रंजीदह हुआ और उसने दुलारी को, और उस घर को भी, छोड़ कर बादशाही रिसाले के एक नामी सवार अब्बास कुली बेग के घोड़े की साईसी अख़्तियार की।

इधर जब इमामबांदी ने दुलारी के चाल चलनका चरचा सुना

तो उसे अपने साथ नव्वाब के महलों में लेजाना बंद कर दिया और गफ़ूरनके साथ उसके दोनो लड़के, फ़तहअली और वारिसअली को अपने घर से निकाल दिया। ये दोनों जब अपनी मांके साथ निकाले गए तो फ़तहअली तो शाही फ़ीलखाने में फ़ीलवानी का काम करने लगा और वारिसअली शाही कारखाने में लुहारी का।

रुस्तम की मां ज़हूरन तो अपने लड़के के पहले ही साथ चली गई थी, अब गफ़ूरन भी अपने दोनों लड़कों के साथ चली गई। बस अब सिर्फ इमामबांदी के घर में करीमुन्निसा, पियारी और उसकी लड़की दुलारी ही रह गई और दुलारी का नन्हासा बच्चा महम्मदअली।

इसी अरसे में दुलारी को एक लड़की पैदा हुई, जिसका नाम ज़ीनतुन्निसा रक्खा गया। अफ़सोस, लेकिन अफसोस, कि अभी बेचारी दुलारी पूरी पन्द्रह बरस की भी नहीं हुई थी कि दो दो बच्चों की मां बन बैठी, जिसकी जवानी की कली अभी भर पूर खिली भी न थी।

क़िस्सह कोताह, दुलारी ऐसी बेहया, बदचलन और आवारह हुई कि वह जब चाहती घरसेभागजाती और अठवारों तक ग़ायब रहती। तो वह कहां रहती? जहां उसका जी चाहता! कभी वह रुस्तम, बेहया रुस्तम के यहां जाती, कभी फ़तहअली के यहां, कभी वारिसअली के यहां; और कभी कभी कहीं और ही इधर उधर!

मतलब यह कि उसका चाल चलन अच्छा न था और इसका चरचा लोगों में तेज़ी के साथ फैलने लग गया था। यहां तक तो लोगों ने शोहरत मचा दी थी कि दुलारी के लड़के महम्मदअली और लड़की ज़ीनतुन्निसा की सूरत शकल रुस्तम, फ़तहअली या वारिसअली, इनमें से किसी भी एक से ज़रा नहीं मिलती !!!

ख़ैर, जब दुलारी ने बड़ा सर उठाया तो इमामबांदी करीमुन्निसा और पियारी पर बहुत बिगड़ी और फिर तीनों ने मिल कर दुलारी को बहुत डांटा, पहिले तो वह घर से निकल कर रंडीपेशा करने पर

आमादा हुई, लेकिन फिर कुछ समझ बूझकर ठिकाने आगई और शाइस्तगीके साथ घरमें रहने लगी और घरके बाहर क़दम रखना उसने कतई छोड़ दिया।

इन्हीं अरसे में शाहज़ादे नसीरुद्दीनहैदर के मुन्नाजान नाम का एक लड़का पैदा हुआ, जिसके लिए एक धायका ज़रूरत हुई; क्योंकि बड़े घराने की औरतें अकसर बच्चा जन कर अलग होजाती हैं, और उस बच्चे के दूध पिलाने के वास्ते धाय मुकर्रर की जाती हैं। चाहे, इसका सबब कुछही हो, लेकिन अमीरोंके यहां यह चाल बहुत दिनों से जारीहै। इसके अलावे अङ्गरेज़ोंमें तो धाय की चाल कसरत से जारीहै और शाहज़ादा नसीरुद्दीनहैदर दिलसे अङ्गरेज़ था, पस उस की बीबीके वास्ते, नहीं नहीं, उसकी बीबीके बच्चेके वास्ते, एकधाय का मुकर्रर होना बहुत ज़रूरी था। लिहाज़ा धायकी तलाश के लिये शाही आदमी छूटे, उनमें से किसी किसी ने जाकर यह हाल फ़तह मुरादकी चाची इमामबांदोसे भी कहा; क्योंकि वह एक आलिम फ़ाज़िल औरतथी और शाहीमहलोंमें उसकी खूबही इज़्ज़तकी जातीथी।

गरज़, इस खबरको सुनकर पहिले तो उसने धायको तलाश कर देनेसे इनकार किया, लेकिन जब करीमुन्निसा और पियारीने उसको बहुत आर्ज़ू मिन्नतकी और दुलारीने भी अपने चाल चलनके सुधार ने और नेकनीयतीसे चलने की बड़ी बड़ी कसमें खाईं तो आखीर में इमामबांदी ने शाहीमहल में दुलारी की सिफ़ारिश की और करीब दो सौ उम्मेदवार धायों के साथ दुलारी भी महल में हाज़िर की गई।

दुलारी की किस्मत तो उस वक्त उफनी पड़ती थी, सो भला उसके हुस्न वो नज़ाकतके सामने बादशाह बेगमको दूसरी धाय कब पसन्द आ सकती थी, और उस हालत में, जब कि उसका दूध भी निहायत फ़ायदेमन्द था!!! गरज़ यह कि बाकी की सब धाय कुछ नकुछ इनाम देकर रुखसत करदी गई और मुन्नाजान कोदूध पिलाने के लिये किस्मतवर और खूबसूरत नाज़नी दुलारी उसी वक्त मुकर्रर

कर ली गई !

उस वक्त मुन्नाजान के बाप नसीरुद्दीनहैदर को लखनऊ का तख़्त नहीं दस्तयाब हुआ था क्यों कि उसका बाप बादशाह गाज़िउद्दीन हैदर जीता था, लेकिन बाप के जीते रहते भी नसीरुद्दीन हैदर जो चाहता, सो करता था। उसने कोड़ियों वो रंडियां नौकर रखली थीं, जिनमें कई तो पोशीदा तौर से महल के अन्दर ही रहती थीं। गो, उसकी मां बादशाह बेगम यह सब जानती थी, लेकिन मुहब्बत के सबब वह अपने लायक़ लड़के को कुछ भी ममोहत नहीं करती थी।

महलसरा के अन्दर दुलारी शाहज़ादी केसाथ रहती थीं और उन ने बिलकुल सादगी अख़्तियार कर ली थी; यहां तक कि जिन लोगों ने पेश्तर बदचलन दुलारी के तमाशे देखे थे, वे अगर इस सीधी साधी दुलारी को देखते तो हैरान हो जाते और यह कहते कि यह, वह बदचलन दुलारी हर्गिज़ नहींहै, बल्कियह तो एक दूसरी ही नेक खसलत और पाकदामन सीधीसादी दुलारी है ! ! !

इसी सीधी साधी ख़ूबसूरत दुलारी पर; जो कि महल के अन्दर बड़े करीने के साथ रहती थी, इत्तफ़ाक़ से शाहज़ादे नसीरुद्दीन हैदर की नज़र पड़ गई और वह ख़ूबसूरत दुलारी पर हज़ार जान से आशिक़ हो गया।

जिन लोगों ने नसीरुद्दीनहैदर की तस्वीर देखी है, वे इस बात को ज़रूर कबूल करेंगे कि वह निहायत ख़ूबसूरत जवान था; पस, उसकी ख़ूबसूरती को देख कर तबीयतदार दुलारी के दिल का भी ख़ून न हो गया हो, यह तो मुमकिन ही नहीं !

गरज़ यह कि चार नज़र होते ही एक दूसरे पर आशिक़ हो गये और किस्मतवर दुलारी को किस्मत ने गोया आज सातवें फ़लक पर कदम रक्खा।

फिर तो दूरही दूर से दोनो की आंखें लड़ने लगीं और शरीर दुलारी हर एक इशारे में नसीरुद्दीन के दिलपर ज़ख्म पहुंचाने लगी;

लेकिन इसके अलावे नसीरुद्दीन के हज़ार सर पटकने पर भी दुलारी उसके नज़दीक न आई और दूरही से उसे मुर्ग़ बिस्मिल की तरह तड़पाने लगी; क्यों कि अब उसने दिलही दिल में यह पक्का इरादा कर लिया था कि,—' बग़ैर इसकी बेगम बने, इसके दिल की आग हर्गिज़ न बुझाऊंगी । ,

पस, जब नसीरुद्दीन उसके बुलाने के लिये कुटनी भेजता, तो वह उस कुटनी को फटकार कर दूर कर देती और जब नसीरुद्दीन इश्क़ आमेज़ रुक्के लिखता, तो दुलारी उसका जवाब निहायत तबीयतदारी के साथ देती, जिसे पढ़कर नसीरुद्दीन फड़क उठता था। नसीरुद्दीन के एक ख़त के जवाब में दुलारी ने सिर्फ़ एक ग़ज़ल लिखी थी, जिसे दर्ज कर मैं इस बयान को पूरा करता हूं,—

" अदम से जानिबे हस्ती तलाशे यार में आये ।
हवाए गुल से हम किस बादए पुरख़ार में आए ॥
अगर बख़्शे ज़हे क़िस्मत, न बख़्शे तो शिकायत क्या ।
सरे तसलीम ख़म है जो, मिज़ाजे यार में आए ॥
न पूछो अहले महफ़िल, हमसे दीवानों की बेताबी ।
यहां मज़मां सुना, यों भी तलाशे यार में आए ॥
इशारा है यही उनके लबे शीरीं के ख़ालों का ।
मिलाने को नमक हम शरबते दीदार में आए ॥
न सूए सब्ज़ए नौरस नहीं रुख़सारे रंगीं पर ।
जनाबे ख़िज़्र बहरे सैरए गुलज़ार में आए ॥
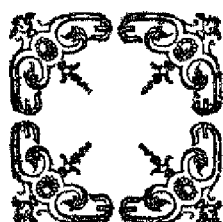
तीसरा बयान।

शाहज़ादा नसीरुद्दीनहैदर दिनपर दिन दुलारीके इश्क में गर्क होता गया और दुलारी उसे दूरही दूरसे नीमबिस्मिल की तरह तड़पाती गई। होते होते नसीरुद्दीनहैदर इस नौबतको पहुंच गया कि उसका खाना, पीना, ऐशो आराम सब छुटगया और वह सूखकर कांटा होगया। पहिले तो उसने अपने इश्क को लोगों से बहुत छिपाया, और बीमारीका बहाना किया, लेकिन जब बादशाही तबीबोंने उसे इश्कका मरीज़ ठहराया और आख़ीरमें उसके इश्क का राज़ भी जब लोगों पर खुला तो उसके दोस्त अहबाब उसे बहुत कुछ समझाने बुझाने और नसीहत करने लगे, लेकिन सब बेकार हुआ और नसीरुद्दीनहैदर दुलारी की जुदाईमें अपनी जान खोदेनेके लिये तैयार हुआ।

नाज़रीन यह सुनकर शायद ताज्जुब करेंगे, लेकिन इसमें ताज्जुब की कोई बात नहींहै और यह बहुत ही सहीहैकि अगर ऐसे मौकेपर दुलारी दूरअंदेशीपर ख़याल न करती और आसानीसे नसी रुद्दीनके कबज़े में आजाती तो उसका नतीजा यही होताकि चाररोज़ के बाद जब नसीरुद्दीनका दिल भरजाता तो दुलारी बहुत बे आबरू होकर निकाल बाहरकी जाती, क्यों कि आख़िर रंडो का कयाम ही कै दिन हो सकता है! और नसीरुद्दीन को तो यह आदतही थी कि वह ज़ियादह रोज़ तक एक औरत से ताल्लुक नहीं रखता था, जिसका मुफ़स्सिल हाल मैं आगे चलकर लिखूंगाही। यह बात दुला री भी शायद जान गई होगी, तभी वह दूसरे ढङ्ग से चल रही थी।

इसलिये नसीरुद्दीन ज्यों ज्यों ज़ख़्मी होता गया, दुलारी त्यों त्यों उसके जिगर पर अपनी कातिल आखों की चोट पर चोट पहुंचाती गई; और वह जितना ही घुलने लगा, दुलारी उतनीही दिलही दिल में खुश होने लगी।

जिन लोगोंने तवारीखके पन्ने उलटे हैं, वे इस बात पर ब खूबी ग़ौर कर सकतेहैं कि अगर पेश्तर खूबसूरत नूरजहांने एक रोज़ भी सलीम की ख्वाहिश पूरी की होती तो फिर तमाम उम्र उसे ऐसा मौका कभी न मिलता कि वह सलीम के जान और मालकी मालिक बनजाती और हिन्दुस्तानकी बादशाहत की बाग डोर अपने कब्ज़ेमें करके बड़े आरामो चैन के साथ अपनी उम्र बिताती; लेकिन जब कि उसने सलीम को अपने इश्क में भरपूर जलाकर ख़ाक कर दिया तो आखिर उसके लिये भी एक दिन ऐसा आया कि वह सारे हिन्दुस्तान की मलिका कहलाई और अख़ीरमें बड़े आराम और इज्ज़तके साथ कब्रमें जा सोई।

इसी तरीके को चालबाज़ दुलारी ने भी पूरे तौर से अख्तियार किया था, जिसका नतीजा उसके लिये वैसाही हुआ, जैसा कि मलिका नूरजहां के लिए हुआ था।

महीना पूसका है, जाड़ा खूब कड़ाकेका पड़रहा है, रात अंधेरीहै और लखनऊ के शाहीमहलसरा के अन्दर खूब ही सन्नाटा फैला हुआ है। ब सबब जाड़ेके सभी कोई अपने अपने कमरेमें रज़ाई में लपटे हुए पड़े सोरहे हैं और तातारी बांदियां नङ्गी तल्वारे बगलमें रक्खे दीवारसे सटकर ऊंघ रही हैं। रौशनी का भी कोई इन्तज़ाम नहीं है कि उजाला भरपूर रहे। पस,इस वक्त शाहीमहलसरा स्याही के दर्या में डूबा हुआ है और सोने वालों की जागती हुई नाक के अलावे और किसी किस्मकी आहट नहीं मालूम देती है।

ऐसे वक्तमें शाहज़ादा नसीरुद्दीन हैदर अपने ख़ास कमरे में, बगलमें हाथ दिएहुए चहल-कदमीकर रहाहै और कभी कभी किसी किस्मकी आहटको पा, चिहुंक कर खड़ा होजाता और दरवाज़े की तरफ़ तकने लगताहै। उसका बदन कांपरहा, चिहरा ज़र्द और उतरा हुआ,आंखे नम और सूजी हुईहैं और वह रह रह कर आहें सर्द खैंच रहाहै। वह घन्टों से इसी तरह चहलकदमी कर रहा है और उसके

और तरीके से ऐसा जान पड़ता है कि गोया वह किसीके आने की राह निहायत बेचैनी के साथ तक रहा हो!

योंही ढाई पहर रात गुज़र जाने पर एक स्याहपोश औरत उसके कमरे में आई, जिसके आतेही नसीरुद्दीन बाग़ बाग़ होकर यह कहता हुआ, उसकी तरफ़ बढ़ा कि,—"अल्हम्द लिल्लाह! ख़ुदा के फ़ज़ल से आज मेरे काशाने में भी चांद के टुकड़े ने क़दम किया!

उस औरत ने अपना स्याहपोश उतार डाला और हंसकर यह कहती हुई वह नसीरुद्दीन के आगे बढ़ी कि,—"हुज़ूर! यह कमतरीन लौंडी क़दमबोसी के लिये हाज़िर है।"

यों कह कर वह औरत, जो दरअसल ख़ूबसूरत दुलारीही थी शाहानः आदाब बजा लाने के लिये कमरे में दोज़ानू बैठ गई; लेकिन नसीरुद्दीन ने उसके बग़ल में हाथ देकर उसे चट उठा लिया और झट भरज़ोर उसे अपने सीने से लगा लिया। फिर तो अफ़ीन से लूट सी मच गई और दोनों आशिक़ वो माशूक़, मनमाने बोसे लूटने लगे। यह सिलसिला शायद ताक़यामत जारी रहता, अगर दुलारी नसीरुद्दीन के सीने से ख़ुद अलग न होती।

गरज़, दुलारी हटकर दस्तबस्तः अलग खड़ी होगई और उसके हाथ को अपने हाथ में लेकर नसीरुद्दीन ने कहा,—

"दिलरुबा, निहायत अफ़सोस का मुक़ाम है कि आज पूरे साल भर के बाद तुम मुझे तख़लिए में मिली!"

दुलारी ने मुस्कुराकर बड़ी आजिज़ी के साथ कहा,—"हुज़ूर मेरी ख़ता मुआफ़ करें, क्या करूं लाचारी से ख़िदमत में हाज़िर न हो सकी।"

नसीरुद्दीन,—"अफ़सोस, मुझसे मिलने के वास्ते लाचारी!"

दुलारी,—"हुज़ूर का फ़र्माना बजा है, लेकिन अगर मेरा हुज़ूर के पास तख़लिये में आना महल की औरतों को मालूम होजाय तो मैं सिर्फ़ बेआबरू हो कर महलसरा से निकली ही न जाऊं बल्कि

कुत्ते की मौत मारी जाऊं।"

नसीरुद्दीन,—"अजी,लाहौलपढ़ो! भला इतनी बड़ी किसकी मजाल है कि मेरी आशना को कोई उंगली भी दिखला सके।"

दुलारी,—"जी नहीं, हुज़ूर,! मैं इस क़िस्म की औरत नहीं हूं कि दो रोज़ के लिए हुज़ूर की आशना बनूं और अपनी लामिसाल पाक दामनी में धब्बा लगाऊं।"

यों कह कर उसने अपना हाथ छुड़ा लिया और ज़रा पीछे हट कर कहा, —"हुज़ूर मुझे मुआफ़ करें।"

नसीरुद्दीन ने कुछ झेंप कर कहा,—"नहीं, नहीं दिलरुबा, मेरे कहने की यह ग़रज़ नहीं हैं कि मैं सिर्फ़ दो ही रोज़ तुम्हें अपनी आशना बनाऊंगा। अजी, मैं तो यह चाहता हूं कि तुम तमाम उम्र मेरे गले का हार बनी रहो और कभी सीने से जुदा न होओ।"

दुलारी,—(तानेसे) "जी, सही है, जिस तौर से कि आपने अब तक हज़ारों नाज़नियों पर मिहरबानी की, और वे सभी अबतक बराबर हुज़ूर के सीने से लिपटी हुई हैं!!!"

नसीरुद्दीन,—(शर्मा कर) "आह, यह तो तुम मुझे ताना देती हो! वो, दुलारी! यह सही है कि अब तक मेरी ख़िदमत में हज़ारों ही औरतें आईं, और गईं लेकिन उन सभों से तुम्हारी क्या निस्बत है! भई, ख़ुदा जानता है कि जितना परेशान मुझे तुम्हारी ख़ूबसूरती व नज़ाकत ने किया है, इतना हैरान मैं आज तक कभी नहीं हुआ था।"

दुलारी,—"ख़ैर तो आप मुझे बड़े प्यार से अपनी रंडी बनाना चाहते हैं?"

नसीरुद्दीन,—(आगे बढ़ कर) "बेशक, मेरा इरादा ऐसा ही हैं और मैं तुम्हारे खाने पीने के लिये ऐसा पक्का बंदोबस्त कर दूंगा कि जिसमें तुम अमीराना ठाठ से अपनी औक़ात बसर कर सको।"

दुलारी,—(मुंह चिढ़ा कर) "ठीक है, हुज़ूर की फ़ैयाज़ी की सिफ़तें मैंने अकसर लोगों के मुंह से सुनी हैं।"

नसीरुद्दीन,-(उसके हाथमें झटका देकर) "तो मैं उम्मीद करता हूं कि अब तुम मुझपर रहम करोगी और ज़ियादह न सताओगी!"

दुलारी,—(उसका हाथ झटक और पीछे हट कर) "नहीं, मुझे यह हर्गिज़ मंजूर नहीं है कि अपनी आबरू में बट्टा लगाऊं! शाहज़ादे नसीरुद्दीनहैदर! आप इस जगह पर बहुत भूल रहेहैं, जो मुझे अपनी रंडी बनानेका इरादा आपने ज़ाहिर किया है! क्या आपने मुझे भी दीगर औरतोंकी तरह महज़ मामूली और बाज़ारू खानगी समझ लिया है?"

ये बातें जिस तेज़ीके साथ दुलारी ने कहीं कि जिन्हें शायद नसीरुद्दीनने अब तक किसी नाज़नी के मुंह से नहीं सुनी थीं और न उसे दुलारी के मुंहसे ही ऐसी बातें सुननेकी उम्मीद थी, लिहाज़ा वह थोड़ी देरके लिए सन्नाटेमें आगया और दुलारी तेज़ी के साथ अपना स्याह पोश उठाकर कमरेसे चलदी।

उसके चले जानेपर नसीरुद्दीन की पिनक टूटी और उसने चौंक कर आपही आप कहा—"अल्लाह, ज़ालिम! ऐसी खूबी की औरत तो मैंने आज तक नहीं देखीथी! आह, मुझसे मिलनेके वास्ते परियां तरसा करतीहैं और जिनपर मैं दिल चलाताहूं, वे अपने को निहायत किस्मतवर समझतीहैं, लेकिन दुलारी की तरह तो अब तक किसी नाज़नीने मुझे इस तरह फिटकार नहीं सुनाई! हज़ारों ही नाज़नियां इस कमरे में आईं और गईं, जिनमें सभी फ़िरके की और सभी क़ौमकी औरतें थीं, लेकिन इतनी तेज़ी तो किसी नाज़नी में मुझे नहीं दिखलाई दी, जैसा कि दुलारी ने दिखलाई! अफ़सोस, दुलारी जितनीही खूबसूरत है, उतनी ही ज़ालिम भी है और यह ग़ैर मुमकिन है कि वह आसानीसे मुझे दस्तयाब होगी! अब तक मैं यही समझे हुए था कि ज़र जो चाहे सो कर सकता है, लेकिन दुलारी ने मेरे इस खयाल को बिलकुल रद्द कर दिया। मैंने उसके पास हज़ारों ही के तुहफ़े, ज़र व जवाहिरात वगैरह भेजे, लेकिन उसने कुछ

वापस कर दिए, और वह किसी तरह मेरे कब्ज़ेमें न आई! आह, इधर उसकी जुदाईमें मेरी जान जाना चाहतीहै और उधरवह खमीरीआटे की तरह दिन ब दिन ऐंठी हो जाती है! इलाही, अब मैं क्या करूं और क्योंकर दुलारी को अपने ऊपर मिहरबान करूं! मैंने अक्सर क़िस्से कहानियोंमें सुनाहै और किसी शायर ने भी क्या खूब कहा है कि,—"तासीरे इश्क़ होती है, दोनों तरफ़ ज़रूर। मुमकिन नहीं कि दर्द इधर हो, उधर न हो!" लेकिन दुलारी को मेरी हालत पर ज़रा रहम नहीं आता और यह इश्क इकतरफ़ा नज़र आता है!!!"

यों ही शाहज़ादा नसीरुद्दीनहैदर देरतक आपही आप बकता, झकता, आहें सर्द खैंचता और गरम आंसू बहाता रहा, फिर उसने अपना दिल ज़रा ठिकाने किया और आवाज़ दी,—"आसमानी!!!"

"जी हुज़ूर, लौंडी हाज़िर है!" यों कहती हुई वही चुड़ैल आसमानी कमरे के अन्दर दाख़िल हुई, जिसको नाज़रीन कई मर्तबः देख चुकेहैं। गरज़, वह आकर दस्तबस्तः सामने खड़ी होगई और नसीरुद्दीनने, जो अबतक बराबर कमरे में टहल रहा था, मखमली आरामकुर्सी पर बैठकर कहा,—

"बी आसमानी! अफ़सोस! तुम एक महज़ मामूली औरत पर अपना कब्ज़ा न कर सकीं।"

आसमानी ने मुस्कुराकर कहा,—"बेशक, हुज़ूर का फ़र्माना बजा है; और वाक़ई यह एक महज़ नाचीज़ और अदनी औरत है, जिस पर मैं अपना अमल न चला सकी, लेकिन हुज़ूर ज़रा गौर तो फ़र्माएं कि इसमें लौंडी कहांतक ख़ताबार है? आज अर्सा एक सालका हुआकि हुज़ूरके हुक्मसे मैं उस नादान लड़कीको हर तरहसे समझा रहीहूं, लेकिन मेरी नसीहत उसपर ज़रा असर नहीं करती। हुज़ूरने कितनी मर्तबः कैसे २ बेशकीमत तुहफ़े उसके वास्ते भेजे, लेकिन उसने उन्हें फ़ौरन वापस करदिए। आज बादमुद्दतके वह सिर्फ़ इतनी बातकेलिए राज़ी हुईथी कि हुज़ूरसे तखलिए में मिलेगी, सोवह आई और उसके

साथ हुजूर को जो जो बातें हुई, उन्हें लौंडी ने बाहरसे सुना है। लिहाज़ा अब हुजूर ही इन्साफ़ करें कि इस बारेमें लौंडी कितनी सज़ावार या ख़तावार है!"

शायद, नाज़रीन यह समझ गए होंगे कि आसमानी एक महज़ मामूली औरत थी और इसका ख़ासकर यही काम था कि वह नसीरुद्दीन की ख़्वाहिशें पूरी किया करती थी! ख़ैर, अभी नाज़रीन इतना ही समझें; फिर आगे चलकर आसमानी की पूरी असलियत बयान की जायगी।

क़िस्सह कोताह, उसकी बातें नसीरुद्दीन ग़ौर से सुनता रहा और सब सुन लेनेपर उसने अख़ीर में कहा,—

"तो, वो आसमानी! तुम्हारे इस कहने का सिर्फ़ यही मतलबहै कि तुमने दुलारीसे हार मानी और मैं उसका ख़याल अपने दिलसे दूर करदूं!"

आसमानी,—"लेकिन हुजूर, दुनियामें लाखों दुलारी पड़ी हुई हैं, पस इस एक दुलारी की हकीकत ही क्या है?"

नसीरुद्दीन,—"नहीं, मैं सिर्फ़ इसी दुलारी को चाहता हूं, क्योंकि मैं इसपर मरता हूं।"

आसमानी,—"तो इस दुलारीको दस्तयाब करने की सिर्फ़ एक ही सूरत है।"

नसीरुद्दीनने यह सुनतेही आरामकुर्सीसे उठ और कुछ आगे बढ़कर जल्दीसे कहा,—"जल्द बताओ, वो आसमानी, कि दुलारी के दस्तयाब करनेकी अब कौनसी सूरत बाकी रहीहै?"

आसमानी,—"यही कि हुजूर उसे अपनी बेगम बनालें।"

"बेगम बनालें;" नसीरुद्दीन ने जल्दीसे कहा,—"बेगम बनालें! यह ग़ैर मुमकिन है, आसमानी! यह ग़ैर मुमकिन है!!!"

आसमानी,—"क्यों, हुजूर! यह ग़ैरमुमकिन क्योंहै?"

नसीरुद्दीन,—"इसलिये कि दुलारी एक महज़ मामूली औरतहै।"

आसमानी,-"तो इससे क्या! और जबकि वह आपकी बेगम होजायगी तो फिर वह मामूली औरत न रह जायगी।"

नसीरुद्दीन,-"लेकिन यह क्योंकर होसकता है कि मैं अवध का शाहज़ादा होकर एक मामूली औरतको अपनी बेगम बनाऊं!"

आसमानी,-"अगर ख़ता मुआफ़ हो तो मैं कुछ अर्ज़ करूं!"

नसीरुद्दीन,"आह,बी आसमानी! तुम्हारी और ख़ता! अजी तुम आज़ादी के साथ कहो! मैं तो तुमको अपना मददगार दोस्त समझता हूं!"

आसमानी,-"क्यों, हज़रत! क्या आप जहांगीर से भी बढ़कर हैं!"

नसीरुद्दीन,-(कुछ गुस्सेमें आकर) "कौन जहांगीर!

आसमानी,-"देहलीके बादशाह अकबर का पेयारा लड़का सलीम!"

नसीरुद्दीन,-(हाथसे हाथ रगड़ कर) "आह, तो तुम शायद मेहरुन्निसा का मुझे ध्यान दिलाया चाहती हो!!!"

आसमानी,-"जी हां, अब हुज़ूर ने मेरा अन्दरूनी मक़सद बख़ूबी समझ लिया।"

यह सुनकर नसीरुद्दीनहैदर अपनी उसी आरामकुर्सी पर फिर बैठ गया और आसमानी को भी अपने नज़दीक फ़र्श पर बैठने का इशारा करके कहने लगा,—

"लेकिन,बी,आसमानी! यह कब मुमकिनहै, कि मेरे वालिद बादशाह सलामत दुलारीके साथ मेरी शादी करदेना मंज़ूर करेंगे! देखो, अकबरने भी शाहज़ादे सलीमकी ख़ाहिश नहीं हो पूरी कीथी! अगर वह सलीमके साथ एक मामूली सरदारकी लड़की मेहरुन्निसा की शादी कर देता तो बेचारा, बेक़ुसूर अलीकुलीखां न मारा जाता; लेकिन आलीख़याल अकबर ऐसा कब कर सकता था!"

आसमानी शाहज़ादेके बहुत मुंह लगगई थी,सो वह उसकीकुर्सी

से कुछ दूर हट कर मख़मली फ़र्श पर बैठ गई और कहने लगी,—
"हुज़ूर, ख़ता मुआफ करें। सलीम से कुछ बन नहीं पड़ा, वर न अकबर झख मारता और मेहरुन्निसा के साथ उसकी शादी करही देता।"

नसीरुद्दीन,—(ताज्जुब से) "क्यों, सलीम से क्या नहीं बन पड़ा?"

आसमानी,—"यही कि अगर वह ख़ुदकुशी पर आमादः होजाता तो यह कब मुमकिन था कि अकबर अपने लड़के का मरना गवारा करताऔर उसकेसाथ मेहरुन्निसा कोशादीकरदेनेसे इनकार करता।"

यह सुनकर नसीरुद्दीन फड़क उठा और कहने लगा,—

"अल्लाह, अल्लाह क्या ख़ूब आसमानी! भई, वाह, तुमने खोज ढूंढ कर निहायत उमदः तरीका निकाला! बेशक सलीम यहाँ तक न कर सका होगा,! ख़ैर तो मैं बहुत कुछ कर गुज़रूंगा और इतने पर भी अगर वालिद साहब या वालिदःसाहबा न पिघलेंगी तो मैं ख़ूबसूरत दुलारी के इश्तियाक में अपनी जानहीं देडालूंगा।"

आसमानी,—"आप, यह क्या वाही बकने लगे। ख़ुदा हुज़ूर की उम्र दराज़ करें; मैं सदके, मैं क़ुर्बान।"

नसीरुद्दीन,—"सुनो आसमानी! असल बात यह है कि आज तक मैंने दिलसे किसी नाज़नी को प्यार नहीं किया था। मेरी सच्ची मुहब्बत दुलारी पर है, पस उसके दस्तयाब होने के वास्ते मैं कोई बात उठा न रक्खूंगा, यहाँ तक कि चाहे उसके फ़िराक में,आख़ीर में मुझे अपनी जानही की क़ुर्बानी क्यों न करनी पड़े।"

आसमानी,—"लेकिन हज़रत! आपका मक़सद आसानी से निकल आएगा। क्योंकि भला आप ख़याल तो करेंकि बादशाह और बेगम साहब आप पर कितनी मुहब्बत रखते हैं! ऐसी हालतमें यह कब मुमकिन है कि आपके दुश्मनों की तबीयत नासाज़ हो और उसका वाजिब इलाज न किया जाय!"

नसीरुद्दीन,—" तुम्हारा कहना, थी आसमानी ! बहुत सही है। मुझे अपने वालिद और वालिदः से ऐसी ही उम्मीद है। सुनो, मैं सिर्फ़ दुलारी के साथ पोशीदः तौर से इसीलिये दोस्ती किया चाहता था कि जिसमें वालिद के कानों तक यह ख़बर न जाय और बाद उनके इन्तक़ाल करनेके मैं लोगोंके ज़ाहिर में दुलारी को अपनी मलिका बनाऊं। कुछ यह मेरी नीयत न थी कि उसे मैं अपनी रंडी बनाऊं और चंद रोज़ के बाद निकाल बाहर करूं; लेकिन ख़ैर अब मैं तुम्हारी रायके मुताबिक कार्रवाई करूंगा आइन्दः जो कुछ शुदनी होगी, सो होगा।"

आसमानी,—" हुज़ूर, ख़ुदा ख़ैर ही करेगा, और दुलारी आप ही की होगी।"

" मैं अब भी आप ही की हूं और तामर्ग रहूंगी।" यों कहती हुई दुलारी कमरे के अन्दर घुस आई। उसे आती देखकर नसीरुद्दीन भी तेज़ी के साथ कुर्सी से उठ कर उसकी तरफ़ बढ़ा और दोनों एक दूसरे से लपट गए। फिर वही बोसबाज़ी का सिलसिला जारी हुआ और आसमानी कमरे से बाहर चली गई। देर तक यही आलम रहा, इसके बाद नसीरुद्दीन ने दुलारी को ले जाकर अपने बराबर मसनद पर बैठाया और उसके गले में बड़े प्यार से बाहें डाल कर कहा,—

" प्यारी, दिलरुबा ! ख़ुदा इस बातका गवाह रहेगा कि इस वक्त मैं अपने दिलो दीनो इमान से तुम्हें अपनी अव्वल बेगम बनाता हूं। और ' मलिका ज़मानी ' कहकर मुबारकबाद देता हूं।"

यों कहकर उसने अपनी अंगुली में से एक बेशक़ीमत अंगूठी उतार कर दुलारी की अंगुली में पहनादी। इसके बाद वह उठी और शाहज़ादे के सामने दोज़ानू बैठ और उसकी तरफ़ देखकर कहने लगी,—

" शाहज़ादे, ख़ुदा, जानता है कि इस वक्त मैं तहेदिलसे आपकी

मुहब्बत और दिलेरी का शुक्रिया अदा करती हूं। अलाहाज़ुल् कृयास अगर आपने अपना कौल पूरा किया तो लौंडी भी ताज़ीस्त आपकी खिदमत करती रहेगी और अपने ईमान में बट्टा न लगाएगी।"

नसीरुद्दीन ने यह सुनकर और उसे फिर अपने सीने से लगा कर कहा,—"तो, प्यारी! अब तुम मेरी हुई?"

दुलारी,—(प्यार से लपट कर) "मैं आपकी थी कब नहीं?"

नसीरुद्दीन,—"तो इतना सताती क्यों थीं?"

दुलारी,—"इसलिये कि जिस में मुझे दो रोज़ के वास्ते अपना ईमानखोकरआपकी रंडी न बननापड़े! प्यारेशाहज़ादे! आप इस बात को खूब सोच सकते हैं कि,क्याइश्क़ इकतरफ़ाकभीहुआ है? बक़ौल शख़्से कि,—'तासीरे इश्क़ होती है दोनों तरफ़ ज़ुरूर। मुमकिन नहीं कि दर्द यहां हो, वहां न हो॥"

नसीरुद्दीन,—"वल्लाह, यह तो तुमने ख़ूब कहा! अभी कुछ देर पहिले मैं भी इसी शेर पर ग़ोर करता था। लेकिन अब मैंने इसे बख़ूबी समझ लिया कि सच्चा इश्क़ इकतरफ़ा हर्गिज़ नहीं होता।"

दुलारी,—"यह हुज़ूरने बहुत ही सही कहा।"

नसीरुद्दीन,—"लेकिन, प्यारी, यह सुनकर मुझे निहायत खुशी हासिल हुई कि तुमभी मुझे दिल से चाहती हो!"

दुलारी,—"जी, इस पर मैं इससे ज़ियादह कुछ नहीं कह सकती कि हुज़ूर मेरे इश्क़ का अंदाज़ा अपने इश्क़ से कर लें, बक़ौल शख़्से कि दिल से दिल को राहत है।"

नसीरुद्दीन,—"प्यारी, तुम्हारा फ़ुर्माना बजा है।"

दुलारी,—ख़ैर हुज़ूर! निकाह होने के पेश्तर एक अर्ज़ मैं और कर देना मुनासिब समझती हूं।"

नसीरुद्दीन,—"वह क्या है? बयान करो; तुम्हारी अर्ज़ मैं बसरोचश्म मंज़ूर करूंगा।"

दुलारी,—"वह एक महज़ मामूली बात है, जो यह है कि

बेवा औरत हूं और मुझे एक लड़का और एक लड़की भी है।"

नाज़रीन, सुना आपने! दुलारी अपने को बेवा बतलाती है मगर ख़ैर, उसकी यह बात सुनकर उसके आशिक नसीरुद्दीन हैदर ने लापरवाई के साथ कहा,—"आह, तो इसमें हर्ज ही क्या है? नूरजहां भी तो दो लड़कियों के जनने के बाद सलीम की बीबी बनी थी।"

दुलारी,—"लेकिन हज़रत! अभी मेरी कुल बातें ख़तम ही नहीं हुई?"

नसीरुद्दीन,—"हां, हां, तुम शौक़ से कहो, मैं बग़ौर तुम्हारी बातें सुन रहा हूं।"

दुलारी बड़ी मुहब्बत के साथ उसके गले में अपनी नाज़ुक बाहें डाल और उस के गालों को चूम, मुस्कराहट के साथ कहने लगी,—

"तो हुज़ूर! मेरी यही दिली आर्ज़ू है कि ज्वानी होने पर मेरी लड़की किसी आली खान्दान अमीर के लड़के के साथ ब्याह दी जाय और मेरा लड़का, जो अब दरअसल आप ही का लड़का है बाद इन्तक़ाल करने आपके, तख़्त का वारिस हो!"

इतना सुनते ही नसीरुद्दीन हैदर ने बड़ी दिलेरी के साथ कहा,—"वल्लाह, यह कितनी बड़ी बात है? तुम्हारी लड़की नव्वाब घराने में ब्याही जायगी और तुम्हारे लड़के को मैं अपना वारिस बनाऊंगा। मैं गवर्नमेन्ट इंगलिशिया से कह दूंगा कि—हां, तुम्हारे लड़के का क्या नाम है?"

दुलारी,—"हुज़ूर के लड़के का नाम महम्मदअली है।"

नसीरुद्दीन,—"वल्लाह कैसा उमदः नाम है! ख़ैर तो मैं गवर्नमेन्ट आफ़ इंडिया से कह दूंगा कि महम्मदअली ख़ास मेरे नुतफ़े से पैदा हुआ है और इसके पैदा होने के बाद मुन्नाजान पैदा हुआ है।"

दुलारी,—(प्यार से लिपट कर) "हुज़ूर यह बात सही भी है, क्योंकि मुन्नाजान अभी साल भर का है और महम्मदअली तीन साल का।"

नसीरुद्दीन,—"ख़ैर यह सब मैं समझलूंगा। (हंसकर) लेकिन

थी दुलारी, मैं तो तुमको अब तक बिलकुल अछूती कुंवारी ही समझता था !"

दुलारी,—(नखरे के साथ मुंह फेर कर) " वाह, आइए,आप तो दिल्लगी करते हैं।"

नसीरुद्दीन,—(उसे लपटा कर) "अल्लाह आलम ! यह नाज़ गई, क़सम कुरान की, कि तुम मुझे अभी तक बिलकुल कुंवारी ही जँचती हो !"

दुलारी,—" आह, आप इस क़दर मुझे प्यार करते हैं ?"

नसीरुद्दीन—" क्या मेरे प्यार पर अभी तक तुमको पूरा पूरा एतक़ाद नहीं हुआ है!क्यामैं तुमकोअपना कलेजाचीरकरदिखलाऊं?"

दुलारी,—" नहीं, दोस्त ! मुझे आपकी मुहब्बत पर पूरा यक़ीन है और क्यों न होगा, जब कि मैं भी आपको वैसा ही चाहती हूं।"

नसीरुद्दीन,—" प्यारी ! तुम्हारी लामिसाल खूबसूरती ही ऐसी है, कि जिसने मुझे बेतरह मार डाला।"

दुलारी,-"और आपकी क्या कमहैकि जिनने मुझेज़खमीकिया।"

नसीरुद्दीन,-" लेकिन तुम तो सिर्फ़ ज़खमी ही हुई, मैं तो मरही गया।"

दुलारी,-" और हुज़ूर ! मेरा तो जनाज़ा भी निकल गया ! "

इस पर दोनों हंस पड़े और जब सुबह की सफ़ेदी आसमानपर फैलने लगी तो आसमानी के इशारा करने से दुलारी नसीरुद्दीन से रुख़सत हुई और उसके जाने के वक़्त लहज़ः बाद नसीरुद्दीन की बेगम और मुन्नाजान की मां हमीदा बेगम उसी कमरे में आई जिसकी सूरत देखतेही नसीरुद्दीन झल्ला गया और गुस्से से बोला,— " इस वक़् तुमको यहां किसने बुलाया ? "

हमीदा ने कहा,-" मैं ख़ुद आई ? "

नसीरुद्दीन,-" सबब ? "

हमीदा,—" कुछ कहना है।"

नसीरुद्दीन,—"ख़ैर, किसी दूसरे वक्त तुम्हारी वे सिर पैर की बातें सुनूंगा।"

हमीदा,—"लेकिन फ़ाहिशादुलारीको सिर पैरकी बातें हर वक्त सुनिएगा!"

यह एक ऐसी बातहमीदा ने कही कि जिससे सुनकर नसीरुद्दीन का चेहरा पहिले तो दहशत के मारे ज़र्द पड़ गया। लेकिन फिर मारे ग़ुस्से के लाल होगया और उसने कहा,—

"ख़बरदार ज़बान सम्हाल कर गुफ़्तगू करो।"

हमीदा,—"सुनिए, हज़रत! मैंने वे कुल बातें अपने कानों सुनी हैं, जो कि आज आसमानी और दुलारी के साथ आपकी हुई हैं। मैं इधर महीनों से आपके, आसमानी के और दुलारी के रंगढंग देखती आती हूं। और आज तो वे कुल बातें मैंने अपने कानोंसुनीहैं। ख़ैर तो अब आप यह बतलाएं कि, जबकि धायका लड़का, जोकि आपके नुतफ़े से भी नहीं है, तख़्तका वारिस होगा, तो ऐसी हालत में मैं अपने हक़ीक़ी लड़के मुआज़ान को लेकर कहां जाऊं?"

हमीदाकी बात सुनकर नसीरुद्दीन ने कहा,—"जहन्नुम में!!!"

यह सुन और सिर्फ़,—"बेहतर," कहकर हमीदा वहां से चली गई और उसने जाकर यह सारा हाल अपनी ख़ास बादशाह बेगमसे कह उसी वक्त दुलारी को महलसराके बाहर निकलवा दिया।
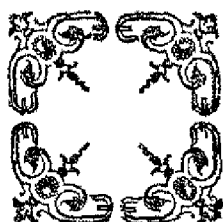
चौथा बयान !

यह मैं ऊपर लिख आया हूं कि हमीदा बेगम के चुगली खाने से बादशाह बेगमने दुलारीको फ़ौरन महलसरा से निकाल बाहर किया इसकी खबर नसीरुद्दीन के बाप बादशाह गाज़िउद्दीन हैदर ने सुनी तो वह बहुत ही खफा हुआ और नसीरुद्दीन के मुसाहबों को बुला कर उसने बहुत डांटा कहा कि,—" अगर वह अपना चाल चलन न सुधारेगा तो मैं उसे तख्त का वारिस हर्गिज़ न बनाऊंगा।"

लेकिन यह सब फ़ज़ूल हुआ और नसीरुद्दीन ने दुलारी की जुदाई में खाना पीना मुतलक छोड़ दिया और जान देने पर वह कूबो हुआ। यह हाल देखकर पहिले तो बादशाह और बादशाह बेगम को सिर्फ़ ताज्जुब हुआ, लेकिन जब उन दोनों ने यह देखा कि,—" यह लौंडा सचमुच ही अपनी जान देडालेगा;" तो उन दोनों ने पेश्तर तो उसे बहुत कुछ समझाया और जब सारी नसीहत बेकार हुई तो आखिर में दुलारी के साथ शादी कर देने की ज़बान दी।

इसके क़बल के एक रोज़ का हाल, जबकि दुलारी महलसरा से निकाली गई थी, मैं यहांपर लिखकर तब आगे बढूंगा।

जब कि उसके सुबह, जिस रात को कि नसीरुद्दीन से दुलारी मिली थी, उस (नसीरुद्दीन) नेयहसुना कि,—"मेरीजोरूहमीदा ने मेरी चुगली खाकर दुलारी को निकलवा दिया;"तोवह निहायत रंजीदह हुआ और हमीदाके महल में जाकर उसे यों घुड़कने लगा,—

हमीदा ! मैंने आज तुझे तलाक़ दिया। अब तू मेरी जोरू कहलाने क़ाबिल नरही और न तेरे पेट से जो बच्चा पैदा हुआ है, उसी को मैं अब अपना लड़का समझता हूं।"

हमीदा ने आजिज़ी से कहा;—"हज़रत यह तो आप कल फ़र्माही चुके थे, फिर दुबारह इसके कहने की क्या ज़रूरत थी ?"

यह सुनकर नसीरुद्दीन का चिहरा और भी तमतमा उठा और उसने झिड़क कर कहा,—" ज़रूरत यह थी आज से मैं तुझसे और

तेरे बच्चे से बिलकुल वास्ता तोड़ देता हूं।"

हमीदा,—"दबी (जुबान) "जहे किस्मत।"

नसीरुद्दीन,—"पस अब तेरा वो तेरे लड़के का दरजा महल में उतना ही समझा जायगा, जितना कि एक महज़ मामूली लौंडी वो गुलाम का समझा जाता है।"

हमीदा, "बेहतर, प्यारे शौहर! राज़ी हूं मैं उसीमें जिसमें तेरी रज़ा है!"

ठीक उसी वक्त बादशाह बेगम उस कमरे में पहुंच गई जिसे आते देख कर हमीदा तो शर्मा कर वहांसे चली गई और नसीरुद्दीन हैदर सिटपिटा गया।

बादशाह बेगम, कि, जिसका नाम 'मलका मेहरनिगार' था, निहायत गुस्सेमें भरी हुईथी। सो उसने बड़ी कड़ाईके साथ कहा,—

"नसीरुद्दीन! बड़े शर्मकी बात है कितूनेजिसऔरत को तलाक़ देदिया, उसके कमरे में तू दुबारः फिर आया और अभी तक यहां मौजूद है! मैं तुझे हुक्म देती हूं कि तू फ़ौरन यहां से चला जा और आइन्दः अपनेक़ौल के मुताबिकइस (हमीदा) से किसी किस्म का सरो कार न रखियो। और हमीदा वो मुन्नाजान के निस्बत तूने जो कुछ कहा, वह मेरे जीतेजी हर्गिज़ नहीं होने पाएगा। उन दोनों को मैं आजसे अपनी आंखों की पुतली के मुआफ़िक रक्खूंगी और तू दुलारी से पोशीदाः तौर पर भी किसी; किस्म का ताल्लुक न रखने पाएगा। सुन नसीरुद्दीन! अब तू निरा दूध पीता बच्चा नहीं है। क्या इस बात को तू ज़रा भी नहीं समझता कि तेरे ऐसे चाल चलन आइन्दः तेरे ही हक में ज़हर पहुंचाएंगे और तेरे एवज़में अपने अज़ीज मुन्नाजान को ही तख़्त का वारिस करूंगी। अफ़सोस, अफ़सोस नसीरुद्दीन! तू अपने को यहां तक भूल गया कि एक महज मामूली वो फ़ाहिशा औरत को अपनी बेगम और उसके उस लड़के को, जो तेरे नुतफ़े से पैदा नहीं है, तख़्त का वारिस बनाया

चाहता है और अपने हक़की लड़के को उसकी मां को, जो तेरी जोरू है, तलाक़ देता है! तौबः, तौबः! मेरी ज़िन्दगीमें ऐसा हर्गिज़ नहीं होने पायगा।"

नसीरुद्दीन सिर झुकाए हुए अपनी मांकी फिटकार सुनता रहा और बाद इसके वह चुपचाप वहांसे वापस आया।

इसके कुछ देरके बाद उसके खुशामदी मुसाहबान बादशाह का संदेसा उसके पास लेआए और उन लोगोंने भी वही बयान किया, जैसा कि ऊपर नसीरुद्दीनकी मां की नसीहत दर्ज की गई है।

उस वक्त नसीरुद्दीन निहायत गुस्से में था। इस लिये उसने अपने मुसाहबोंको सिर्फ़ इतनाही कहकर रुखसत कर दिया कि,—"सलीम निहायत बुज़दिल और कच्चा आशिक था कि वह अकबर की घुड़की से डरगया, लेकिन मैं वैसा बुज़दिल नहींहूं, जो बादशाह और बादशाह बेगमकी धमकीसे डरजाऊं। मैं सच्चा आशिक हूं, इस लिये मैं दुलारीको अपनी मलका बना छोड़ूंगा और उसके ही लड़के को अपना वारिस बनाऊंगा और अगर ऐसा मैं न कर सका तो फिर इस जीने और सल्तनत पर लानत भेजूंगा। जब कि एक न एक रोज़ मरना ज़रूरीहै तो फिर ऐसी बेकार ज़िन्दगीसे क्या हासिल!!!"

इसके बाद नसीरुद्दीन ने आसमानी कुटनीको तलब किया और उसे हुक्म दिया कि,—"जैसे हो, आज शबको, दुलारी को मेरे पास हाज़िर करे।"

यह सुन और आदाब बजा लाकर आसमानी चली गई।

बाद इसके नसीरुद्दीन दिन भर अकेला अपने कमरेमें टहला किया और उस दिन लोगोंके हज़ार समझाने पर भी उसने खाना न खाया।

तीन चार घड़ी रात बीतनेपर आसमानी वापस आई। उस वक्त कमरेमें विलायती लैम्प रोशन था और नसीरुद्दीनहैदर एक मख़मली आरामकुर्सी पर बाएं हाथकी हथेलीपर ठुड्डी रक्खे

हुए बैठा था। आसमानी देर तक चुपचाप खड़ी रही, लेकिन जब नसीरुद्दीन की पिनक न टूटी तो उसने ज़रासा खांस दिया; जिसे सुनकर नसीरुद्दीन हैदर चिहुंककर, कुर्सीसे उठ खड़ा हुआ और बोला,-"मेरी दिलरुबा आई ?"

आसमानीने खूब लंबा सलाम किया और दबीज़ुबान कहा,-

"जी, नहीं, हुज़ूर !"

"अफ़सोस, अफ़सोस! जब दिन निकम्मे आतेहैं तो कोई मुश्फ़िक़ नहीं नज़र आता !"

आसमानी,—"अय, वल्लाह; मैं सदके, मैं कुर्बान ! हुज़ूर मेरे रहते अपना दिल इतना छोटा न करें !"

नसीरुद्दीनने यह सुनकर रूमाल से अपनी नम आंखें पोछीं और आसमानी की तरफ़ नाउम्मीदी की निगाहसे देखकर कहा,-"मेरी दिलरुबा क्यों न आई, आसमानी !"

आसमानी,—"हुज़ूर! वो फ़रमातीहैं कि जब तक बाक़ायदे शादी न हो, मैं हर्गिज़ हुज़ूर के महलमें क़दम न रक्खूंगी।"

नसीरुद्दीन,-"लेकिन,यह तो चार रोज़ बाद ज़रूरही होगी; फिर सिर्फ़ ख़ाली मुलाक़ात करनेमें क्या हर्ज था ?"

आसमानी,-"हज़रत,मैंने उन्हें बहुत कुछ समझाया बुझाया, लेकिन वो बग़ैर निकाहके अब महलसराके अन्दर क़दम न रक्खेंगी। वो कहतीहैं कि जिस जगह से मैं इतनी बे आबरू होकर निकाली गई, अब मैं बगैर मलिका की हैसियत के हर्गिज़ न जाऊंगी।"

नसीरुद्दीन,—"आह, सितम! अय रूजल ! अब तू भी क्यों नाहक़ नाज़ो नख़रे दिखलाती है ?"

आसमानी,—"हुज़ूर, बी, दुलारी से मिलने की बिल्फ़ेल एक तरकीब मैंने निकाली है!"

यह सुनकर नसीरुद्दीन खड़ा होगया और दो चार क़दम आसमानी की तरफ़ बढ़ कर कहने लगा,—"आह, जल्द कहो;

थी आसमानी ! वर न मैं पागल होजाऊंगा ।"

आसमानी,-"अगर हुजूर किसी और ठिकानेपर बी जुहरा से मुलाकात करना चाहें तो वो मिल सकती है।"

नसीरुद्दीन,-(जल्दी से) "यह मुझे बसरोचश्म मंजूर है, लेकिन कहां और कब ?"

आसमानी,-"अगर हुजूरके दुश्मनों को किसी किस्म की तकलीफ़ न हो तो बस फ़ौरन चले चलिए।"

नसीरुद्दीन,-"वल्लाह, तकलीफ़ की तुमने ! बो, आसमानी ! एकही कही ! मगर खैर ! लेकिन यह तो तुमने मुझे बतलाया ही नहीं कि किस मुकाम पर !"

इसके बाद आसमानी उसी कबरिस्तानका पूरा पता बतला कर, जिसका हाल ऊपर लिखा जा चुकाहै, आप रुख़सत हुई और उसके जानेपर शाहज़ादा नसीरुद्दीन हैदर एक मामूली पोशाक पहन थो ऊपरसे स्याह लबादा ओढ़कर महलसराके पिछवाड़े वाली खिड़कीकी तरफ़ गया।वहां जाकरउसने बगैर बोलेही एकही किस्म की दो अंगूठियां, जिनपर उसका नाम खुदा हुआ था, पहरे वाले ख़ाजेसरा को दिखलाईं,जिनमेंसे एक ख़ाजेसराने अपने पास रखली और बगैर कुछ पूछे तांछे उसे महलसराके बाहर चले जाने दिया।

शाहज़ादा नसीरुद्दीन अक्सर चुपचाप महलसे बाहर चला जाया करता था, इसलिये उसने इसी इशारेको मुकर्रर कर लिया था कि एकही किस्मकी दो अंगूठियां, जिनपर उसका नाम खुदा रहता था, वह ख़्ाजेसराको दिखलाताथा,तो महल के बाहर चला जाता था; और लौटती बार अपनी अंगूठी वापस ले लिया करता था। इसी तरीकेसे वह आज भी महलसे बाहर हुआ और डेढ़ पहर रात ढलते ढलते वह ठीक उसी कबरिस्तानके टूटे फूटे फाटक पर पहुंचा, जिसका पता उसे आसमानी ने बतलाया था।

पांचवां बयान ।

कुछ देरतक तो उसने फाटकपर खड़े २ आसमानीकी राह देखी, लेकिन जब देरहोनेलगी और आसमानी नज़र न आई तो वह उकता कर और कड़ा दिलकर कबरिस्तान के अन्दर घुसा; क्योंकि अब तक उसे उस अनोखे कबरिस्तानका कुछभी पोशीदा हाल नहीं मालूमथा।

कबरिस्तानके अन्दर कदम रखते ही एक स्याह नकाबपोश की शक्ल उसकी तरफ़ बढ़ी, जिसे देखकर पहिले तो वह डरा और दो कदम पीछे हट गया, लेकिन फिर उसने अपने दिलको मज़बूत करके पूछा,-"तुम कौन हो?"

स्याह नकाबपोश ने उसके करीब पहुंच कर कहा,-"यही सवाल मैं भी तुमसे करती हूं!"

नसीरुद्दीन,—"मैं हूं, शाहज़ादा नसीरुद्दीनहैदर।"

इतना सुनतेही वह स्याह नकाबपोश, जो दरअसल औरत ही थी, नसीरुद्दीन के सीनेसे लपट गई और दो बोसे उसके गालों के लेकर बोली,-"प्यारे मैं हूं, तुम्हारी लौंडी दुलारी!"

"दिलरुबा, दुलारी।" यों कहकर नसीरुद्दीन ने उसे भरज़ोर अपने सीनेसे लटालिया और मनमाने बोसे लेकर कहा,-"दिलरुबा, दुलारी! तुम्हारी आवाज़ कुछ भर्राई हुई मालूम देती है!"

दुलारी,—"हां, दोस्त! तुम्हारी जुदाई से रोते रोते मेरी आखें सूज आई और गला बैठ गया है।"

नसीरुद्दीन,—"वाक़ई, प्यारी, दुलारी! तुम्हारी जुदाईमें मेरा भी यही हाल है।"

दुलारी,—"आज तो महलसराके अन्दर बड़ा बखेड़ा मचा हुआ था!"

नसीरुद्दीन,-"क्या तुमको वे कुल हालात मालूम हैं!"

दुलारी,-"हां, मैं आसमानी की ज़बानी मुफ़स्सिल अहवाल सुन चुकी हूं।"

नसीरुद्दीन,—"क्या कहूं, वालिदा बे मौके आगई, वर न मैं हमीदा को आज उसकी शरारत की सख्त सज़ा देता।"

दुलारी,—"लेकिन, खैर; जबकि तुम अब उसे, वो उसके नादान बच्चेको तलाक देही चुके तो फिर तुम्हें उसके पास जाने की अब क्या ज़रूरत है?"

नसीरुद्दीन,—"ठीकहै, कसम खुदाकी, अबमैं उस कंबख्तका कभी मुंह भी न देखूंगा, बोलना तो दूर किनार!"

दुलारी,—"ऐसाही चाहिए; लेकिन हां, तुम्हारी एक कार-वाई से मैं निहायत खुश हुई।"

नसीरुद्दीन,—(जल्दी से) "वह क्या?"

दुलारी,—"वह यह कि आज तुमने अपनी वालिदा से स-वाल जवाब न किया।"

नसीरुद्दीन,—"आखिर, वह अपनी मां हैं।"

दुलारी—"दुरुस्त है, ऐसाही चाहिए, इसके अलावे उनको नाराज़ करने से तुम्हारा सरासर नुकसान है। एक तो यही है कि जब तक वो खुश न होंगी, तुम मुझे नहीं दस्तयाब कर सकते। दूसरे यह कि तख्त भी तो उन्हींके कबज़े में है!"

नसीरुद्दीन,—"दुरुस्त है; लेकिन, दिलरुबा! यह क्यों कर मुमकिनहै कि वो मुझपर खुश होंगी और मेरे साथ तुम्हारा निकाह करा देंगी।"

दुलारी,—"अगर, सब्रको अख्तियार करोगे तो सब कुछहो जायगा। क्या, यह तुम नहीं जानते कि वह तुम्हारी मां हैं और तुम्हारे ऊपर निहायत मुहब्बत रखती हैं। सिवा तुम्हारे और उन को दूसरी औलाद भी तो नहींहै।"

नसीरुद्दीन,—"लेकिन वह तो आजकल चुड़ैल हमीदा पर मिहरबान हैं।"

दुलारी,—"आखिर, वह भी तो देहलीके एक नामी नब्वाबकी

लड़की है; पस, तुमने जिस तरह उसे तलाक देदिया, अगरवह भी उसे महल से निकाल दे तो आख़िर वह (हमीदा) क्या करेगी ! चुनांचे वह हमीदा की तरफ़दारी नहीं करतीं, बल्कि अपने नाम की इज्ज़त का पास करती हैं।"

नसीरुद्दीन,-[उसके गालों को चूमकर] "अल्लाह आलम ! तुम तो, प्यारी ! निहायत ज़हीन औरत हो। मैं उम्मीद करता हूं कि तुमसे बिहतर वज़ीर मुझे तमाम दुनियां में न मिलेगा"

दुलारी,-"ख़ुदा वह भी दिन जल्द दिखलाएगा, अगर तुम मुस्तैदी के साथ आबोदाने से किनाराकशी किए रहोगे।"

नसीरुद्दीन,-"आह, ऐसा तो आजसे शुरूही कर चुका हूं। आज मेरे मुंह में एक दाना या एक कतरा पानी भी नहीं गया है।"

दुलारी,—"लेकिन, प्यारे, यह तरीका ठीक नहीं।"

नसीरुद्दीन;-"आख़िर, इसके पेश्तर अभी तुमने क्या कहा ?"

दुलारी-"उसका मतलब तुम न समझे, यानी चुपचाप ख़ूब मज़े में भरपेट शराब वो कबाब उड़ाओ और ज़ाहिरा में फ़ाक़ेकशी दिखलाओ, और बादशाह वो बेगमको खुदकुशी करने की धमकी दो। फिर देखो तो यह ढंग कैसा रंग लाता है और तुम्हारा मक्सद क्योंकर बआसानी बर आता है !"

दुलारी की बात सुनकर नसीरुद्दीनहैदर हंस पड़ा और बोला,-"ख़ूब, तरीका तो तुमने बड़े मज़े का बतलाया ! वल्लाह, तुम तो बेनज़ीर औरत हो !"

दुलारी,-(हंसकर) "नहीं दोस्त ! बेनज़ीर मर्द तुम हो और मैं तुम्हारी लौंडी बदरंगुनार औरत हूं !"

नसीरुद्दीन,—"क्या ख़ूब ! मैं सच कहता हूं, दिलरुबा ! कि खुदा को मेरी ज़िन्दगी निहायत आराम के साथ काटनी मंज़ूर है, तब तो तुम ग़ैब से मुझे मिल गईं ? वाह ! तुम्हारी तबीयतदारी की तारीफ मैं नहीं कर सकता।"

दुलारी,—" खैर तो अपनी तारीफ़ मैं आप कर लूंगी, बिल्फ़ेल तुम कुछ मेवे खाकर थोड़ा सा पानी पीओ।"

यों कह कर उसने नसीरुद्दीन को एक कब्र पर बैठाया और मेवे का डब्बा और पानीकी सुराही उसके आगे रखदी। उसका यह रंग देखकर नसीरुद्दीन दंग होगया और कहने लगा,—

" वल्लाह, तुम मुझे इतना प्यार करती हो ? "

दुलारी,—(मुस्कुरा कर) " सिर्फ़ इतना ही नहीं, बल्कि इससे भी ज़ियादह ! "

नसीरुद्दीन,—" क्या खूब ! जैसी तुम खूबसूरत हो, वैसीही शऊरदार भी हो। वाकई, खुदा ने तुमको मेरेही वास्ते बनाया है; क्यों कि जैसी नाज़नी मैं चाहता था, वैसी ही मुझे उसने बख़्शा। "

दुलारी,—" लेकिन, थोड़ी देर के लिये तारीफ़के सिलसिले को छोड़ो और कुछ नाश्ता करो। आह ! आज तुम्हारे मुँहमें एक कतरा न गया, इसका जब मैं खयाल करती हूं, मेरा कलेजा मुँह को आने लगता है। "

नसीरुद्दीन,—(कब्र पर से उठकर) " आह, इस कब्रिस्तान में और मुर्दे की कब्र के ऊपर बैठ कर मैं नाश्ता करूं ? "

दुलारी,-(हंस कर) " तुम जानते हो कि ये किनकी कब्रें हैं?"

नसीरुद्दीन,-" नहीं, न मैं यही जानता हूं और न आजके पेश्तर मैं यहां पर कभी आया ही था। लेकिन आसमानोंने ऐसा सच्चा पता मुझे बतलाया कि जिससे मैं यहां ब आसानी पहुंच सका। "

दुलारी—" खैर तो यहां कब्र पर बैठ कर नाश्ता करने में कोई हर्ज नहीं है।"

नसीरुद्दीन,—" अय तौबः ! तुम मज़ाक करती हो ! "

दुलारी,—" मज़ाक की खूबही कही तुमने ! अजी, मियाँ बैठो और हम तुम दोनों मिल कर नाश्ता करें। यहां पर नाज़ों अदा के शहज़ादोंका मजारें हैं इस वास्ते यहां पर आशिक माशूकोंका माआदा

के साथ, जो दिल में आए, बिला तअम्मुल कर डालना चाहिए।"

यों कह कर उसने नसीरुद्दीनको एक क़ब्र पर बैठाया और दोनों ने मिल कर बड़े शौक के साथ मेवे, लज़ीज़ खाने, शराब और गज़कें उड़ाईं और अख़ीर में पानी भी पीया।

नसीरुद्दीन ने कहा,—"अगर सच पूछो तो, दिलरुबा! मैंने अपनी ज़िन्दगी का सच्चा मज़ा आजही पाया!"

दुलारी,—"बेशक, ऐसा ही मैं अपने लिए भी समझती हूं।"

इसके बाद वे दोनों आपस में प्यार वो मुहब्बतकी बातें करने लगे, जिनका अंदाज़ा नाज़रीन अपनी अपनी तबीयतके म्वाफ़िक खुद करलें, क्योंकि इससे ज़ियादह मैं कुछ भी बयान नहीं कर सकता।

हां, उस वक्त का हाल मैं ज़रूर कहूंगा जब नसीरुद्दीन के दिली अरमान निकलचुके थे और रात तीसरे पहर के लग भग पहुंच चुकी थी। उस वक्त दुलारी उठ खड़ी हुई और बोली,—

"देखना, प्यारे! मुझे भूल न जाना; क्योंकि इस वक्त तुमने मेरी पाकदामनी का तार तार कर दिया है। ऐसी हालत में अगर तुमने मुझे भुला दिया तो मैं कहीं की भी न रहूंगी।"

नसीरुद्दीन,—"दिलरुबा, कसम खुदा को; जीते जी, मैं तुम्हें हर्गिज़ नहीं भूल सकता; लेकिन यह तो बतलाओ कि अब कब मुलाकात होगी?"

यों कह कर उसने एक बेशकीमत याकूती अंगूठी अपनी अंगुली में से उतार कर उसकी अंगुली में पहना दी।

दुलारी,—(अंगूठी पहिन कर) "सुनो भई, तुम्हारे दिली अरमान तो पूरे हो ही चुके, पस, अब मुझसे तभी मुलाकात होगी, जब तुम मुझे अपना मलका बना लोगे।"

नसीरुद्दीन,—"ऐसा तो ज़रूर ही होगा।"

दुलारी,—"बस, तभी मैं भी मिलूंगी।"

नसीरुद्दीन, "आह, तुम बड़ी ज़ालिम हो"

दुलारी,—"सही है, काम निकल जाने पर लोग ऐसाही इलज़ाम लगाया करते हैं! अफ़सोस, दुनियाँ में कैसे कैसे खुदग़र्ज़ इन्सान मौजूद हैं!!!"

नसीरुद्दीन,—"लेकिन, प्यारी, तानेज़नी रहने दो! मैं सच कहता हूं कि अगर तुम कभी कभी मुझसे तखलियेमें न मिला करोगी तो मेरी जान न बचेगी।"

दुलारी,—"ख़ैर, तो जब तुम आसमानी से कहला दोगे, मैं चली आऊंगी।"

नसीरुद्दीन,—"मेरे कमरे में आओगी?"

दुलारी,—"हर्गिज़ नहीं, जब तक कि शादी न होगी।"

नसीरुद्दीन—"फिर क्या इसी मुकाम पर मुलाक़ात होगी?"

दुलारी,—"यह मैं कह नहीं सकती, क्यों कि मुमकिन है कि इस मर्तबः कहीं और ही ठिकाने मिलने का मौका हाथ लगे!"

ग़रज़, फिर तो नसीरुद्दीन दुलारी को सीने से लगा कर उससे रुखसत हुआ और जाते जाते कहने लगा,—"बड़ा भारी अफ़सोस तो यह है, कि बवजह अंधेरी रात के तुम्हारा चांदसा मुखड़ा आज मैं न देख सका।"

दुलारी,—"तो हर्ज ही क्या है! वह आपके दिल के अन्दर तो नक़्श हई है!"

नसीरुद्दीन,—"बेशक, यह बहुत सही है,। जाते जाते लौट कर लेकिन आसमानी कहां है?"

दुलारी,—"वह इस वक्त चाहे कहीं हो, लेकिन ठीक वक्त पर आपसे इनाम लेने पहुंच जायगी।"

नसीरुद्दीन,—"आखिर, मैं तुमको अकेली क्यों कर छोड़ जाऊं!"

दुलारी,—"तुमने अपने आने के पेश्तर मुझे यहां किसके सुपुर्द किया था!"

नसीरुद्दीन, "आह, मज़ाक रहने दो।"

दुलारी,—"दरअसल मैं इस वक्त मज़ाक नहीं कर रही हूं! बस, तुम जाओ, मैं भी अपने मकान जाती हूं।"

गरज़, यह कि फिर तो नसीरुद्दीन उसे गले लगा, बोसेले और "खुदा हाफ़िज़" कहकर वहांसे चला गया और महलसरा के पिछवाड़े वाले दरवाज़ेसे, जिधरसे कि वह आया था, महल के अन्दर दाखिल हुआ। उस वक्त उसने ख़ाजेसरासे अपनी अंगूठी लेली थी।

उस वक्त महलके अन्दर गहरा सन्नाटा फैला हुआथा; सो वह बे रोकटोक अपने कमरे में घुस गया और पलंग पर पांव फैलाकर आराम से सोरहा।

इधर जब उस कबरिस्तानसे नसीरुद्दीन चला आया तो एक और स्याह नकाबपोश शकल एक कब्र की आड़ में से निकल आई और दुलारीके करीब आकर कहने लगी,—"ख़ैर तो अब क्या इरादा है?"

दुलारी,—"अब चल, महलसरा के अन्दर चलें"

दूसरी शकल,—"वल्लाह, उस वक्त खूब ही मज़ा होगा, जब कैद से छूटकर दुलारी बेचारी अपने घर जाएगी और आसमानी शाहज़ादे के पास जाकर आठ आठ आंसू रोएगी।"

नाज़रीन, चिहुकेंगे कि यह क्या माजरा है! बेशक चिहुंकने की बात ही है! क्योंकि जिसे अब तक हमने वो आपने वो नसीरुद्दीनने दुलारी समझा था, वह कोई और ही औरत था। ख़ैर उसने दूसरी शकलकी बात सुनकर कहा,—"अब तू बेहोश दुलारी वो आसमानी की गठरी सुरङ्ग के बाहर लाकर यहीं रखदे, बाद इसके हम लोग यहांसे चल देंगी।"

यह सुन और "बहुत खूब;" कहकर वह दूसरी शकल उसी हिकमतसे कब्र का दरवाज़ा खोलकर, जिसका बयान मैं ऊपर कर आया हूं, सुरङ्गके अन्दर घुसगई और थोड़ी ही देर में एक एक करके वह दोनों गठरियां अन्दर से निकाल लाई। इसके बाद उस नकली दुलारीने, जिसे कि अब तक हम लोग असली समझे हुए थे,

दोनों गठरियां खोलीं और उनमें से बेहोश दुलारी और आसमानी को निकाल और एक एक कब्र पर दोनों को लिटा कर उसने अपनी साथिन दूसरी शकल से कहा,—

"बस, अब यहां ठहरने की कोई ज़रूरत नहीं है। पस, गठरी बांधने का बेठन उठा और यहां से चलदे।"

यह सुनकर उस दूसरी शकल ने दोनों बेठन उठा लिए और बाद इसके दुलारी वो आसमानी को होश में आनेकी दवा सुंघाकर झट पट वे दोनों उसी सुरंग के अन्दर उतर गईं और कब्र का तख़्ता बराबर हो गया।

नाज़रीन, यहजानना चाहतेहोंगे कि ये दोनों कौनथींऔर ख़ास कर इन दोनों में वह मक्कारा नकली दुलारी कौन थी, जो इस तरह नसीरुद्दीन को छका उसके हाथ की बेशक़ीमत अंगूठी तक उड़ा ले गई! लेकिन नाज़रीन मुझे मुआफ़ करें, क्योंकि अभी इस राज़ को मैं नहीं खोल सकता।

लेकिन हां एक बात मैं ज़रूर यहां पर कहूंगा। शायद नाज़रीन यह भूले न होंगे कि जब नसीरुद्दीन के कमरे में उससे दुलारी मिली थी और उन दोनों में जोकुछ बातें हुई थीं, उन्हें हमीदा बेगम ने छिप कर सुनली थीं; लेकिन यह मेरे समझ में न आया कि हमीदा ने अपनी सासरो सिर्फ़ दुलारी ही की चुगली क्यों खाई और आसमानी को बेदाग़ क्यों छोड़दिया!

बेशक, यह बात बड़े ताज्जुब की है लेकिन जब तक इसका पूरा पता न लगे, मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता।
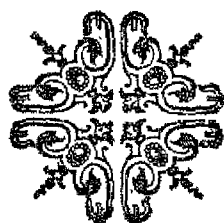
छठवां बयान ।

सुबह की सफ़ेदी आस्मान पर फैल रही थी, चिड़ियाओं ने चहचहे मचाने शुरू कर दिए थे, बादेसबा ने आशिक माशूकों के चुटीले दिल में गुदगुदाना शुरू कर दिया था और सितारों ने एक एक करके आस्मानी महफ़िल को ख़ाली करना शुरू कर दिया था, जब उस मनहूस कबरिस्तान में दुलारी की बेहोशी दूर हुई थी !

बेहोशी दूर होते ही उसने अपनी आंखें मल और ज़रा उठकर चारों तरफ़ देखा, फिर उसी कब्र पर वह लेट गई और दिल ही दिल में यों कहने लगी,—

" अल्लाह, मैं कहां हूं ! आह ! यह तो वही मनहूस कबरिस्तान है, जहां पर आसमानी मुझे एक पहर रात गुज़रने पर ले आई थी ! लेकिन अब तो सवेरा हुआ चाहता है याख़ुदा, मेरी जांघ में इस शिद्दत से दर्द क्यों हो रहा है ? आह ! मारे जलन के दम निकला जाता है और दिल बेचैनी से तड़प रहा है ! ! ! आसमानी कंबख़्त किस चूल्हे में चली गई ! "

ठीक उसी वक्त आसमानी भी होश में आई थी और अपनी डरावनी आंखें मल मल कर इधर उधर तक रही थी, इतने ही में दुलारी ने आवाज़ दी ।—" आसमानी ! ! ! "

आवाज़ सुन और दो एक अंगड़ाई लेकर आसमानी अपनी कब्र पर से उठी और धीरे धीरे कदम उठाती हुई, उस जगह पर पहुंची, जहांपर दुलारी किसी तकलीफ़ से पड़ीपड़ी कराह रही थी ।

उसके नज़दीक पहुंच कर आसमानी ने कहा,—" आह ग़ज़ब ! आप यहां इस हालत में पड़ी हुई हैं ! ! !

दुलारी,—[गुस्से से] " कंबख़्त ! तूने यह मेरे साथ क्या दग़ा की ! ख़ैर तू जाती कहां है, ज़रा नसीरुद्दीन के रूबरू मैं चलूं, तब मैं तेरी सारी शरारतों का भरपूर इनाम दूंगी । "

दुलारी की बातें सुनकर आसमानी ज़रा न डरी और झुंझला

कर बोली,—" दुरुस्त है ! बी, दुलारी सही है ! नेकी का एवज़, यानी इनाम तो ज़रूर ही मिलना चाहिए ! "

दुलारी,—" आखिर, तू मुझे शाहज़ादे से मिलाने का चकमा देकर कहां लेआई ! "

आसमानी,—" एक सुनसान जगह में लेआई, जब कि आप शाहज़ादे के महल में चलनेसे इनकार करती थीं । "

दुलारी,—" सही है, सही है, हरामज़ादी, कुटनी ! तू ठीक कह रही है ! अगर मैं ऐसा जानती होती कि तू मेरे दुश्मनों से भीतरही भीतर मिली हुई है और मेरे साथ ऐसा सलूक किया चाहती है, तो मैं हर्गिज़ तेरे चकमे में न आतीऔरशाहज़ादे से मुझेमिलनाही होता तो उसके महल में चली चलती, लेकिन कंबख़्त ! तूने मुझे निहायत ज़लील वो रुसवा किया और मुझे कहीं की न रक्खा । "

आसमानीदुलारी कीगालियोंसेआगहोगई, लेकिन उसने बेमौका समझ कर अपने गुस्से की आग को अपने दिल के अंदर दबा रक्खा और कहा,—" ख़ैर गालियां देने के लिये फिर भी मौका मिलेगा, लेकिन फ़िलहाल यह तो बयान कीजिए कि यह बात क्या है जो आप नाहक मुझपर इतनी ख़फ़ा होरही हैं ? "

दुलारी,—" चल, दूर हो सामने से ! मुझे ज़ियादह न जला ! "

आसमानी,—" मालूम होता है कि शाहज़ादे से आपकी कुछ खटपट होगई है, तभी तो यह यार की झुंझल भतार पर निकल रही है ! ! ! "

यह सुनकर दुलारी और भी भभक उठी और उसने चाहा कि उठकर आसमानीको दोचार धौललगावे, लेकिन वह दर्द के मारे उठ न सकी और पड़े पड़ेही बोली,—" बस, चुप रह, हरामज़ादी, पाजी, छिनाल ! मैं तेरा मुंह नहीं देखना चाहती ! "

यह सुन कर आसमानी ने अपनेदांतों पर दांतमसमसा कर कहा,— " बल्लाह, मामला कोईपेचीदा नज़र आताहै ! लेकिन सिवा गालियों

देने के जब आप कुछ बयान ही नहीं करतीं तो फिर मैं क्या कर सकती हूं।"

दुलारी,—"मैं अपना सिर बयान करूं, या तेरा!"

आसमानी,—"मेरा सर तो आपके सामनेही है,इसका जो चाहे सो कीजिये, लेकिन ज़रा कुछ बयान तो कीजिये कि यह बात क्या है, जो आप नाहक मुझपर इतनी ख़फ़ा हो रही हैं!!!"

दुलारी,—"बात क्या तुझसे छिपी हुई है?"

आसमानी,—"क़सम ख़ुदा की, मैं आपकी ख़फ़गी का कोई भी सबब नहीं जानती!"

दुलारी, —"झूठी, दगाबाज़, बेहया!!!"

आसमानी,—"ख़ैर तो जब आप कोई बात सुनतीही नहीं, तो अब मैं कुछ न कहूंगी!"

दुलारी,—"क्या अभी तुझे कुछ और भी कहना है?"

आसमानी,—"जी नहीं, मैं सब कुछ कह चुकी!"

दुलारी,—"तो फिर, अब यहांसे काला मुंह कर!"

आसमानी,—"और शाहज़ादे से जाकर क्या अर्ज़ करूं?"

दुलारी,—"कह दे कि आसमानी मर गई!"

आसमानी,—"समझ लीजिए कि ऐसा मैं कह चुकी; या थोड़ी देर के लिए सचमुच मैं मरही गई, लेकिन इससे क्या! मेरे मरने से शाहज़ादे का क्या नुक़्सान होगा?"

दुलारी,—"आह, मैं मरी, यह तकलीफ़ मुझे खा जायगी।"

आसमानी,—"आपको कहीं कुछ चोट चपेट लगी है, क्या जो इस क़दर आप तड़प रही हैं?"

दुलारी,—"आसमानी, बहुत हुआ, अब चुप रह और यहांसे चली जा, वरना मैं मारे जूतियों के तेरा मुंह लाल कर दूंगी।"

आसमानी,—"ख़ैर अब मैं जाती हूं, लेकिन बी दुलारी! इतना मैं आपसे कहती जाती हूं कि आपने जो बिला वजह इतनी गालियां

मुझे दीं और दुरदुराया, इसके लिये एक वक्त ऐसा आएगा कि आप मेरे लिए निहायत अफ़सोस करेंगी! मैं नहीं समझती कि आप इस कदर मुझसे क्यों ख़फ़ा हुईं, क्यों आपने इतनी गालियां मुझे सुनाईं और क्यों आप इस तरह कराह रही हैं! मगर ख़ैर, वह वक्त बहुत करीब है कि आप मुझे अपना मददगार दोस्त समझेंगी और अपनी गलती पर खुद ब खुद शर्मिन्दः होंगी।"

इतना कह कर आसमानी वहांसे जब चलने लगी तो दुलारी ने उसकी बातों पर कुछ ग़ौर करके उसे रोका और कहा,—"अच्छा, आसमानी! तू ज़रा ठहर जा और मेरी बातों का जवाब दे!"

यह सुनकर आसमानी ठहर गई और बोली,—"पूछिए, जो कुछ मैं जानती होऊंगी, सही सही जवाब दूंगी।"

दुलारी,—"चिराग़ रौशन होने के बाद जब कुछ अंधेरा हुआ था, तब तू मुझे शाहज़ादे से मिलाने के वास्ते यहां ले आने के लिए मेरे पास गई थी! क्यों यह बात तुझे याद है?"

आसमानी,—"हां, यह तो बहुत ताज़ी बात है!"

दुलारी,—"इसके बाद जब तेरे साथ मैं यहां पहुंची थी और इस मनहूस कबरिस्तान में टहल रही थी तो दो कुमकुमे किसी जानिब से आकर एकही साथ मेरी और तेरी नाक पर लगे थे।"

आसमानी,—"हां, बेशक लगे थे जिनके लगते ही मैंने आपसे कहा था कि होशियार होजाइए, दुश्मन आपहुंचे, जिन्हों ने ये बेहोशी के कुमकुमे चलाए हैं।"

दुलारी,—"बेशक, तूने यही कलमा कहा था, लेकिन इसके बाद मुझे कुछ भी ख़बर न रही कि क्या हुआ।"

आसमानी,—"यही हाल तो मेरा भी हुआ। फिर मुझे भी कुछ ख़बर न रही कि क्या हुआ! अभी अभी, अलस्सुबह, जब मैं होशमें आकर आंखें मल कर इधर उधर नज़र दौड़ा रही थी कि मेरे कानोंमें आपकी आवाज़ पहुंची, जिसे सुनकर मैं आपके पास आई और इसके

बाद जिस कदर गालियां आपने मुझे सुनाई, वो तो अभी तक आप को यादही होगीं ! ! ! "

दुलारी,-" तो मैं तुझसे यही पूछती हूं कि वे दुश्मन कौन थे, जिन्होंने कुमकुमें चलाकर मुझे और शायद तुझे भी, बेहोश किया था, जैसा कि कुमकुमों के चलने पर तैने कहा भी था कि होशियार होजाइए, दुश्मन आपहुंचे ।"

आसमानी,—" बेशक, मैंने ऐसाही कहा था, और वे बेहोशी के कुमकुमें ज़रूरही किसी दुश्मन के चलाए हुए रहे होंगे; लेकिन वे दुश्मन कौन थे, यह मैं नहीं जानती, क्योंकि मैं उसी वक्त बेहोश हो गई थी, उसके बाद अभी होश में आई हूं । "

दुलारी,—" बस, यहीं पर मुझे तुझ पर शक होता है कि यह सारी शरारत तेरीही रही होगी, कि तू शाहज़ादे से मिलाने का चकमा देकर मुझे यहां लेआई और मुझे यहां लाकर तूने मेरे साथ ऐसा सलूक किया कि मुझे किसी काम ही का न रक्खा । "

आसमानी,—" अय, तोबः तोबः, आपको मुझपर इसी वास्ते शक हुआ है ? लाहौलवलाकूवत ! अजी; बी, कसम कुरान की, मुझे इन बातों की कुछ भी ख़बर नहीं है ! "

दुलारी,—"इस बातका मुझे क्योंकर यकीन हो !"

आसमानी,—" इसका यकीन आपको शाहज़ादे से मिल कर ही सकता है !"

दुलारी,-" क्यों कर ? "

आसमानी,—" यों कि उनसे आप यह पूछें कि आसमानी आप को भी इसी जगह पर आने के लिये कह आई थी कि नहीं ? "

दुलारी.—" हां तेरी सफ़ाई के लिये शायद इतना काफ़ी हो, लेकिन शाहज़ादे से अगर तू यहां आने के वास्ते कह आई होती तो वे ज़रूर आते और मुझे यहां पर इस हालतमें पड़ी देख करबगैर मेरा कुछ इलाज किए, वे हर्गिज़ वापस न जाते ।"

यह सुन कर आसमानी कुछ देर तक चुप रही, फिर कहने लगी,—"हां, यह बात तो आप ठीक कहती हैं; लेकिन बी दुलारी! शाहज़ादे से मिलने ही पर अब सब बातें खुल सकती हैं!"

दुलारी,-"क्या ?"

आसमानी,—"पेश्तर तो यही कि मैंने उनसे यहां आने के वास्ते कहा था, या नहीं!"

दुलारी,-"इसके बाद ?"

आसमानी,-"दूसरे यह कि वे यहां आए या नहीं!"

दुलारी,-"यह कब मुमकिन है कि वे मुझसे मिलने की ख़बर सुनकर एक लहज़ः भी रुक सके हों!"

आसमानी,-"मैं भी ऐसाही समझती हूं, लेकिन अब बग़ैर उनसे मिले, यह बात क्योंकर मालूम हो सकती है ?"

दुलारी,-"तू फ़र्ज़ कर कि वे तेरे मुंहसे यहां पर मेरे आने की ख़बर सुनकर ज़रूर आए।"

आसमानी,-"बस, यही सवाल आपका ज़रा पेंचीदा है, कि जिसका जवाब मुझे नहीं सूझता ?"

दुलारी,-"बल्कि तू यों कह कि अब इसके आगे तेरी मक्कारी का पर्दा खुला चाहता है!"

आसमानी,-(कड़ी आवाज़ से) "हर्गिज़ नहीं! यह आपका सरासर ग़लत ख़याल है कि आप मुझे अपना दुश्मन समझ कर नाहक परीशान हो रही हैं!"

दुलारी,-"तो क्या तू यह समझती है कि मुझसे मेरे मिलनेकी ख़बर पाकर शाहज़ादे यहां न आए ?"

आसमानी,-"नहीं मैं ऐसा नहीं समझती।"

दुलारी,-"तो तू क्या समझती है!"

आसमानी,-"मैं यह समझ रही हूं कि या तो उनकोभी दुश्मनों के हाथ से उसी तरह परीशान होना पड़ा होगा, जैसा कि आपको

और मुझको रोना पड़ा !"

दुलारी,—"या ?"

आसमानी,"या वे यहां ज़रूर आए और आपको या मुझको यहां पर न पाकर वापस चले गए।"

दुलारी,—(चिढ़कर) "तू इन्सान है या हैवान ?"

आसमानी,—"जैसा आप समझें !"

दुलारी,—"होश में आकर बातें कर !"

आसमानी,—"मैं ख़ूब होश में हूं, लेकिन आप शायद अभी तक होश में नहीं आईं, !!!"

दुलारी,—"चुप रह शैतान की ख़ाला। मैं ज़रा शाहज़ादे से मिलने पाऊं, तो फिर तुझसे समझ लूंगी।"

आसमानी,—"बग़ैर नमक मिर्च लगाए, कच्चा ही खा जाना और क्या ! दुलारी ! अब तुम ज़रा खुद होश में आओ और इन्सानियत के साथ गुफ़्तगू करो। ख़बरदार, जो अब बदज़ुबानी की है तो इधर से भी वैसाही जवाब पाओगी। बेखुश, इतनी गालियांतो कभी शाहज़ादे या खुद बादशाह बेगम ने भी मुझे न दी होंगी, जितना तुम देगईं ! आख़िर, तुम हई हो कौन, जो मुझे गालियां दोगी ! अल्ला, साईसकी जोरू और लुहार के फ़ीलवान की आशना का यह दिमाग़ !"

नाज़रीन ! आपने सुना कि कल्लेदराज आसमानी ने दुलारी को क्या कहा। लेकिन ख़ैर जो कुछ उसने कहा, उसका इतना असर दुलारीपर हुआ कि उसके चेहरेपर मुर्दनी छागई और हवाइयां उड़ने लगीं। उसने अपने दर्दकी तकलीफ़ भूलकर आसमानी का हाथ पकड़ लिया और निहायत आजिज़ी के साथ कहा,—"आह आसमानी ! खुदाके वास्ते मेरी ख़ताओंको मुआफ़ करो !"

आसमानी,—"ख़ैर मैं इस वक्त तो तुमको मुआफ़ करती हूं, लेकिन आइन्दः मुझसे ऐसे कलमे हर्गिज़ न कहना, वरना तुम्हारी ख़ैर नहीं ! तुम इस घमंडमें कभी न भूलना कि शाहज़ादा मेरा ग़ुलाम

होरहा है !!! बस,अब अगर तुम दुबारः मुझसे अँटकोगी तो मैं तुम्हारी सारी करतूत उधेड़कर रखदूंगी और तब शाहज़ादा नसीरुद्दीन शायद तुम्हारी ख़बर कुत्ते वो गोधोंसे ले, क्योंकि मुझसे तुम्हारा कोई भी राज़ छिपा नहीं है; अगर कहो तो कुछ बयान करूं ? क्या हस्तम—"

यह सुनकर दुलारीने आसमानी का पैर पकड़ लिया और गिड़गिड़ा कर कहा,—"बस करो, बी आसमानी ! खुदा के वास्ते अब बस करो। आह,मैं ताउम्र तुम्हारी लौंडी होकर रहूंगी,लेकिन मेरी आबरू और जानको बर्बाद न करो !"

आसमानी ने कहा,—"ख़ैर तो अगर तुम मुझसे न अँटकोगी तो मैं भी तुमसे छेड़छाड़ न करूंगी। तुम शौक से शाहज़ादे की बेगम बनो, लेकिन आसमानीसे हमेशः दबी रहना और इसे हमेशः ज़र व जवाहिर से खुश किया करना।"

दुलारी,—"ऐसा ही होगा, बी आसमानी ! ऐसा ही होगा ! मैं तुम्हारी इज़्ज़त अपनी मांसे भी बढ़कर करूंगी और इतनी दौलत तुम्हें दूंगी कि तुम मालामाल होजाओगी, लेकिन अभी तो मैं खुद मुहताज हूं।"

आसमानी,—"अभी मैं कुछ चाहती भी तो नहीं ! मैं ऐसा कहती भी नहीं,लेकिन जब तुम नाहक मुझे गालियां देने लगीं तो मुझे भी गुस्सा आगया और इतना मैंने इसी लिए कह दिया कि जिसमें तुम मुझे बखूबी पहचानलो और आइन्दः हमारे तुम्हारे बीच में कभी खटपट न हो।"

दुलारी,—"आह, बी आसमानी ! यह तुमने बहुत अच्छा किया ! सचमुच मैं अपनी हर्कतों पर निहायत शर्मिन्दः हूं और तुम बार बार माफ़ी चाहती हूं।"

आसमानी,—"ख़ैर,जो हुआ सो हुआ,अब तुम कुछ अन्देशा न करो।"

दुलारी,—"मेरी आबरू अब तुम्हारे हाथ है।"

आसमानी,—"बेशकहै, और ताज़ीस्त रहेगी, लेकिन जबतक तुम मुझसे शरारत न करो, तब तक तुम बेफ़िक्र रहो। मैं खुद ब खुद तुम्हारी बुराई हर्गिज़ न करूंगी,लेकिन जब तुम मुझे छेड़ोगी तो फिर मैं बाज़भी न आऊंगी।"

दुलारी,—"नहीं, मैं तामर्ग तुम्हारी लौंडी बनी रहूंगी, लेकिन मेरा राज़ शाहज़ादे पर ज़ाहिर न होने पाए।"

आसमानी,—"इससे तुम बे फ़िक्र रहो। मैं शाहज़ादे के आगे तुम्हारी उतनी ही इज़्ज़त करूंगी,जितनी कि लौंडियां बेगमों की करती हैं।"

दुलारी,—(उसका पैर थाम कर) "वल्लाह, तब तो तुम गोया मुझे अपनी ज़रख़रीद लौंडी बना लोगी!"

आसमानी,—"उसमें अब कसर ही क्या है? लेकिन ख़ैर, यह कहो कि अब तुम्हारा इरादा क्या है?"

दुलारी,—"मैं निहायत तकलीफ़ में हूं। जान पड़ता है कि दुश्मनों ने मुझे बेहोश करके मेरी बाईं जांघ को जला दिया है, जिसके दर्द से मेरा बुरा हाल है।"

आसमानी,—"ऐसी बात है? ख़ैर मैं ज़रा देखूं तो!"

यों कहकर उसने दुलारी की बाईं जांघ को देखा, जिसके देखते ही उसके मुंह से एक हलकी चीख़ निकल गई और उसने धीरे से कहा,—"बी दुलारी! यह तो बड़ा गज़ब हुआ, तुम्हारी सारी उम्मीदों पर दुश्मनों ने ख़ाक डालदी!"

दुलारी,—(घबराकर) "क्या हुआ?"

आसमानी,—"बहुत ही बुरा हुआ! तुम्हारी जांघ सिर्फ़ जलाई ही नहीं गई है, बल्कि इस पर किसी दुश्मन ने एक मुहर छाप दी है!!!"

दुलारी,—[घबराकर] "मुहर छाप दी है!!!"

आसमानी,—"हां, मुहर!!!"

दुलारी,—"उसमें क्या लिखा है ?"

आसमानीने यह सुनकर वह मुहर पढ़कर सुनाई, जिसे सुनकर दुलारी कलेजा तोड़कर रोउठी, लेकिन उसके मुंहपर कपड़ा रख कर आसमानीने उसे बहुत समझाया और दिलासा देकर कहा,—

"चुपचाप रहो, यहां शोर गुल मचानेसे लोग जमा हो जायंगे, और तुम्हारा सारा राज़ हर खासोआम पर ज़ाहिर हो जायगा। जो होना था, सो तो होही गया, लेकिन अब फ़िलहाल सब्र करो, इसका इलाज मैं करूंगी और उम्मीद है कि मैं इस मुहरके दाग को बिलकुल मिटा दूंगी।"

दुलारी,—(जल्दी से) "तुम मिटादोगी, बी आसमानी ! मिहरबानी करके तुम इस दाग को बिलकुल रफ़ाकर दोगी ?"

आसमानी,—"हां, खुदाने चाहा तो ऐसा ही होगा, लेकिन फ़िलहाल तुम सब्र करो। मैं जाती हूं और डोली लाकर तुमको घर ले चलतीहूं। इसके बाद जो कुछ करना होगा, वहमैंकरूंगी।"

इतना कहकर आसमानी चलीगई और दुलारी जिस कब्र पर पड़ीथी, उसीपर पड़ी पड़ी अपनी किस्मत को रोया की। क्यों कि आसमानी के जानेपर उसने भी अपनी जांघकी मुहर देखली थी, जिससे उसका कलेजा टूक टूक हुआ जाता था। लेकिन उस बेचारी को रोने के वास्ते भी फ़ुर्सत न मिली, क्योंकि आसमानी के जाने के थोड़ीही देर बाद एक सिपाही, जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी, उस कबरिस्तान के अन्दर आया और तेज़ी के साथ दुलारीकी तरफ़ बढ़ा और उसके सीनेपर एक बन्द लिफ़ाफ़ारखकर फ़ौरन वहांसे लौट गया। इस कारवाईके करनेमें उसने इतनी फुर्ती की कि दुलारी को उससे एक सवाल करने को भी फ़ुर्सत न मिला।

आख़िर, उसके चले जानेपर दुलारीने उस लिफ़ाफ़े को फाड़कर उसके अन्दरसे एक ख़त निकाला और उसे पढ़ना शुरूकिया। अगर ` भी उस ख़त को देखना चाहें तो देखलें, मैं उसकी नकल

नीचे लिख देता हूं।-

" कम्बख़्त दुलारी !

"तेरे हौसले आज कल सातवें आस्मान तक बढ़े हुए हैं, और तू अब अपने तईं शाहज़ादे नसीरुद्दीन की ' मलिका ज़मानी ' समझने लगी है, लेकिन नहीं, ऐसा न समझ और अपनी औकात के बाहर क़दम न बढ़ा। एक फ़ाहिशा औरत, कि जिसके लड़केके बापही का पता नहीं है, कि वह किससे पैदा हुआ है.-साईस से, फीलवान से या लुहार से,-वह (औरत) अवध के शाहज़ादे की बेगम बनने का हौसला करे, यह एक महज़ हिमाकत है। इसी वास्ते दुलारी, शरीर दुलारी! तेरी जांघ पर यह मुहर दाग दी गई है कि तू अब ज़ियादह उभड़ने का हौसला न करे और अपनी हैसियत के आगे क़दम न बढ़ाए। आसमानी ने, बदकार कुटनी आसमानी ने, तुझे दिलासा दे रक्खा है कि वह इस मुहर को जड़से खोद बहाएगी, लेकिन नहीं, ऐसा हर्गिज़ नहीं हो सकता। क्यों कि अगर आसमानी नश्तर से इस मुहरको दूर करनेकी कोशिश करेगी तो फ़ौरन तेरी दूसरी जांघ पर यही मुहर दुबारः छापदी जायगी और जब तक उसके दूर करने का बंदोबस्त किया जायगा, यही मुहर तेरे किसी और जिस्म पर छाप दी जायगी और बराबर यही सिलसिला जारी रहेगा कि तेरे जिस्म पर एक के बाद दूसरी मुहर बराबर छपतीही रहेगी! लिहाज़ा-तू अपनी इस मुहरके मिटाने की कोशिश न कर और अपनी बदचलनी के इनाम का ज़ेवर हमेशः पहने रह। फ़क़त।

हाकिम।"

दुलारी ने इस ख़त को कई मर्तबः पढ़ा और उसे पढ़कर वह निहायत ग़मगीन हुई। उसने इन सारे फ़सादों की जड़ बुनियाद आसमानीहीको समझा, लेकिन बेमौक़ा समझकर वह चुपहोगई और दिलही दिल में उसने ठान लिया कि जब मौक़ा आएगा, आसमानी को इसका मज़ा दूंगी। इतनेही में आसमानी भी आगई और आकर

उसने कहा,—

"यहांसे थोड़ीही दूर पर डोली और कहार मौजूद हैं, इस वास्ते अगर थोड़ी दूर तक पैदल चल सको तो बिहतर होगा, क्यों कि इस मुकाम पर कहारों को बुलाना और यहां पर तुम्हारा डोली पर सवार होकर अपने मकान जाना मस्लहत के बईद है।"

दुलारी ने रोकर कहा,—"खैर मैं किसी किसी तरह वहां तक पैदल चली चलूंगी, जहां पर डोली मौजूद है। आह, तुम्हारे जाने के थोड़ी ही देर बाद यहां पर एक नकाबपोश सिपाही आया और यह खत मेरे सीने पर रखकर वह फ़ौरन वापस चला गया। ज़रा, इस खत को एक मर्तबः तुम भी तो देखो!"

यों कह कर दुलारी ने आसमानी के हाथ में वह खत देदिया जिसे उसने भी बगौर पढ़ा और दो तीन मर्तबः उस खत के पढ़ लेने के बाद उसने खत लौटाकर कहा,—

"मालूम होता है कि तुम्हारा कुल पोशीदः हाल तुम्हारे दुश्मनों पर ज़ाहिर होगया है। अफ़सोस तुम्हारे साथ बड़ी भारी दुश्मनी की गई, मगर खैर जो होगा, देखा जायगा। अब यहांसे झटपट चली चलो, क्योंकि दिन एक पहर से ज़ियादह चढ़ आया है।"

गरज़ दुलारी किसी किसी तरह उठी और उस खत और उसके लिफ़ाफ़े कोअपनी अंगिया में खोंस और अपने चेहरे पर बुरका डाल लंग ड़ाती हुई, आसमानी के साथ उस कबरिस्तान से बाहर हुई। वहां से थोड़ीही दूर पर एक सुनसान जगह पर डोली कहार मौजूद थे सो वह वहां तक आकर डोली पर सवार हुई और आसमानी उसे उसके घर तक पहुंचा कर और बहुत कुछ दिलासा देकर उससे रुखसत हुई।

सातवां बयान

नाज़रीन यह जानते हैं कि नसीरुद्दीनहैदर जबसे दुलारी से मिल कर आया है, निहायत खुश वो खुर्रम है।

यह बात मैं लिख आया हूं कि दुलारी से मिलने बाद वह महल में आकर सो रहा था, सो कुछ जियादह देरकरके वह उठा और मामूली कामों से छुटकारा पा, वो गुसल करके उसने निहायत लज़ीज़ खाना खाया और अपने दोस्तों के साथ बैठ कर गंजीफा खेलने लगा। यकबयक उसकी हालत में तबदीली देखकर उसके दोस्तों को निहायत ताज्जुब हुआ लेकिन उनलोगों को इतनी हिम्मत न पड़ी कि वे उससे इस हालत तबदीली का कोई सबब पूछते।

गरज़ यह कि वह दिन उसने निहायत खुशी के साथ बिता दिया और शाम को आठ बाद मुद्दत के वह हवाखोरी के लिये महल से निकला; उस वक्त उसकेदो तीन मुसाहब, जिनमेंमिष्टर बारबर भीथा उसके साथ थे। एक पहर रात ढलने के बाद वह महल में वापस आया और दोस्तों कोरुखसत करके आसमानी इन्तजार करने लगा, क्योंकि काबिरस्तान से वापस आने पर अब तक आसमानी से उसकी मुलाकात नहीं हुई थी। लेकिन जब धीरे धीरे रात ढलने लगी और आसमानी न आई तो उसने अपने खोजे गुलाम क़ादिर को पुकारा और पूछा,—

"क्या, मेरी गैरमौजूदगी में आसमानी आई थी?"

क़ादिर,—(शाहाना आदाब बजा लाकर) "जी, नहीं गरीब परवर!"

नसीरुद्दीन,—"खैर, तो तू कमरे के बाहर पहरे पर मुस्तैद रह और आसमानी आए तो उसे मेरे पास फ़ौरन भेज।"

"जो इर्शाद; कह और सलाम करके क़ादिर चला गया और नसीरुद्दीन एक निहायत नफ़ीस सितार उठा कर उसे बजाने और एक गजल गाने लगा,

"निकलती किस तरह है जाने मुज़तर देखते जाओ।
हमारे पास से जाओ तो फिर कर देखते जाओ॥
जिधर जाते हो हर घर से यही आवाज़ आती है।
मसीहा हो तो बीमारों को दमभर देखते जाओ॥
कदम अंदाज़ से बाहर हुए जाते हैं साहब के।
सितम रफ्तार में करते हो, ठोकर देखते जाओ॥
रविश मस्ताना चलते हो, कदम मस्ताना पड़ते हैं।
खुदा के वास्ते बहरे पयम्बर देखते जाओ॥
कोई उनसे कहे, मुंह फेर कर जो कत्ल करते हो।
तड़पता है तुम्हारा कुश्तः क्यों कर, देखते जाओ॥
नसीमे नौबहारी की तरह आये हो गुलशन में।
तमाशाए गुलो सरवो सनोबर देखते जाओ॥
न फेरो उससे मुंह आतिश जो कुछ दरपेश आजाये।
दिखाता है जो आंखों को मुकद्दर देखते जाओ॥

इतने ही में स्याह बोरके से तमाम तनोबदन को छिपाए एक औरत उस कमरे में आई और उसी सुर में अपना सुर मिला कर यों गा उठी,—

"सितारी दूर फेंको, औ गले से यार लग जाओ।
मुझे अपनी दिखा सूरत, मेरी तुम देखते जाओ॥"

नसीरुद्दीन यह आवाज सुनते ही चौंक उठा और झट सितार एक तरफ लुढ़काकर उठ खड़ा हुआ और आगे बढ़ कर बोला,—"तुम कौन हो?"

नकाबपोश औरत,—"वही आपकी प्यारी दुलारी!"

"दिलरुबा, दुलारी!" यों कहकर नसीरुद्दीन उसकी तरफ तेज़ी से बढ़ा, लेकिन वह जरा पीछे हट गई और कहने लगी-"जरा, ठहरो, दोस्त! रोशनी बिल्कुल कम कर दो, क्योंकि मेरी आंखें आज सुबह से खराब हो गई हैं और दुखती है।"

"आह, यह इश्क़ में रोने का सबब है;" यों कहकर नसीरुद्दीन लैम्प बुझाकर एक मोमी शमादान जला दिया और उस पर सब्ज़ रंग की मिरदंगी रख कर कहा,—"अब तो शायद तुम्हारी आंखों को ज़ियादह तकलीफ़ न होगी ?"

दुलारी,—"नहीं; अब तो निहायत हलकी रौशनी होगई है, यहां तक कि इसे एक तौर पर अंधेरा भी कहा जा सकता है।"

यों कहकर दुलारी अपना स्याह बोरका उतार कर पलंग पर आ बैठी और नसीरुद्दीन भी उसकी बगल में जा डटा।

दुलारी ने कहा,—"पेश्तर इसके कि किसी बात का सिलसिला शुरू किया जाय, तुम कमरे का दरवाज़ा भीतर से बंद कर दो और ऐसा इन्तिज़ाम करदो कि जिसमें इस वक्त यहां पर आसमानी न आने पाए।"

नसीरुद्दीन,—"क्यों, इसमें कोई सबब है ?"

दुलारी,—"हां, कुछ है, जिसे पीछे कहूंगी।"

इस पर सिर्फ़ "बिहतर;" कह कर नसीरुद्दीन चला गया और क़ादिर को इस बात की ताकीद कर के कि, इस वक्त अगर आसमानी आए तो मुझसे बग़ैर इत्तला किए ही वापस कर दी जाय" वह कमरे में लौट आया और भीतर से दरवाज़ा लगा कर दुलारी के बगल में आकर बैठ गया।

दुलारी ने उसके गले में बाहें डालकर बड़े नाज़ोनख़रे के साथ कहा—"प्यारे, दोस्त! गो, मैंने इस बात का अहद किया था कि बग़ैर शादी हुए, तुम्हारे कमरे में न आसकूंगी, लेकिन कल तुमने मेरे दिल पर ऐसा बुरा जादू कर दिया कि वह कंबख़्त किसी तरह तुम्हारी जुदाई गवारा न कर सका और मुझे मजबूर होकर आख़िर आना ही पड़ा।"

यह सुनकर नसीरुद्दीन ने उसे प्यार से लपटा कर उसके गालों को चूम लिया और कहा, "वल्लाह, यह तुमने ख़ूब किया, मैं भी

बगैर तुम्हारे, मिसाल मछली के तड़प रहाथा। मैंने हरचन्द चाहा कि आसमानी आए तो उसे तुम्हारे पास भेजूं,लेकिन वह कंबख़्त आज आई ही नहीं।"

दुलारी,—"वह शायद किसी ज़रूरी काममें फंस गई होगी,इसी वजह से न आई होगी। बस, इसी लिये मैं आजका आना उस पर ज़ाहिर नहीं किया चाहती कि वह यह जान लेगी कि मैं अब आपही आप आने लगी; तो शायद दिलमें कुछ दूसरा ख़याल करे।"

नसीरुद्दीन,–"बेहतर, मैं आज तुम्हारे आनेका हाल उस पर ज़ाहिरनकरूंगा;लेकिन तुम अकेली महलकेअन्दर क्योंकर आसकी?"

दुलारी,–(अपनी अंगुली में पड़ी हुई एक अंगूठी दिखला कर) "देखो, जबमैं मुन्नाजान को दूध पिलाने के लिए मुकर्रर की गई थी, तब बादशाह बेगमने यह अंगूठी मुझे दी थी। इसी को दिखलाने पर मैं ब आसानी यहांतक आसकी और किसी ने मुझे न रोका।"

नसीरुद्दीन,–(अंगूठी देख कर)"वाह, यह तो बादशाही हुक्मनामा है और ऐसी अंगूठियां जिनके पास हैं,वे बिला रोक टोक महलमें आसकती हैं। शायद तुम्हें महलसे रुख़सत करने के वक्त अम्माजान इस अंगूठी को तुमसे लेना भूल गई!"

दुलारी,—"शायद ऐसा ही होगा!"

नसीरुद्दीन,—"चलो,अच्छाही हुआ,वरन मुझे तुम्हारे लिये ऐसी दूसरी अंगूठी की फ़िक्र करनी पड़ती।"

दुलारी,–"क्या,तुम्हारे पास इस किस्मकी कोई अंगूठीहै?"

नसीरुद्दीन,–"नहीं, है तो नहीं, लेकिन ज़रूरत पड़ती तो अम्माजान से लेलेता।"

दुलारी,—"अगर वो न देतीं?"

नसीरुद्दीन,—"तो किसी ढब से चुरा लाता।"

दुलारी,–"खूब! ज़रूरत पड़नेपर और कियाही क्या जाता!"

नसीरुद्दीन,–"ख़ैर, यह तो बतलाओ कि मेरे वापस आनेके

कितनी देर बाद आसमानी वहां पहुंची ?"

दुलारी,—"कहां ।"

नसीरुद्दीन,—"वल्लाह, क्या भोली हो ! अजी, उसी कब्रिस्तान में ?"

दुलारी,—(हंस कर)"वह गई कहां थी ! वहीं पर एक कबरके बगल में पड़ी सोरहीथी। मैंने जब खूब जगाया तो जागी फिर मैं अंधेरे ही अंधेरे अपने घर पहुंच गई ।"

नसीरुद्दीन,—"हां, मुझे तुम्हारा बड़ा अंदेशा था ।"

दुलारी,—(प्यारसे लपटकर)"तुम्हारे गलेमें यह मोती का हार तो निहायत उम्दः है !"

नसीरुद्दीन—"हां,यह एक नायाब चीज़ है ।"

दुलारी,—"ऐसा ! तो क्या वह मशहूर नौलखा हार यहीहै ?"

नसीरुद्दीन,—"हां यही है ।"

दुलारी,—"इसे मैं लूंगी ।"

नसीरुद्दीन,—"ज़हे किस्मत, कि भला, तुमने आज मुझसे कुछ चाहा तो सही ।"

यों कह कर उसने फ़ौरन उस नौलखे हारको अपने गले में से उतार कर दुलारी को पहना दिया और उसके गालों का भरपेट बोसा लेकर कहा,———

"दिलरुबा, तुम पर मैं खुद सदके हूं, इस नाचीज़ हार की हक़ीक़त क्या है ?"

दुलारी,—"अजी, दोस्त ! मैंने तो सिर्फ़ तुम्हारा दिल टटोलनेके वास्ते एक महज़ दिल्लगी की थी, आख़िर मेरे पास रहेगा, तब भी तो यह तुम्हाराही है !"

नसीरुद्दीन,—"ख़ैर तो इसके रखने का एक बकस भी है, जो बिलकुल सोनेका बना हुआ है और उस पर निहायत उम्दः मीनां किया हुआ है; उसे भी लेलो ।"

दुलारी,-(हार उतारती हुई) "नहीं, मैं तो सिर्फ़ दिल्लगी करती थी, इसे तुम्हीं पहनो।"

नसीरुद्दीन,-"वल्लाह, अब इसे तुम्हीं को पहनना पड़ेगा।"

दुलारी,-"और अगर मुझसे यह खोगया, तो!"

नसीरुद्दीन,-"तो क्या होगा?"

दुलारी,-"ख़ैर, तो इसका बक्स भी देदेना।"

यह सुनकर नसीरुद्दीन हारके रखनेका सोने वाला बक्स उठालाया, जिसमें दुलारीने उस मोतीके हारको रखकर कहा,—

"प्यारे, तुम मुझे खूब प्यार करते हो!"

नसीरुद्दीन,-(उसे लपटा कर) "और तुम?"

बस, इसके आगे नाज़रीन! अबमैं क्या लिखूं!!! अगर खुदा ने आपको तबीयतदारी बख़्शी हो तो आप खुद इन दोनों आशिक़-माशूक़ों के चोचले के समझने की कोशिश कीजिए और साथही इस बातका भी अंदाजा कर लीजिए कि उन दोनों खिलाड़ियोंने अपने २ दिली अरमान क्यों कर निकाले और किस खूबी के साथ रात काट दी!!!

हां, उस वक्तका हाल मैं जरूर लिखूंगा; जब रात एक घंटे से ज़ियादह बाकी न थी और दुलारी उस मोतीके हारवाले बक्स को अपने बगलमें दबा और अपने तईं स्याह बोरके में छिपा कर शाहजादे से रुख़सत होरही थी।

शाहज़ादे नसीरुद्दीनने उससे बड़ी बड़ी कसमें खिला और दूसरी शबको फिर मिलनेका वादा कराकर तब उसे जाने दिया। और वह भी मुश्किलसे शाहज़ादेसे रुख़सतहो उस कमरेसे बाहर हुई। उस वक्त क़ादिर कमरे के दरवाज़े पर बेख़बर सोरहा था और महलसरा के अन्दर सन्नाटा फैला हुआ था।

आठवां बयान ।

दुलारी की हालत बहुत ख़राब है। उसने अपनी आंख में उस जगह पर नश्तर दिलवाया है, जहां पर कि उसके किसी पोशीदः दुश्मनने कोई वाहियात मुहर लाल करके छापदी थी। इसी वजहसे वह इन दिनों बहुत अबतर हालतमें है और उसके घरवाले जीजानसे उसकी ख़िदमत कर रहे हैं। क्योंकि नसीरुद्दीन जो दुलारी के साथ शादी करके उसे अपनी बेगम बनाया चाहता है, यह लखनऊ के हर खासोआम को मालूम हो गया है। पस,यह कब मुमकिन है,कि इस ख़बर से दुलारी की मां पियारी ख़ुश न हुई हो! इस ख़बर को सुन कर ख़ुश तो वह (पियारी) यहां तक हुई थी कि अकसर पीरों की दरगाहों में मुराद हासिल होने के लिये शीरनी चढ़ाती फिरती थी। इमामबांदी भी दुलारी की इस ख़ुशकिस्मती का हाल सुनकर निहायत ख़ुश थी और दुलारी की दिलोजान से ख़िदमतें करने लग गई थी। इस गरज़ से कि अगर दुलारी मुझ पर ख़ुश रहेगी तो मेरे बेटे और दामाद को बेगम होने पर शाहीदरबार में कोई उमदः ओहदा दिलवा देगी!

इस ख़बर को रुस्तम वो उसकी मां ने भी सुना, जिसे सुनकर उन दोनों के दिल पर क्या गुज़री होगी, इसका अन्दाज़ा या तो नाज़रीन ख़ुद करलें, या एक रोज़ रुस्तम दुलारी के पास रात को चुपके से पहुंच गया था, सो उन दोनोंकी जो कुछ बातें हुई थीं, उनसे समझने की कोशिश करें।

रात आधी से ऊपर पहुंच चुकी थी,इमामबांदी के घरमें सन्नाटा फैल रहा था, क्योंकि आज रात को वह घर में मौजूद न थी; जिस नव्वाब के यहां वह पढ़ाती थी,वहीं थी। घरमें सिर्फ़ पियारी थी, जो दूसरी कोठरी में बेख़बर सोई हुईथी। और दुलारी अपनी कोठरीमें पलंग पर पड़ी पड़ी 'चहारदरवेश' के किस्से को पढ़ रही थी;क्योंकि अभी उसका ज़ख़्म अच्छा नहीं हुआ था, इस वजहसे दर्द के सबब

उसे नींद नहीं आती थी।

ऐसेही वक्त में उसकी कोठरीका किवाड़ धीरेसे खुला और रुस्तम उसके पलंग के पास आखड़ा हुआ। उसे देखतेही दुलारी ज़ोर से चीख़ मार उठी और बोली,—" तू कौन है ? "

रुस्तम,—" अफ़सोस, अब मुझे तू पहचानती भी नहीं ? अल्लाह तूने मुझे ऐसी बदकिस्मती अता की ! ! ! "

दुलारी ने सचमुच यकबयक अपनी कोठरी में घुस आनेके सबब उसे पहले नहीं पहचाना था, लेकिन फिर उसकी आवाज़ और सूरत से पहचान कर वह ज़रा दिल ही दिल में शर्मिन्दा हुई और बोली,—

" रुस्तम ! तुम इस आधी रात के वक्त किधरसे आपहुंचे ! "

रुस्तम,—(खड़ेही खड़े)" आखिर क्या करता ! मेरे और मेरी मां के आने की तो तुमने सख्त मुमानियत करदी है, फिर मैं क्या करता ! "

दुलारी,—" आख़िर, तुम आए क्योंकर ? "

रुस्तम,—" कमन्द लगाकर। "

दुलारी,—" हूं ! लेकिन इतनीतकलीफ़ उठाने की इसवक्त तुमको क्या ज़रूरत थी ?"

रुस्तम,—" ज़रूरत तो कुछ भी न थी, लेकिन तुम्हारी बीमारी का हाल सुन कर दिल न माना और तुम्हेंएक नजर देखने की नीयत से ऐसा करना पड़ा ! "

दुलारी,—" रुस्तम ! तुम मेरी बात शायद बिलकुल भूल गए, जो कि तुम्हारे साथ मेरी हुई थी!"

रुस्तम, " नहीं, मैं उन्हें भूला नहीं हूं;वो बातें ताक़यामत मेरे दिल पर नक़्श रहेंगी। "

दुलारी,—" नहीं, तुम उन बातों को ज़रूर भूल गए वरन मुझसे मिलने का हौसला अब तुम न करते। "

रुस्तम,—" दुलारी बेवफा दुलारी ! तू इतनी बे मुरौवत है ! "

दुलारी,—" रुस्तम ! होश में आ और यहां से फ़ौरन चला जा ! तेरी दुलारी मर गई, या यों समझ कि दुलारी का ख़ाविन्द मर गया और अब यह (दुलारी) बेवा है तुझे मैं तलाक दे चुकी हूं, पस, अब तेरा मेरे साथ किसी किस्म का ताल्लुक बाक़ी नहीं रहा । यही बात मैं तुझे समझा चुकी हूं , लेकिन तू उन्हें बिलकुल भूल गया और नाहक मुझे चिढ़ाने की नीयत से मेरे पास आया है ! "

रुस्तम,—" या रब, तू कहां है ? "

दुलारी,—" रुस्तम ! ये चोचले अब बेफायदः हैं ! "

रुस्तम,—" आख़िर, मेरा कसूर ही क्या है , जो तू मुझे नाहक छेड़ती है ? "

दुलारी,—" तेरा बड़ा भारी क़ुसूर यही है कि तू किसी मुल्क का बादशाह या शाहज़ादा नहीं हुआ, वरन दुलारी तुझे हर्गिज़ न छोड़ती ! पस, तेरे वास्ते मैं अवध के शाहज़ादे की बेगम न बनूं, यह गैर मुमकिन है ! "

रुस्तम,—" सुन, दुलारी ! तू शौक़ से बेगम बन, इससे मुझे कोई गरज़ नहीं, लेकिन मुझ बदनसीब पर भी चुपके चुपके मिहरबानी किया कर; भला, इसमें तेरा क्या नुक़सान है ! आख़िर मैं भी तो तेरा कोई था, था हूं ? "

दुलारी,—" रुस्तम, किसी ज़माने में—यानी लड़कपन के ज़माने में तू मेरा कोई था, लेकिन अब वे दिन गए और मेरा दिल तुझसे यहां तक हट गया है कि तेरी सूरत तो दूर किनार, तेरा नाम सुनकर भी मुझे बुख़ार आता है ! "

रुस्तम,—" तो बिहतर होगा, अगर तू शाहज़ादे से कह कर मुझे मरवा डाले, जिसमें आइन्दः तुझे बुख़ार की तकलीफ़ न उठानी पड़े ! "

दुलारी,—" अगर तू अपनी शरारत से बाज़ न आएगा और अब फिर कभी मेरे सामने आने का हौसला करेगा तो बेशक मैं शाहज़ादे से कह कर तुझे मुनासिब सज़ा दिलवाऊंगी । "

रुस्तम,-" लेकिन, इसके पेश्तर अगर मैं बादशाह गाजिउद्दीन हैदर के रूबरू तुझ पर दावा करूं, तो कैसा हो ! "

दुलारी,—[गुस्से से] " तू किस बात का दावा करेगा ?"

रुस्तम,—" इस बात का कि दुलारी मेरी जोरू है और इसे शाहज़ादा ज़बरदस्ती अपनी बेगम बनाना चाहता है ! "

दुलारी,—" मैं तेरी जोरू हूं, इसका तेरे पास सुबूत क्या है ?"

रुस्तम,-" सुबूत ! क्या तेरी मां पियारी और इमामबांदी कुरान हाथ में लेकर झूठी कसम खायंगी !"

दुलारी,—"तू ख़ातिर जमा रख, कि नालिश करने पर तेरा सारा हौसला पस्त होजायगा और तू पागल समझा जाकर शाही जेलमें, जहां पर पागल कैदी रक्खे जाते हैं, कैद किया जायगा ।"

रुस्तम,—" ख़ैर, जो कुछ इसका नतीजा होगा, उसे मैं झेल लूंगा, लेकिन एक मरतबः तो मैं अपनी ऐसी कर गुज़रूंगा ।"

दुलारी,—(गर्मी से) " सुन, रुस्तम ! शरारत से बाज़ आ और जाकर किसी औरतसे चट पट तू शादी करले । अगर ऐसा तू करेगा तो तेरी पर्वरिश मैं करूंगी और बेगम बनने पर शाही दरबार में कोई अच्छा ओहदा तुझे दिलवा दूंगी । "

रुस्तम,—" और कभी कभी मुझ ग़मज़दे को भी अपनी ख़िदमत में कबूल करोगी ? "

दुलारी,—" भला, यह कब मुमकिन है कि शाही महलसरा के अन्दर रहने पर मैं तुझसे मिल सकूंगी !"

रुस्तम,—" इसकी फ़िक्र तू मत कर । अगर तू हुक्म देगी तो मैं महलसरा के अन्दर भी तेरी ख़िदमत में उसी तरह पहुंचूंगा जिस तरह कि यहां आया हूं और इस राज़ को कोई कानों कान न जानेगा । "

दुलारी,—" लेकिन, नहीं, मैं तेरे साथ अब किसी किस्म का ताल्लुक नहीं रखना चाहती ।"

रुस्तम,—"खूब ग़ौर करले, दुलारी! मुझे सता कर तू कभी आराम न करने पाएगी।"

दुलारी,—(ज़ोर से चिल्लाकर) "मैं तेरा खून पीलूंगी, ओ हरे कंबख़्त! कोई है! देखो लोगो, दौड़ो, मेरी कोठरी में चोर........."

पूरी आवाज़ दुलारीके गले से न निकल सकी, क्योंकि रुस्तम ने, जो अब तक उसके पलंग के पास खड़ा था, उसके सीने पर चढ़ कर उसके मुंह में कपड़ा ठूंस दिया। और इसके बाद उसे बेहोशी की दवा सुंघा कर उसने अपने जेबमें से एक शीशी तेजाब की और एक लोहे की मुहर निकाली और उस मुहर को तेजाबमें डुबो कर दुलारी की दूसरी जांघ में दाग दी। इसके बाद उसने मुहर और तेजाब की शीशी को अपने जेब में रक्खा और एक काग़ज़ पर पेनसिल से कुछ लिखऔरउसेदुलारीको अंगियामेंखोंसकरवहउसकोठरी सेबाहरहुआ।

बाहर कोठरी के एक स्याह नकाबपोश और खड़ा था, उसने रुस्तम के हाथको पकड़ कर कहा,—"खूब! तुमने अपने काम को बड़ी सफ़ाई के साथ किया।"

रुस्तम,—"अजनबी नकाबपोश! अगर दुलारी मेरे खून की प्यासी न होती तो मैं हर्गिज़ तुम्हारा हुक्म न बजा लाता।"

नकाबपोश,—"ख़ैर, अब तो दुलारीका अंदरूनी हाल तुमने जान ही लिया, पस अब तुम्हारा क्या इरादा है?"

रुस्तम,—"मेरा इरादा फ़क़ीर होकर मक्के चले जाने का है।"

नकाबपोश,—"नहीं, जल्दी न करो, और जो मैं कहता हूं, उसे सुनो। तुम कलही शाही दरबार में दुलारी और शाहज़ादे पर नालिश कर दो।"

रुस्तम,—"लेकिन मेरे ख़ातिरख़ाह गवाही कौन देगी?"

नकाबपोश,—"इसकी तुम फ़िक्र मत करो और अपने सबूत में यही मुहर पेश करो, जिससे कि तुमने अभी उसे दागा है।"

रुस्तम,—"अजी, लाहौल पढ़ो! तुम्हारी तो अकल घास चरने

गई है! अगर यह मैं ज़ाहिर करदूं कि दुलारी की जांघ में मैंनेही मुहर दागी है, तो उलटा मैं ही फांसी पा जाऊं। इस लिये अब मैं शाहीदरबार में दुलारी पर कोई दावा न करूंगा और एक मर्तबः दुलारी जब बेगम बन जायगी, तो उससे मुलाकात करके मक्के चला जाऊंगा।

नकाबपोश,—"आह, तुम पागल होगए क्या, जो वाही तबाही बकने लगे!"

रुस्तम,—"नहीं, प्यारे अजनबी! आज तुम्हारे चकमें में आकर मैंने बहुतही बुरा काम किया, कि अपनी दिलरुबा के जिस्म पर तकलीफ़ पहुंचाई!"

नकाबपोश,—"रुस्तम, बहशी रुस्तम! वह तेरे खून की प्यासी है!"

रुस्तम,—(आहे सर्द खैंचकर) "तभी तो मैंने भी गुस्सेमें आकर उसे जलाया; लेकिन अब मेरा गुस्सा जाता रहा, क्यों कि मैं उसे तहे दिल से प्यार करता हूं।"

नकाबपोश,—"लेकिन लानत है तेरे प्यार पर, कि तू उस बदकार औरत को प्यार करता है, जो कि फ़तहअली, वारिसअली वगैरह कितने ही अली बाबा की बगल गरमकर चुकी और तेरी जान लेने पर आमादा है!"

रुस्तम,—(चिहुंक कर) "हैं! तुम दुलारी के सारे हालतसे पूरे तौरसे वाकिफ़ मालूम देते हो!"

नकाबपोश,—"हां बात ऐसीही है; पस, अब तुम होशियार रहनो, क्योंकि दुलारी जब जानेगी कि उसकी दूसरी जांघ को तुम्हींने जलायाहै, तो वह यही समझेगी कि पेश्तर भी एक जांघ को तुम्हींने दागा होगा! पस, यह समझते ही वह तुम्हारे मरवा डालने की कोशिश करेगी।"

रुस्तम, (   ) "अल्लाह, अल्लाह! क्या नकाबपोश

तुमने मेरे साथ बहुत बुरा सलूक किया! आखिर अबमैं क्या करूं ?"

नकाबपोश,—(उसके हाथमैं एक थैली देकर) "यह लो, इस में सौ दीनारें हैं, इनसे अपनी औकात-बसरी करो और अब यहां से चुपचाप चले जाओ।"

अशर्फी पाकर रुस्तम खुश होगया और बोला,—"ख़ैर, मैं अब एक मकान खरीद करूंगा और शादी करके मज़े उड़ाऊंगा। दुलारी कंबख़्त च्यूल्हेमें जाय, अबमैं उस बदकारका कभी नाम भी न लूंगा।"

नकाबपोश,—"हां, यह तुमने इन्सानियत की बात कही। तुम ऐसाही करो। मैं वक्त पड़नेपर फिर भी तुम्हारी मदद करूंगा।"

रुस्तम,—"लेकिन, मेरे अजनबी दोस्त! तुम्हारा पता तो मैं जानता ही नहीं।"

नकाबपोश,—"ज़रूरत पड़ने पर मैं खुद मिलूंगा।"

रुस्तम,—"लेकिन मुझे अगर तुमसे मिलनेकी ज़रूरत पड़ेगी तो मैं क्या करूंगा ?"

नकाबपोश,—"यह कभी होही नहीं सकता कि तुमको ज़रूरत पड़े और मैं तुम्हारे पास न आ मौजूद होऊं।"

रुस्तम,—"तुम अजीब आदमीहो! ख़ैर एक बात मेरे समझ में न आई, मिहरबानी करके उसका हाल मुझे बतादो।"

नकाबपोश,—"कौनसी बात ?"

रुस्तम,—"तुमने अभी यह कहा था कि दुलारी की एक जांघ पेश्तर भी इसी तरह जलाई गई थी; इसका मतलब मैं न समझा।"

नकाबपोश,—"इसका सिर्फ़ इतनाही मतलब है कि यही मुहर दुलारी की एक जांघ पर कुछ दिन पेश्तर दागी गईथी।"

रुस्तम,—"जहां पर कि ज़ख़्म है ?"

नकाबपोश,—"हां, उसी मुहरके दाग़ मिटानेके वास्ते उस ने उस मुकाम पर नश्तर दिलवाया है।"

रुस्तम, "तो उस जांघको तुमने जलाया था ?"

नकाबपोश,-"हां, तुम ऐसाही समझो।"

रुस्तम,—"क्यों, तुम्हारे साथ उसकी क्या दुश्मनी है?"

नकाबपोश,—"इसके साथ मेरी आशनाई थी!"

रुस्तम,-"इसी दुलारी के साथ!"

नकाबपोश,-"हां, इसीके साथ।"

रुस्तम,—"तो तुम हो कौन वशर।

नकाबपोश,-[डांटकर] "चुपरह सूअर का पिल्ला! बस अब फ़ौरन यहांसे चला जा।"

उसकी कड़ी डाट सुन कर फिर बोदे दिल रुस्तम की हिम्मत न पड़ी कि उससे कोई सवाल करे या वहांपर ठहरे;पस, वह झटपट मकान की छत पर चढ़ गया और लगी हुई कमन्द की राह नीचे गलीमें उतर कर एक ओर को चल दिया।

उसके जानेके बाद उस नकाबपोशने छतपर जाकर अपनी कमन्द ऊपर खैंचली और उसे अपनी कमर में लपेटकर वह नीचे उतरा और एक कोठरी में घुसा, जिसमें चिराग़ जल रहा था और एक टाट पर आसमानी बेहोश पड़ी हुई थी। वहां जाकर नकाबपोश उसे कोई दवा सुङ्घाकर होशमें लाया और बोला,—

"बी, आसमानी! तुम मुझे पहचानती हो!"

आसमानी घबरा गई थी, क्योंकि अभी दो घन्टे पहिले इसी नकाबपोश ने उसकी कोठरी में घुस कर उसे ज़बरदस्ती बेहोश कर दिया था; क्योंकि उस वक्त आसमानी भी अपनी कोठरीमें पड़ी पड़ी जाग रहीथी। यही सबब था कि दुबारः उसी नकाबपोश को अपनेरूबरूदेखकर वहघबरागई और लड़खड़ातीहुई ज़बानसे बोली,-

"तुम कौन हो?"

नकाबपोश,-"मैं तेरी मलकुल मौत हूं।"

आसमानी,-"मैने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

नकाबपोश,-"कदूर हुक्मी की है।

आसमानी—"कैसी ?"

नकाबपोश,—"यही कि तूने मना करने पर भी दुलारी के गाल की मुहर को नश्तर से दूर करने की कोशिश की।"

आसमानी,—"तुमने मुझसे कब मना किया था ?"

नकाबपोश,—"उसी चिट्ठी में, जिसे कि दुलारी ने होश में आने पर उसी कबरिस्तान में पाई थी।"

आसमानी,—"लेकिन, बेचारी दुलारी के साथ तुम्हारी इतनी दुश्मनी क्यों है ?"

नकाबपोश,—"इसलिये कि पेश्तर वह मेरी आशना थी।"

आसमानी—"यह हाल मुझे नहीं मालूम है !"

नकाबपोश,—"तो यह तो तुझे मालूम है कि कबरिस्तान से दुलारी को यहां पहुंचा कर तू कहां गई थी ?"

आसमानी,—(कांप कर) "आह ! मैं शाहज़ादे नसीरुद्दीनहैदर के पास जाती थी कि एक सुनसान गली में किसीने मेरी नाक पर एक बेहोशीका कुमकुमा मारा और थोड़ी देर के बाद जब मैं होश में आई तो मैंने अपने तईं एक निहायत तंग मकान में कैद पाया !"

नकाबपोश,—"वहीं पर तुझसे कोई मिला था !"

आसमानी,—"(चौंक कर)"आह, तो क्या वो शख्स तुम्हीं हो?"

नकाबपोश,—"शायद ऐसा ही हो !"

आसमानी,—लेकिन इस वक्त तुम्हारी आवाज़ में पेश्तर से कुछ फ़र्क मालूम देता है।"

नकाबपोश,—"फ़र्क सिर्फ़ तेरी नासमझी का है। मैं वही शख्स हूं और मैंने तुझे इसी वादे पर छोड़ा था कि तू दुलारी को मुहर के दाग़ के दूर करनेकी कोशिश न करेगी और जब तक मैं तुझे हुक्म न दूंगा, तू शाहज़ादे से मिलने, या महलसरा के अन्दर जाने की भी ख्वाहिश से बाज़ आवेगी।"

आसमानी, "आह, तो तुम्हींने मेरी वह मुहर छीन ली थी,

जिसकी वजह से मैं ब आसानी महलसरा के अंदर जब चाहूं, जा सकती थी !"

नकाबपोश,-" हां, मैंने ही छीन ली थी; लेकिन मेरी बातों का जवाब तो तू दे ?"

आसमानी,-" शाहज़ादे से तो मैं नहीं मिली।"

नकाबपोश,-"कमबख्त,शैतान की बच्ची! अब मुहर के न रहनेसे तू शाहज़ादे से ब आसानी क्यों कर मिल सकती है ? लेकिन मेरे मना करनेपर भी तूने दुलारीकी मुहरके दाग़ के मिटाने की नीयतसे उस जगहपर नश्तर ज़रूर दिलवाया,जिसको आज आठवाँ रोज़है।"

यह सुन कर आसमानी ज़मीन की तरफ़ निहारती हुई चुप रह गई और नकाबपोश ने फिर कहा,—

" बस, तेरी इस शरारत और उदूलहुक्मी की मुनासिब सज़ा यही है कि तेरी एक माशे नाक तराश ली जाय, लेकिन नहीं तुझे सिर्फ़ एक फ़िकरा सुना करमैं यहांसे अपनी राह लेता हूं ! वह यहहै कि सोने के डब्बे में बंद किसीका सर और किसीके ख़ून से लिखी हुई वह किताब अब मेरे कब्ज़े में है ! बस, अब अगर तूने शाहज़ादे से मिलने की कोशिश की, या दुलारी की दूसरी जांघ पर जो आज वैसी ही मुहर छापी गई है, उसके मिटाने की नीयत से फिर नश्तर दिलवाया तो तू उस डब्बे की बदौलत ख़ाक में मिला दी जायगी।"

इतना सुनते ही आसमानी भय खाकर अपनी कोठरी में बेहोश होगई और नकाबपोश वहांसे चलकर दुलारी की कोठरी में पहुंचा। कड़ी बेहोशी के सबब वह अब तक बेहोश पड़ी थी, सो उसे सिरसे पैर तक निहार कर उस नकाबपोश ने कोठरी से बाहर निकल कर उसकी नाक पर एक कुमकुमा मारा, जिसके लगते ही एक छींक मार कर दुलारी होश में आई और उसकी दूसरी जांघ पर जो मुहर छापी गई थी,उसको जलन से वह तड़प कर रोउठी। उसने अपनीमां और आसमानी को कई आवाज़ें दी, लेकिन वो दोनों तो बेहोश पड़ी

थीं, फिर कौन आता और कौन जवाब देता। गरज़ यह कि रो धोकर उसने ज़रा उठ कर अपनी दूसरी जांघ की हालत देखी तो फिर वह रो उठी; क्योंकि इस मुहर में भी वेही अल्फ़ाज़ दर्ज थे जोकि पेश्तर वाली मुहर में थे।

इसके बाद उसने अपनी अंगिया में खोंसे हुए उस पर्चे को निकाल कर पढ़ा, जिसमें नीचे लिखी हुई कई सतरें दर्ज थीं,—

" बी, दुलारी! उदूलहुक्मी का यह इनाम है। अगर इस मुहर के दूर करने की तू फिर कोशिश करेगी तो इस मर्तबः तेरे गोल और खूबसूरत चेहरे पर यही मुहर छाप दी जायगी, जो ताक़यामत दूर न हो सकेगी। फ़क़त।"

परचा पढ़कर दुलारी अपना सर पीट कर ज़ोर से रो उठी और नक़ाबपोश उसका तमाशा देख वहांसे चलखड़ा हुआ। वह सदर दरवाज़ा खोलता हुआ दिलेरी के साथ बाहर निकल गया और उसके जाने के एक घंटे बाद आसमानी होश में आई और दुलारी के रोने की आवाज़ सुन कर उसकी कोठरी में गई। उसे देख कर दुलारी और भी ज़ोर से रो उठी और बोली,—

" आह, आसमानी तू कहां थी ?"

आसमानी,—" मैं अभी जागी हूं और तुम्हारे रोने की आवाज़ सुनकर चली आरही हूं।"

दुलारी-" आह, आसमानी! देख मेरी दूसरी जांघ पर भी आज वैसी ही मुहर छाप दी गई है!!!"

आसमानी,-(जान बूझ कर अनजान बन कर) " आह, ग़ज़ब! [देख कर] बुराहो उस ज़ालिम का! अगर मैं उस मूज़ीको देख पाऊं तो उसे कच्चा ही खा जाऊं!"

दुलारी अब तक उन बातों से; जो कि उसके साथ आसमानी को उस कब्रिस्तान में हुई थी, आसमानी ही पर दिलही दिल में शक किये हुई थी, लेकिन आज उसके दिल से गोया, सारा शक रफ़ा

गया और उसने आसमानी से कहा,—

"आसमानो, बी, आसमानी ! मुझे मुआफ़ करना ! अबतक अंदर ही अंदर मैं तुम्हींपर शक कररही थी कि यह तुम्हाराही काम है! लेकिन नहीं, आजमैंनेउस मूज़ी को पहचान लिया, जिसनेउस क़बरिस्तान में मेरी जांघ पर मुहरछापी थी औरआज यहांभी वही शख़्स ज़बरदस्ती मुझे बेहोश करके यह मुहर छाप गया।"

आसमानी,—(जल्दीसे) "वहकम्बख़्तकौनथा ! ज़रा मैं उसका पता पाऊं तो उसे कच्चाही खा जाऊं।"

इस पर दुलारी ने रुस्तम के साथ जो जो बातें हुई थीं, उन्हें सुना कर कहा,—

"बस, इन, बातों से कुढ़ कर वह मेरे सीने पर चढ़बैठा और मेरे मुहं में लत्ता ठूंस कर उसने मुझे बेहोश करदिया। बाद इसके जब मैं होश में आई तो मैंने अपनें तईं इस हालत में पाया। देख, वह कंबख़्त एक रुक्का भी लिख कर मुझे धमका गया है।"

यों कह करदुलारी ने आसमानी केहाथ में वहरुक्का देदिया, जिसे पढ़ कर उसने अपने कुरते के जेब में उस रुक्के को रख लिया और कहा,—"ख़ैर, अब तुम बेफ़िक्र रहो, मैं उस कंबख़्त मूज़ी रुस्तमको बहुत जल्द ख़ाक में मिला दूंगी।"

दुलारी,—"ऐसाही करना चाहिए, जिसमें वह मूज़ी जल्द जहन्नुम-रसीदः हो ! आह ! एक नश्तर तो अभी तक अच्छा हुआही न था कि दूसरे नश्तर दिलवाने की बारी आगई।"

आसमानी,—"लेकिन ज़रा ग़ौर से सुनो तो मैं कुछ कहूं।"

दुलारी,—"कहो तुम्हारी बात न सुनूंगी तो किसकी सुनूंगी, क्योंकि इस वक्त सिवा तुम्हारे, मेरा सच्चा मददगार यहां पर कोई नहीं है।"

आसमानी, "अब इसमुहर कोनश्तर से दूरकरने की तब तक

तुमने अगर इसमुहर को भोनश्तर से दूर किया और साथही उसने अपने क़ौल के मुताबिक तुम्हारे चेहरे पर यह मुहर छाप दी तो यह ताक़यामत दूर नहीं हो सकेगी; क्योंकि वहां नश्तर क्योंकरलगेगा और अगर लगेगा भी तो तुम्हारी सारी ख़ूबसूरती ख़ाक में मिल जायगी और उसके साथ ही तुम्हारी सारीख्वाहिशों का भी ख़ातमा हो जायगा।"

दुलारी,—"यह तो तुम सही और बहुत माकूल कलमा कह रही हो!"

आसमानी,—"क्योंकि शाहज़ादा नसीरुद्दीनहैदर कुछ तुमको नहीं चाहता, बल्कि वह तुम्हारी लासिसाल ख़ूबसूरती पर फ़िदा हुआ है।"

दुलारी,—"बहुतही सही तुमने कहा।"

आसमानी,—"ऐसी हालत में शाहज़ादे से मिलकर रुस्तम की सारी बदमाशी कह दी जाय और यह मुहर भीशाहज़ादे को दिखलादी जाय। फिर अगर यह मुहर तुम्हारी जांघ में कुछ दिन तक पड़ीही रहेगी तो कोई हर्ज नहीं।"

यह सुन कर दुलारी घबरा गई और बोली,—"आह, आसमानी तब तो सारा राज़ खुल जायगा और शाहज़ादा मेरे फ़ाहिशापन के सुबूत को पा कर मुझे मार डालेगा।"

आसमानी,—"आह दुलारी! तुम भोली हो, निरी भोली हो तुमने मेरा मक़सद ज़रा समझा! सुनो, तुम्हारी अम्मा और बी इमामबांदी तो तुम्हारी मदद पर हई हैं, पस इन दोनों से जितना मैं कहूंगी वो उतनाही करेंगी। गफ़ूरन को ख़ूब लालच देकर तुम उसे अपनी तरफ़मिलालो और फ़तहअली और वारिसअली को भी बड़े बड़े ओहदे दिलाने की लालच देकर अपनी मुट्ठी में करलो; फिर यह क्योंकर कोई साबित कर सकेगा कि रुस्तम तुम्हारा ख़ाविन्द है। मैं इस बात की गवाही दूंगी और तुम्हारी अम्मा और बी इमामबांदी से

भी इस बात की गवाही दिलवाऊंगी, 'कि दो रोज़पेश्तर रुस्तम नामी एक बदमाश ने दुलारी के पास एककुटनी भेजी थी;लेकिन जब घर वालों ने उस कुटनी का काला मुहं करके उसे घर से बाहर निकाल दिया तो आज आधी रात के बाद बीस पच्चीस बदमाशों के साथ रुस्तम घर का दरवाज़ा तोड़ कर अन्दर घुस आया और दुलारी के साथ छेड़छाड़ करने लगा; लेकिन जब दुलारी ने उसे खूब गालियां दीं तो उसने दुलारी की एक जांघ में तो छुरी मारी और दूसरी पर यह मुहर छापकर और धमकाने की नीयत से यह रुक्का लिखकर वह भाग गया। उसवक्त घर के कुल लोगों को उसके साथियों ने जकड़ कर बांधरक्खा था, जिन्हें उस बदमाश के जाने के बाद किसी किसी तरह दुलारी ही ने खोला; क्योंकि, गो, वह ज़ख्म कारी लगने से निहायत बेचैन थी; लेकिन उसके हाथ पैर खुले हुए थे।"

आसमानी की पेंचीली बंन्दिश सुन कर दुलारी देर तक उस पर ग़ौर करती रही, इसके बाद उसने कहा,—"बी, आसमानी तरीका तो तुमने बहुत उम्दः निकाला है, लेकिन उस कब्रिस्तान की वारदात पर भी ज़रा ग़ौर कर लो।"

आसमानी,—"उससे तुम बेफ़िक्र रहो; क्योंकि शाहज़ादे से मिलनेपरजैसा मैं मुनासिबसमझूंगी, वैसीहीकार्रवाई करूंगी; लेकिन यह मुहर शाहज़ादे को दिखलाही देनी चाहिये और रुस्तम को नेस्तो नाबूद करकेही तब दम लेना चाहिए।"

"क्या है, बेटी दुलारी;" ठीक इसी वक्त ऊपर कहे हुए जुमले को कहती हुई इमामबांदी उसी कोठरी में आपहुंची और कहने लगी "मैं अभी नव्वाब साहब के यहां से आई, लेकिन दो घड़ी रात बाक़ी रहते ही सदर दरवाज़ा खुला देख कर "पियारी" की कोठरी में गई। वहां वह ऐसी बेख़बर पड़ी है कि हज़ार आवाज़ देने पर भी वह न जागी, तब मैं यहां चली आ रही हूं।"

यह सुनकर आसमानी ने आज की वारदात का कुल हाल इमाम

बांदी से कह कर वह परचा भी उसे दिखलाया, जिसे रुस्तम दुलारी की अंगिया में खोंस गया था और बाद इसके उसने अपनी बदिश भी उसे सुनाई, जिसपर ग़ौर करके इमामबांदी ने भी उसे पसन्द किया। फिर इमामबांदी तो पियारी को जगाने चली गई और आसमानी शाहज़ादे से मिलने का बहाना करके दुलारी से रुख़सत हुई।

नाज़रीन! देखा आपने! कि आसमानी उस बात को बिल्कुल पीगई थी, जो कुछ कि उसके साथ उस नकाबपोश की हुई थी। ख़ैर, वह इमामबांदी के घर से निकल कर पेश्तर अपने मकान पर पहुंची। वह छोटा सा मकान उसने एक निराली गली में किराए पर ले रक्खा था। सो जब वह जाती थी तो उसका ताला खुलता था, और जब कहीं और जगह वह रहती थी तो मकान के सदर दरवाज़े में ताला रहता था। मतलब यह कि उस घर में सिवा आसमानी के कोई दीगर शख़्स नहीं रहता था।

हां, दो बेशक़ीमत ताज़ी कुत्ते ज़रूर रहते थे, जिन्हें आसमानी बहुतही प्यार करती और उनके खाने पीने की ख़बर रोज़ लेती थी; लेकिन आज वह क्या देखती है कि वे दोनों कुत्ते भी एक तरफ़ मरे पड़े हैं और उनके आगे रोटी के टुकड़े बिखरे हुए हैं, जिनमें ज़हर डाला गयाहै!!!

यहसब हालदेखकर आसमानी गहरे सन्नाटे में आ गई और उसने अपने दिलही दिल में इस बात को समझ लिया कि, 'दुश्मन अपना काम कर गया' लेकिन यह उसकी समझ में न आया कि, जब कि सदर दरवाज़े का ताला बदस्तूर बंद है और अरोसपरोस से इस मकानके अन्दर आनेके लिये कोईरास्ताही नहीं है तो फिर इस घर के अन्दर कोई आयाभीतो क्योंकर आया!!, मगर, यहआसमानी कीभूल थी, क्योंकि उसेसमझना चाहिए कि अरोसपरोस से या कमंद लगा कर आने के बनिस्बत सदर दरवाज़े से आना कितना आसान है!!!

नवां बयान ।

किस्सहकोताह, घरमें घुसकर आसमानीने अपनी कुल चीज़ें देखनी शुरूकीं, लेकिन सब ज्यों की त्यों थीं। तब वह रस्सेके सहारे से कुएं में उतरी और दोपोरसे गहरे पानी में डुब्बी लगा कर उसी डब्बे को खोजने लगी, जिसका ज़िक्र उस नकाबपोश ने किया था, लेकिन वह डब्बा अब कुएं में था कहां,जो मिलता! आख़िर,लाचार होकर वह रस्से के सहारे से ऊपर चली आई और कपड़े पहन कर देरतक रोती रही। फिर वह बोरके को अपने ऊपर डाल कर और सदर दरवाज़े में ताला लगाकर घर के बाहर हुई।

आसमानी बड़ी होशियार औरत थी, इसलिये उसने दिल ही दिलमें यह बात ज़रूर समझ ली थी कि इतनी बड़ी दिलेरीका काम रुस्तम खुद नहीं करसकता! पस,उसका कोई न कोई मददगारज़रूर है; लेकिन जब उसने बहुत तलाश करनेपर भी रुस्तम या उसकी मां को न पाया तो उसके दिल में रुस्तम के ऊपर पूरा शक़ हो गया और दिन भर वह सारे शहर में रुस्तम को खोजा की; लेकिन जब बहुत-तलाश करनेपर भी उसका कहीं पता न लगा तो शामको वह दुलारी के पास लौट आई और निराले में उन दोनों की यों बातें होती रहीं,

दुलारी,—"कहो, क्या कर आई?"

आसमानी,—(उसके पलङ्ग पर बैठकर)"रुस्तम वो उसकी मां तो लापता होरहे हैं; लेकिन ख़ैर, अगर वह दुनियां में ज़िन्दा रहेगा तो उसे एक न एक दिन मैं ज़रूर ही खोज निकालूंगी।"

दुलारी,—"और शाहज़ादे से मुलाक़ात हुई?"

आसमानी,—"नहीं, वे आज कई दिनों से कहीं शिकार खेलने चले गए हैं।"

नाज़रीन, आप जानते होंगे कि यह बात मक्कारा आसमानी ने बिल्कुल ही झूठ कही, क्योंकि शाहज़ादेसे अब वह आसानीसे नहीं मिल सकती थी, क्यों कि महलसरा के अन्दर आने की मुहर उस

नक़ाबपोश ने छीन ली थी। दूसरे यह कि शाहज़ादे को भी आ॰ आसमानी की कोई ज़रूरत बाकी नहीं रह गई थी, क्योंकि उसका दिलरुबा, जिसे कि वह दुलारी समझे हुए था, उससे रोज़ही रात को मिला करती थी। यही सबब था कि आसमानी अब ज़रा मुश्किल से शाहज़ादे का दीदार हासिल कर सकती थी।

आसमानी ने कहा,—"ख़ैर, फ़िलहाल तो सब्र करना चाहिए लेकिन शाहज़ादेके आनेपर उससे मैं ज़रूर मिलूंगी और उसे यहां लेआऊंगी और बदज़ात रुस्तम को भी मैं निहायत मुस्तैदी के साथ तलाश करूंगी।"

दुलारी,—"लेकिन जब कि रुस्तम मुझपर ऐसा ज़ुल्म करके अपनी अम्माके साथ यहांसे भाग गया है तो मुमकिनहै कि अब वह कमबख़्त ताज़ीस्त लखनऊ में आनेकी हिम्मत न करेगा!ऐसी हालतमें मैं यही बिहतर समझतीहूं कि कलही इस आगमें भी नश्तर दिलालूं।"

आसमानी अपना वह अजीब हिस्सा खोकर भला अब उस नक़ाबपोश की मर्ज़ीके खिलाफ़ कब कोई कार्रवाई कर सकतीथी! पस उसने दुलारी को डराने की नीयतसे कहा,—"अफ़सोस,बड़े अफ़सोस का मुक़ामहै कि तुम्हारी बदकिस्मती ने इस मज़बूती के साथ तुम्हारा दामन पकड़ाहै,कि तुमको मेरी नसीहत-आमेज़ बातें भली नहीं मालूम देतीं!"

दुलारी,—(आजिज़ी से,'आह,बी आसमानी! मैंने क्या किया है कि तुम इस क़दर मुझपर ख़फ़ा होने लगीं!"

आसमानी,—"किया तो तुमने कुछ भी नहीं, लेकिन करना चाहती हो; तब तो मेरी बातोंपर एतराज़ करती हो!"

दुलारी,—"आह,तो अगर तुम्हारी मर्ज़ी नहींहै तो मैं तुम्हारे हुक्मके खिलाफ़ कोई कार्रवाई हर्गिज़ न करूंगी।"

आसमानी,—"हां, ऐसा ही चाहिए! क्योंकि तुम मुझे अपना दोस्त समझो और यकीन कामिल रक्खो कि तुम्हारी भलाईके सिवा

बुराई मैं हर्गिज़ न करूंगी।"

दुलारी,-"बी, आसमानी! तुम पर अब मैं अपनी अम्माजान की तरह मुहब्बत करने लगी हूं।"

आसमानी,—"तो मैं भी तुमको अपनी दुख़तर की तरह प्यार करूंगी।"

दुलारी,-"ख़ैर तो अब मैं तुम्हारी मर्ज़ीके ख़िलाफ़ कुछ न करूंगी।"

आसमानी,-"अच्छा, सुनो! अगर रुस्तम यहां पर मौजूद होता तो बातही दूसरी थी! मैं फ़ौरन उसे धूलमें मिला देती; लेकिन जबकि वह लापताहै तो उसके दिलमें कोई भारी दग़ा करनेका इरादा है! पस ऐसी हालत में इस मुहर के दाग़ के मिटाने की कोशिश करना सरासर अपने तईं ज़रर पहुंचाना है। इस वास्ते, शाहज़ादे पर इसका ज़ाहिर कर देना और रुस्तम को पकड़ कर मरवा डालना ही बिहतर होगा। फिर बाद इन कार्रवाइयों के अगर शाहज़ादे की मर्ज़ी होगी तो नश्तर देकर यह दाग़ भी दूर करदिया जायगा, वरन बराबर बना रहेगा; क्योंकि यह मुहर पोशीदः जगह पर है, जहां सिवा शाहज़ादे के और किसकी निगाह पड़ सकती है?"

दुलारी,—"लेकिन, ऐसा भी तो मैं कर सकती हूं कि यह दाग़ लाउम्र शाहज़ादे को न देखने दूं!"

आसमानी,-"ऐसी समझ से तुम खुद ब खुद अपने पैरमें कुल्हाड़ी मारा चाहती हो!"

दुलारी,—"यह कैसे?"

आसमानी,—"ख़ैर, जो अच्छा, समझ पड़े, सोही करो!"

दुलारी,—"नहीं, नहीं, मैंने तो सिर्फ़ अपना इरादा ज़ाहिर किया था, कुछ कर डालने पर मैं आमादः थोड़े ही हुई हूं!"

आसमानी,-"तो सुनो, ऐसा करनेमें बड़ी भारी ख़राबी पैदा होगी! और,वह यह है कि अगर शाहज़ादे को कोई दुश्मन इस अम्र

की ख़बर देदेगा और वह ज़बर्दस्ती इस दाग़ को देखना चाहेगा, तो तुम क्या करोगी ! "

दुलारी,-" आह ! तब तो वह इस दाग़ को देखकर फ़ौरन मुझे मार डालेगा।"

आसमानी,—" पस, मेरी राय ठीक है ! क्योंकि ऐसा करने से तुम कभी भी शाहज़ादे की नज़रों से न गिरोगी और कल्लन का भी ख़ातमा हो जायगा। "

दुलारी,—" बेहतर, अगर तुम्हारी यही राय है तो मैं भी ऐसाही करूंगी; आइन्दः जो कुछ किस्मत दिखलाए ! "

आसमानी,—" दुलारी, तुम यक़ीन रक्खो कि तुम्हारी किस्मत बहुत ही अच्छी है कि तुमने मुझसा मददगार पाया, जिस से तुम्हें कभी ज़रर न पहुंचेगा। "

दुलारी,—" ख़ुदा करे, ऐसाही हो, और अगर ऐसाही हुआ तो बी आसमानी ! तुम देखोगी कि मैं किस खूबी के साथ तुमसे पेश आती हूं। "

आसमानी,—" सुनो, बी दुलारी ! मुझे रोनेवाला आगे पीछे कोई नहीं है और अब मैं कब्र में पैर लटका चुकी हूं; पस, ऐसी हालत में मुझे ज़र व जवाहिर की मुतलक़ ख़्वाहिश नहीं है; क्योंकि किसके वास्ते मैं अब दौलत बटोरूं। लेकिन तुम्हारे ऊपर न जाने क्यों, मेरी बड़ी मुहब्बत हो गई है, और मैं यही चाहती हूं कि तुम्हें शाहज़ादे की बेगम बना छोड़ूं ! "

दुलारी,-"आह,बी आसमानी!तुम मुझे इतना प्यारकरने लगीं?"

आसमानी,—" ख़ैर, अब अपनी मां और इमामबांदी से भी इस अम्र में राय लेलो। "

इसके बाद पियारी, इमामबांदी,दुलारी और आसमानी ने मिल कर इन बातों पर खूब बहस की, और अख़ीर में आसमानी की ही राय को सभों ने पसंद किया।

इतने ही में एक लौंडी ने आकर ख़बर दी कि फ़तहअली और मुरादअली आए हैं और उनके साथ उनकी अम्माजान भी हैं।

इमामबांदी के यहां सिवा इस लौंडी के, जिसका नाम बानू था और जो बुड्ढी थी, और कोई दूसरी लौंडी या गुलाम न था और यह (बानू) बराबर इमामबांदी के साथ ही रहती थी। इसी वजह से कलकी वारदातके वक्त बानू घरमें मौजूद न थी, क्योंकि इमामबांदी के साथ थी वर न उस बेचारी को भी बेहोशी की दवा सुंघाई जाती।

किस्सह कोताह, दुलारी ने तख़्लिए में बारी बारी से फ़तहअली और मुरादअलीको अपने पास बुला और मीठीबातोंसे उन्हें अपनी मुट्ठी में करके इस बात का वादा किया कि, बेगम बनने पर वह उन दोनों को शाही दरबार में बड़े बड़े ओहदे दिलवाएगी और तख़्लिए में उनसे मुलाकात भी करेगी! पस वे दोनों रुस्तम से क़तई वास्ता छोड़ दें और इस बातको हर्गिज़ ज़ाहिर न होने दें कि दुलारी रुस्तम की ओर है! बल्कि रुस्तमका पता लगाएं और उस की ख़बर दुलारी को दें।'

गरज़ यह कि वे दोनों खूब खुश होकर और दुलारी के हुक्म की पाबन्दी करने की कसम खाकर अपने घर गए और उनकी मां भी दुलारी की तरफ़दार बन गई।

जाते वक्त दुलारी की मां ने दुलारी के कहने से फ़तहअली की मां को बीस दीनारें दी थीं; और बहुत कुछ देने का वादा किया था, लेकिन उन लोगोंको दुलारी ने समझा दिया था कि जब तक बुलाया न जाय, वे लोग ज़ाहिरा तौर से इमामबांदी के यहां न आएं और अगर ऐसीही ज़रूरत पड़े तो सिर्फ़ उनकी मां गफ़ूरन, रात के वक्त बोरका ओढ़ कर बहुत पोशीदः तौर से आए।

ख़ैर, इधर तो दुलारी का यह हाल है और उधर नसीरुद्दीनऔर उसकी दुलारी की क्यों कर गुज़रती है, अब मैं वही हाल लिखूंगा।

दसवां बयान ।

रात आधी के क़रीब पहुंच चुकी है और महलसरा के अन्दर सन्नाटा फैला हुआ है। ऐसे वक्तमें शाहज़ादा नसीरुद्दीनहैदर अपनी ख़्वाबगाह में बड़ी शानोशौकत से मसनद पर बैठा हुआ है और उसके बग़ल में उसकी दिलरुबा बैठी हुई है, जिसे अब तक वह दुलारी समझे हुए है !

उन दोनों में तरह तरह की दिल्लगी मज़ाक की बातें हो रही हैं और हर एक हरकत में आशिक माशूक के चोचले चुए पड़ते हैं ! ! !

नसीरुद्दीन के हाथ में प्याला है और दुलारी निहायत ख़ूबी के साथ छोटी सी बीन बजाती हुई एक ग़ज़ल गारही है; लेकिन धीमी आवाज़ में ! ! !

" दिल मेरा ज़ुल्फ़े सियह डस गई नागिन बन कर ।
बेगुनह दोस्त ने मारा मुझे दुश्मन बन कर ॥
मर मिटा, जान गई, रंज असीरीके सहे ।
पाये बुलबुल ने ये फल आशिके गुलशन बन कर ॥
उस परी ने लबे गुलरंग पै, मिस्सी जो मली ।
और सिमटा वो दहन ग़ुंचए सौसन बन कर ॥
हाथ उठाओगे जो बेजुर्म मेरे क़त्ल को तुम ।
तेग़ बाज़ू से लिपट जायगी जौशन बन कर ॥
बाल उसने जो जनाज़े प मेरे खोल दिए ।
सबने जाना कि परी आई है जोगन बन कर ॥
आज उस गुल का अजब रंग हुआ पीके शराब ।
चरपई गाल चमकने लगे कुन्दन बन कर ॥
दोस्त जब तक है ख़ुदा, कुछ नहीं परवा मूनिस ।
क्या करेगा कोई हासिद मेरा दुश्मन बन कर ॥ "

कुछ देर तक तो दिल्लगी, मज़ाक वो गाने बजाने का सिलसिला जारी रहा, बाद इसके दुलारी ने कहा,—

"प्यारे, दोस्त! आज मैं उन कुल तोहफ़ों को तुमसे मांगती हूं जो अक्सर तुमने मेरे लिये भेजे थे, लेकिन कोई ताल्लुक न रहने के सबब मैंने उन्हें बराबर वापस कर दिए थे!"

नसीरुद्दीन,—"जहे किस्मत, कि यह बात तुम्हारे मुंह से निकली तो सही! दिलरुबा! तोहफ़े की क्या हक़ीकत है, जब कि मैं ख़ुद तुम पर सदके हूं।"

दुलारी,—"यों तो मैं भीतहे दिल से तुम पर कुर्बान हूं, लेकिन आज कुछ दिल ने ऐसी ही ज़िद पकड़ी है कि यह तुमसे आज उन तोहफ़ों को मांग रहा है!"

यह सुन कर नसीरुद्दीन एक आलमारी खोल कर उसके अन्दर से एक निहायत उम्दः छोटी सी चांदी की संदूक ले आया और उसे दुलारी के सामने खोल कर कहने लगा,—

"दिलरुबा! इस वक्त मेरे पास जो कुछ हार, जवाहिर वो ज़ेवरात मौजूद हैं, वो सब इसी संदूक में हैं।"

दुलारी,—"(देख कर)" वल्लाह, इसमें तो निहायत उम्दः और बेशकीमत जवाहिरात वो ज़ेवरात हैं!!!"

नसीरुद्दीन,—"हां, इस संदूक में एक करोड़ रुपए की लागत के जवाहिरात वग़ैरह हैं!"

यह सुन कर दुलारी बड़े प्यार के साथ नसीरुद्दीन के सीने से लिपट गई और बहुत ही नख़रे के साथ कहने लगी,—

"वल्लाह, मैं तो आज यह संदूक ही तुमसे तोहफ़े में लूंगी!"

नसीरुद्दीन,—(उसके चम्पई गालों को प्यार से चूम कर) माहेलका, तुम्हारे हुस्न के ऊपर ये सब सदके हैं!!!"

दुलारी,—"लिल्लाह, मैं तो सिर्फ़ तुम्हारा दिल टटोलती थी, कि देखूं, इसके अन्दर मेरी मुहब्बत की खुशबू कहां तक भरी हुई है!"

नसीरुद्दीन,—"मआज़अल्लाह! तुम्हारी मुहब्बत के मुक़ाबिले में ये नाचीज़ जवाहिरात किस गिनती में हैं!"

दुलारी,—"ख़ैर, यह तो सिर्फ़ एक दिल्लगी थी; भला मैं इन्हें लेकर क्या करूंगी ?"

नसीरुद्दीन,—"दिलरुबा, अब यह तुम्हारी चीज़ है; पस जिस तरह चाहो, इसे तुम आज़ादी के साथ अपने मसरफ़ में लासकती हो ?

यह सुन कर दुलारी ने बहुत ही प्यार से नसीरुद्दीन के गालों को चूम कर अपने जेब में से एक काग़ज़ निकाला और उसे नसीरुद्दीन के आगे रख कर कहा,—"प्यारे, दिलवर ! यह क्या चीज़ है ?"

नसीरुद्दीन,—(काग़ज़ को हाथ में ले और उसे उलट पलट कर देख कर) "यह तो इक़रारनामे का स्टाम्प है ?"

दुलारी,—"हां, इसे इक़रारनामे के वास्ते ही मैं लाई हूं।"

नसीरुद्दीन,—(ताज्जुब से) "क्या, मुझसे तुम किसी क़िस्म का इक़रार करवाना चाहती हो !"

दुलारी,—"काश, अगर ऐसा ही मेरा इरादा होतो इसमें तुम्हें कोई उज़्र है ?"

नसीरुद्दीन,—"लाहौलवलाक़ूवत ! तुम्हारी बातों में, और उज़्र ! लेकिन यह तो बतलाओ कि आख़िर तुम किस क़िस्म का इक़रार मुझसे कराना चाहती हो ?"

दुलारी,—"यह तुम न पूछो और अगर मुझे दिल से प्यार करते हो तो इस पर बिला उज़्र अपना दस्तख़त करदो।"

यह सुनकर और प्यार से दुलारी के गालों को चूमकर नसीरुद्दीन ने कहा,—"बहुत ख़ूब।"

इसके बाद उसने उस काग़ज़ पर अपना दस्तख़त करदिया और बाद इसके दुलारी से कहा,—

"लो अब तो तुम्हारे ख़ातिरख़ाह मैंने इस काग़ज़ पर बिला उज़्र दस्तख़त करही दिया; लिहाज़ा, अब तो ख़ुदा के वास्ते यह बतला दो कि इस इक़रारनामे में तुम क्या मज़मून लिख वाओगी ?"

दुलारी, "इसमें इस क़िस्म का मज़मून मैं कि

जिसमें ताकथामत तुम मुझे तलाक़ न देसको !"

यह सुनकर नसीरुद्दीनने एक क़हक़हा लगाया और दुलारी को ज़ोर से अपने सीनेमें लगा कहा,—

"तुम भी कैसी भोली हो ! भला यह कब मुमकिन है कि मैं जीते जी तुम्हें अपने सीने से अलग करूंगा !"

दुलारी,—"मुमकिनहै कि कभी तुम्हारा दिल मुझसे भरजाय!"

नसीरुद्दीन,—"यह सरासर गैर मुमकिन है !"

दुलारी,—"अच्छा, फ़र्ज़ करो कि—"

नसीरुद्दीन,—"(उसका मुंह बन्द करके) आह, खुदा के वास्ते अब रहम करो और ऐसी जली कटी बातों से नाहक जी न जलाओ।"

दुलारी,—"प्यारे, तुम मुझे कितना चाहते हो !"

नसीरुद्दीन,—"इसका अन्दाज़ा तुम मेरे मरने के बाद कर सकोगी !"

इतना सुनते ही दुलारी छटक कर दूर जा खड़ी हुई और गुस्से से ताव पेंच खाकर बोली,—"हय, हय, ऐसा बद कलमा अगर फिर ज़बानसे निकालोगे तो मैं अपना सिर पीट डालूंगी !"

नसीरुद्दीन,—(उठते उठते)"आख़िर, फिर तुम्हें मेरी मुहब्बत का अन्दाज़ा क्यों कर मिलेगा !"

इतना कह और दौड़कर नसीरुद्दीन ने उसे अपने सीनेसे लपटा लिया और कहा,—"दिलरुबा, गुस्से की हालत में तो तुम और भी ज़ियादह खूबसूरत मालूम देती हो !"

दुलारी,—"चलो, हटो, मुझसे न बोलो; अब मैं यहां कभी न आऊंगी।"

नसीरुद्दीन,—"वल्लाह, ऐसी ख़फ़गी ! यह सितम ! इतना ज़ुल्म !!!"

दुलारी,—"चलो, हटो भी ! मुझे ये चोचले नहीं अच्छे लगते!!!"

नसीरुद्दीन,—"ऐ है! यह नाज़! वल्लाह, यह नादिरशाही!!!"

इसके बाद नसीरुद्दीन उसे पलङ्गपर खैंच ले गया और बड़ी बड़ी खुशामदोंसे उसे किसी किसी तरह मना मुनू कर खुश किया। लेकिन वह रात मुहब्बत-आमेज़ झगड़े ही में खतम होगई और मुर्ग की आवाज़ सुन कर दुलारी उठ खड़ी हुई और बोली,—

"दोस्त, अब बन्दी रुखसत होती है, क्यों कि सुबह की सफ़ेदी आस्मान पर फैल रही है।"

नसीरुद्दीन,—"दिलरुबा, मैं उम्मीद करता हूं कि आज शब को भी बदस्तूर मुलाकात ज़रूर ही होगी!"

दुलारी,—"इसमें भी कोई शक है!"

यों कह और एकरारनामे के कागज़ और जवाहरात की पेटी को लेकर वह वहांसे झटपट चलदी।

उसके जानेपर नसीरुद्दीन पलङ्ग पर सोरहा और दसबजे दिनको उसकी नींद खुली। तब उठकर उसने जल्दी जल्दी मामूली कामोंसे फुर्सत पाकर गुसल किया और खाना खानेके बाद अपने मुसाहबों के साथ चौसर शतरञ्ज में सारा दिन बिता दिया। तीसरे पहरको हवाखोरी के लिये भी वह महलसे बाहर निकला, लेकिन शाम होते होते महलमें वापस चला आया और अपनी ख्वाबगाह में बैठकर दुलारी का इन्तज़ार करने लगा। यों उसकी दुलारी आधीरात से पेश्तर उसकी ख्वाबगाहमें कभी नहीं आती थी, लेकिन वह इन दिनों सरे शाम ही से अपनी ख्वाबगाह में अकेला बैठा बैठा उसका इन्तज़ार किया करता था, जब से कि दुलारी के साथ उसका रब्त ज़ब्त हुआ था।

ग्यारहवां बयान।

राह तकते तकते सारी रात गुज़र गई, लेकिन दुलारी न आई! यह देखकर नसीरुद्दीन निहायत ग़मगीन और बेसब्र हुआ और सवेरा होते ही उसने अपने ग़ुलाम क़ादिर को हुक्म दिया कि,—"आसमानी को जल्द हाज़िर कर!"

हुक्म सुनतेही क़ादिर आसमानी की तलाश में निकला, इसलिए कि उसे आसमानी का घर नहीं मालूम था; लेकिन इत्तिफ़ाक़िया, या ख़ुदा के फ़ज़ल से क़ादिर उसी गली में जा निकला, जिसमें कि आसमानी का मकान था और अपने मकान के दरवाज़े पर खड़ी हुई वह गाजर ख़रीद रही थी।

उसे देखते ही क़ादिर पहचान गया और हंसकर बोला,—

"अस्सलाम अलेकुम, बी आसमानी!"

आसमानी,—(उसे देख, ख़ुश होकर)" वालेकुम सलाम, मियां क़ादिर! कहो किधर को चले?"

यह सुन और गाजरवाली को खड़ी देखकर क़ादिर ने कुछ इशारा किया और कहा,—"वो जो तुमने उस रोज़ मुझसे कुछ रुपए उधार लिए थे, अगर आज उन्हें देदो तो बड़ी मिहरबानी हो! क्यों कि मुझे आज उनकी सख़्त ज़रूरत है और इसी वास्ते अलस्सुबह मैं तुम्हें तकलीफ़ देने आया हूं।"

आसमानी उसके इशारेका मतलब समझगई और बोली,—"आह इस वक्त तो मैं निहायत तरद्दुद में हूं, लेकिन ख़ैर; जब कि तुम आही गए और मुझे तुम्हारे रुपए देने ही हैं तो ज़रा ठहर जाओ। इस नेकबख़्त गाजरवाली को पैसे देलूं तो तुम्हें कुछ रुपए दूं।"

क़ादिर,—"कुछ रुपएके क्या मानी?"

आसमानी,—"यही कि बवजह तरद्दुद के आज तुम्हारे कुल रुपए मैं नहीं चुका सकती, जिसके लिये निहायत आजिज़ीके साथ मैं तुमसे माफ़ी चाहती हूं।"

क़ादिर,—"लेकिन, बी आसमानी ! यह सरासर इन्सानियत के बईद है कि मैंने तुम्हारा वक्त पर काम चला दिया और मेरे वक्त पर तुम मुझे हीला बताती हो !"

आसमानी,—(गाजरवाली को पैसे दे कर) "आह क़ादिर, ख़फ़ा न होओ और घर के अन्दर आओ। मैं खोज ढूंढ कर जो कुछ रुपए इस वक्त मौजूद होंगे, तुम्हें देदूंगी और बाकी के रुपए जुमेरात के रोज़ ज़रूर ही देदूंगी। तुम इतना घबराते क्यों हो ! क्या रुपए के एवज़ में मैंने अपनी चीज़ तुम्हारे पास नहीं रखदी है और क्या तुम अपने रुपयों का सूद न लोगे ?"

गरज़ यह कि नौजवान गाजरवाली क़ादिर से आंखें लड़ा कर वहांसे चली गई और क़ादिर के साथ आसमानी मकान के अन्दर गई। मकान का सदर दरवाज़ा उसने भीतर से बंद कर लिया और क़ादिर को चौकी पर बैठा कर कहा,—

"वल्लाह, तुमतो निहायत अकलमंद शख्स हो!"

कादिर,—"आख़िर, क्या करता ! उस कबड़न के आगे और कौन सा हीला पेश करता !"

आसमानी,—(मुस्कराकर) "उसने तुम्हारे साथ कैसी शोखी के साथ आंखें लड़ाई थीं !"

कादिर—"अजी, ये कबड़िनें बड़ी फ़ाहिशा होती हैं ! ख़ैर अब मतलब की बात सुनो।"

आसमानी,—"वल्लाह, मैं तो तुम्हारा आसराही देखती थी !"

कादिर,—"चेख़ुश, भला यह तुमको क्योंकर मालूम हो गयाकि इस वक्त मैं आऊंगा !"

आसमानी,—"यह तो मुझे नहीं मालूम था कि इस वक्त तुम आओगे, लेकिन इतनामैं ज़रूर जानती थी कि किसी न किसी रोज़ शाहज़ादा किसी न किसी शख्स को मेरे पास ज़रूर भेजेगा। पस, अगर मेरी अकल ख़ता न करती हो तो तुम्हें शाहज़ादे नेही मेरे पास

भेजा है और शायद मुझे याद भी किया है।"

क़ादिर,—"बेशक, बात ऐसीही है! वल्लाह,तुम निहायत ज़हीन औरत हो! खैर तो अब जल्दी करो, क्योंकि शाहज़ादे साहब ने बहुत जल्द तुमको तलब किया है।"

आसमानी,—"लेकिन ज़रा ठहरो!इस वक्त किसी सख्त ज़रूरत के सबब मैं तो नहीं चल सकती, मगर एक ख़त ज़रूर लिखकर देती हूं। उसे तुम चुपचाप शाहज़ादे को देना और उसका जवाब अगर वो भेजें तो तुम मुझे फ़ौरन देना; क्योंकि अब तो तुमने मेरा मकान देखही लिया है! पस, दरवाज़े पर आकर कुंडा खटखटाना।"

क़ादिर,—"बेहतर; लेकिन ख़ुदा के फ़ज़ल से ही मैं इधर आ निकला कि तुमसे मुलाकात होगई, वर न मैं तमाम उम्र तुम्हें खोजता फिरता, और पता न पाता, क्योंकि हज़रत सलामत ने कुछ पता तो बतलायाही न था और इतनी मजाल किसकी है कि उनसे यह अर्ज़ करता कि हुज़ूर! मैं उसका पता नहीं जानता, मिहरबानी करके पता बतला दीजिए!"

दुलारी,—"लेकिन ख़ुदा तुम्हें बिल्कुल सीधी राह पर ले आया, इसके लिये मैं उसका शुक्रिया अदा करती हूं!"

इसके बाद आसमानीने झटपट एक ख़त लिख कर उसे लिफ़ाफ़े के अंदर बन्द किया और उस पर अपनी मुहर करके क़ादिरके हाथ दिया। ख़तले और सलामकरके क़ादिर रुख़सत हुआ औरआसमानी गाजर काट काट कर अपनी बकरी को खिलाने लगी।

इस वक्त उसके मकान में पांच चार ताज़ी कुत्ते बंधे हुए हैं और एक पहाड़ी बकरी भी मौजूद है। एक कोने में उन मरे हुए कुत्तों की क़बरें बनी हैं, जिनका हाल मैं पेश्तर लिख आया हूं।

नाज़रीन, क्या आपने कुछ समझा कि आसमानी ने क़ादिर को ज़बानी जवाब क्यों न दिया,या उसकेसाथ वह ख़ुदही तुरत महलसरा को क्यों न गई! मगर आपने समझा हो तो अच्छा ही है, वर न

मैं यहां पर वह सबब लिखे देता हूं, उस पर ग़ौर कर लीजिए।—

एक तो यह कि अगर वह कादिर के साथ आया भी चाहती तो क्योंकर जाती क्योंकि महलसरा के अन्दर जाने की कुञ्जी (यही अंगूठी) तो अब उसके पास थी ही नहीं!

दूसरे अगर ज़बानी हाल वह कुछ कहती तो उस हाल में दुलारी और आसमानी का पेचीदः मामला भी आ जाता, जिसे वह किसी ग़ैर शख्स पर ज़ाहिर नहीं करना चाहती थी।

बस, येही दो ऐसे ज़बर्दस्त सबब थे कि जिनकी वजहसे दुलारी ने खत का लिखना ही मुनासिब समझा; लेकिन उस ख़त में उसने क्या लिखा था, यह मैं यहां पर लिखे देता हूं,—

"हज़रत सलामत!

"आज करीब एक महीनेके हुए कि आपकी माशूका सख्त बीमार है, अगर उसका दीदार देखना है तो अपने गुलाम के साथ ग़रीब लौंडी के मकान पर तशरीफ़ लाइए। लौंडी बराबर मकान पर मौजूद रहेगी

दूसरी गुज़ारिश यह है कि कई रोज़ हुए, लौंडी के यहां डांका पड़ा, जिसमें लौंडी के हाथ से वह चीज़ भी जाती रही जिसकी वजह से लौंडी हुजूर की ख़िदमत में बराबर हाज़िर हुआ करती थी। यही वजह है कि लौंडी इस अरसे में हुजूर की ख़िदमत में हाज़िर न हो सकी।

ख़ताएं मुआफ हों और मिहरबानी करके ज़रूर तकलीफ़ की जाय। मुलाकात होने पर लौंडी कुल अहवाल सुनाएगी।

हुजूर की लौंडी।"

नाज़रीन, देखा आपने! आसमानी के ख़त का मज़मून यही था और दस्तख़त की जगह बिलकुल सादी छोड़ दी गई थी। दरअसल, आसमानी निहायत चालाक औरत थी। भला यह वह कब चाहती थी कि उसका पोशीदा हाल कोई दीगर शख्स जान लेवे पस, उसने इस

हाथ में भी यह ख़त पड़े तो वह इस लिखावट का मतलब ख़ाक भी न समझ सके और उसे इस बातका भी पता हर्गिज़ न लगे कि यह ख़त किसे लिखा गया है और इसका लिखनेवाला कौन बशर है !!!

क़ादिर करीब दो घन्टे के बाद लौट कर शाहज़ादे के पास पहुंचा, तब तक वह आसमानी के इन्तज़ार में बैठा ही था। सो क़ादिर को देखते ही उसने पूछा,—"आसमानी आई ?"

कादिर,—(शाहानः आदाब बजा लाकर) "हुजूर, उसने यह ख़त ख़िद्मत में पेश कियाहै।"

यों कहकर कादिर ने शाहज़ादे के सामने ख़त रख दिया।

नसीरुद्दीन,—(ख़त देखकर) "ख़त दिया है ! क्या आने की फ़ुर्सत नहीं थी ! ख़ैर तू अपना काम देख।"

"जो इर्शाद," कहकर और आदाब बजा लाकर क़ादिर बाहर चला गया और नसीरुद्दीन ने लिफ़ाफ़े को फाड़कर उसके अन्दर से उसी ख़त को निकाल कर पढ़ा, जिसका मज़मून ऊपर दर्ज किया जा चुका है।

एक, दो, तीन मर्तबः बल्कि लगातार कई मर्तबः नसीरुद्दीन ने उस ख़तको पढ़ा, लेकिन उसकी लिखावट का कुछ भी मतलब उसने न समझा। तब कादिर को पुकार कर उसने सवाल पर सवाल करने शुरू किए,—

"तू आसमानी को पहचानता है ?"

क़ादिर,—"हुजूर, उसे एक मुद्दतसे गुलाम पहचानताहै।"

नसीरुद्दीन,—"उसका मकान किस महल्ले में है ?"

क़ादिर,—"काशगरी महल्ले में।"

नसीरुद्दीन,—"आसमानी पागल तो नहीं हो गई है ?"

क़ादिर,—"जी, नहीं हुजूर। उसके होशोहवास बहुत दुरुस्तहैं।"

नसीरुद्दीन,—"तू ठीक कहता है ?"

क़ादिर,—"हुजूर, मेरे देखनेमें तो उसका कोई वहशीपन नहीं

आया, क्यों कि निहायत अक्लमन्दी के साथ उसने गुफ्तगू की थी।"

नसीरुद्दीन,—"तू उसके मकानको बखूबी पहचानताहै न ?"

कादिर,—"जी हां, हज़रत।"

नसीरुद्दीन,—"देख, कादिर! आसमानी या उसके मकानके पहचाननेमें अगर तूने ज़राभी भूल की, तोमैं तुझे सख्त सज़ादूंगा।"

क़ादिर,—"बजा इर्शाद।"

नसीरुद्दीन,—"ख़ैर, इस वक्त तू अपना काम देख; शाम होनेके बाद तुझे मेरे साथ आसमानीके मकानपर चलना होगा।"

कादिर,—"जो हुक्म!"

यह कहकर कादिर जाया ही चाहता था कि नसीरुद्दीनने उसे रोका और कहा,—

"और सुनता है, बे!"

कादिर,—"हज़रत!"

नसीरुद्दीन,—"तू फ़ौरन जा और आसमानीसे कह आ कि कुछ रात गुज़रने पर मैं उसके मकान पर आऊंगा।"

कादिर,—"जो हुक्म।"

इसके बाद कादिर चला गया और नसीरुद्दीन ने जिस बेचैनीके साथ उस दिनको बिताया, वह बयानसे बाहर है।

यह खुदा की शानहै कि इस वक्त नसीरुद्दीन आसमानी या उसके मकान जाननेमें गफ़लत करनेसे कादिर को सज़ा की धमकी देता है, लेकिन जब उसने पेश्तर कादिरको आसमानी के हाज़िर करनेका हुक्म दियाथा, उस वक्त इस बातका उसने ज़रा ख़याल न किया था और न कादिरसे पूछाही था कि तू आसमानी का मकान भी जानता है!!!

बारहवां बयान ।

रातके नौ बजगए हैं, लेकिन अंधेरी रात के सन्नाटेने आधीरात का समा बांध रक्खा है ! आज आसमानी के घरमें बड़ी सफ़ाई नज़र आतीहै और वह मकान थोड़े से सामानों से भी ऐसी खूबी के साथ सजा दिया गयाहै कि जिसमें एक मामूली दरजे के अमीर की ख़ातिर तवाज़ः मुनासिब तौर व तरीके के साथ की जासके ।

लोगों को सुन कर ताज्जुब हुआ होगा कि इतने थोड़े अरसे, याने सिर्फ़ दिनभरकी मुहलतमें आसमानीने उस घरको इतना साफ़ वो सुथरा बनाकर क्यों कर आरास्तः किया, लेकिन जिन लोगों को चुस्त, चालाक, वो जहांदीदः लोगों से काम पड़ा है, वे इस बात को आसानी से समझ सकते हैं कि ऐसे मुतफ़न्नी और चौजर्ब आदमी थोड़े ही खर्च में बहुत जल्द अपने कामको ब खूबी अंजाम कर सकते हैं। पस, यही सबब था कि चालाक आसमानी ने थोड़े से रुपए खर्च कर और कुल सामान बीबी इमामबांदीसे मंगनी मांगकर थोड़े ही अरसे में अपना काम बड़ी खूबी के साथ कर डाला था ।

उस वक्त आसमानी के घर में जाबजा मोमी शमादान वो कंदीलें बल रही थीं और सजे हुए घरमें ज़मीनमें कालीन बिछी हुई थी, उसपर एक तख्त बिछाया गयाथा । तख्तके ऊपर ज़रदोज़ी काम के मसनद वो तकिए लगे थे और कई फ़ानूस रौशन थे।

ऐसे ही वक्तमें किसीने सदर दरवाज़ेका कुण्डा खटखटाया, जिसकी आवाज़ सुनते ही चट आसमानी ने दरवाज़ा खोल दिया और दो स्याहनकाबपोशों के घुसने पर दरवाज़ा बदस्तूर बन्द कर के वह उन दोनों को मकानके अन्दर ले आई। उन दोनों शख्सों में एक तो जनाब शाहज़ादे नसीरुद्दीन साहब बहादुर थे और दूसरा था, उनका गुलाम कादिर !

शाहज़ादे को देखते ही आसमानी उसके कदमों पर गिर पड़ी और गरम गरम आंसू बहाने लगी। यह देख, नसीरुद्दीनने उसे खु.

उठाया और बहुत सा दिलासा दे कर कहा,—"बी आसमानी! मेरे जीते जी, तुम इतनी फ़िक्रमंद क्यों होती हो!"

ग़रज़, ग़ुलाम क़ादिर तो सदर दरवाज़े के नज़दीक एक मूढ़े पर बैठा दिया गया और नसीरुद्दीन को आसमानी उसी सजी सजाई कोठरी में ले आई और तख़्त पर बैठा और ज़मीन चूम कर शाहानाः आदाब बजा ला कर दस्तबस्तः अर्ज़ करने लगी,—

"हुज़ूर, पेश्तर इस लौंडी का कुसूर मुआफ़ करें कि इसने खुद हाज़िर न हो कर हज़रत के दुश्मनों को इतनी तकलीफ़ दी।"

नसीरुद्दीन,—"वल्लाह, इससे तो मुझे निहायत राहत मिली। वाह, मकान तो तुम्हारा निहायत तबीयतदारीके साथ आरास्ता है! मैं नहीं जानता था कि इस ज़ईफ़ी के आलम में भी तबीयतदारी ने तुम्हारा दामन नहीं छोड़ा है!"

आसमानी,—"अय, मैं सदके, मैं क़ुर्बान। लेकिन भला हुज़ूर यह क्या फ़र्माने लगे! ज़हे किस्मत कि हुज़ूर के कदम इस ग़रीब-ख़ाने में आगए, वर न यह जगह तो हुज़ूर के गुलामों की तवाज़ह: करने लायक भी नहीं है।"

नसीरुद्दीन,—"वाह, यह तुम क्या कहती हो! फ़िल हकीकत, मैं तुम्हारा मकान देख कर निहायत ख़ुश हुआ!"

आसमानी,—"लेकिन, हज़रत! यह तो किराए का मकान है।"

नसीरुद्दीन,—"तो, जिसका यह मकान है, उसका पता तुम मुझे बतलाना। मैं इसे तुमको ख़रीद दूंगा।"

आसमानी,—"अय, बलाएं लूं! मैं सदके!! मैं क़ुर्बान!!! हुज़ूर! यह तो बिल्कुल पुराना और कच्चा मकान है; पस, हुज़ूर अगर बख़्शें तो कोई उम्दः मकान इनायत करें।"

नसीरुद्दीन,—"अच्छी बात है; तुम अपने पसंद का कोई मकान तलाश करो, मैं उसे ख़रीद दूंगा।"

आसमानी,—"अल्हम्दुलिल्लाह! खुदावंदकरीम हुज़ूर को हफ़्त-

अकलीम की बादशाही अता करे।"

नसीरुद्दीन,—"ख़ैर, अब मतलब की बातें होनी चाहिएं!"

आसमानी,—"बेहतर; लेकिन अब आपको दुलारी के मकान पर तशरीफ़ ले चलना होगा।"

नसीरुद्दीन,—"चलो, मैं तैयार हूं। लेकिन यह तो बतलाओ कि तुम इतने दिनों तक कहां थीं!"

आसमानी,—"हुज़ूर, आप घबराते क्यों हैं! मैं कुल हाल बयान करूंगी, लेकिन ज़रा सब्र कीजिये और सुनिये,—मुख़्तसर तौर पर बिल्फेल इतना ही कहना काफ़ी होगा कि हुज़ूर की इनायत से दुलारी और मैं अभी तक ज़िन्दः हूं।"

नसीरुद्दीन,—"अफ़सोस, सदअफ़सोस कि तुम्हारी पहेली का मतलब मेरी समझ में मुतलक न आया और तुम्हारे ख़त का मज़मून भी मैं ज़रा न समझा।"

आसमानी,—"ख़ैर तो थोड़ी देर तक हुज़ूर और सब्र करें; क्योंकि बी दुलारी के मकान पर चलने पर मैं कुल किस्सा सुनाऊंगी।"

नसीरुद्दीन,—"ख़ैर, यही सही, लेकिन यह तो बतलाओ कि अब मुझे कितनी दूर और चलना पड़ेगा!"

आसमानी,—"बहुत ही थोड़ी दूर।"

नसीरुद्दीन—"ख़ैर, चलो! आह, मैंने तो यह उम्मीद की थी कि तुम्हारे मकान पर ही दिलरुबा दुलारी से ज़रूर मुलाकात होगी!"

इसके बाद अपने दोनों कुत्तों की कबरें शाहज़ादे को दिखला कर आसमानी कादिर को तो उसी मकानमें छोड़ गई और शाहज़ादे नसीरुद्दीन को अपने हमराह बी इमामबांदी के घर लेगई।

तेरहवां बयान ।
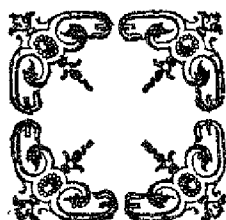
बीबी इमामबांदी का मकान भी निहायत खूबी के साथ सजा हुआ था। उसीके एक आरास्ता कमरे में आसमानी नसीरुद्दीन को लेगई और उसे मसनद पर बैठाकर कहने लगी,—

"अब आप जो कुछ सवाल मुझसे करें, उसका जवाब मैं दूंगी।"

नसीरुद्दीन ने कहा,—" पेश्तर तुम यह बतलाओ कि मेरी दिलरुबा कब से बीमार है और वह इस वक्त कहां है ? "

आसमानी,—"वह उसी रात से सख्त बीमार है, जिस रात को कि मैं उससे मिलने के वास्ते आपको उस मनहूस कबरिस्तान में बुला आई थी ।"

नसीरुद्दीन—" लेकिन यह कैसे हो सकता है, जब कि वह वहां पर मुझसे निहायत प्यार के साथ मिली और तबसे बराबर परसों की रात तक मिलती रही ! "

आसमानी,—(ताज्जुब से) "आह, यह आप क्या कह रहे हैं?"

नसीरुद्दीन,—"मैं बहुत सही कह रहा हूं, लेकिन आसमानी बुरा न मानना,—मुझे तुम्हारे दिमाग़ में कुछ खलल मालूम देता है !"

आसमानी,—" जनाब शाहज़ादे साहब ! मुआफ़ कीजिएगा,—इस वक्त हज़रत का ही दिमाग शायद चक्कर खा रहा है ! अजी जनाब ! जिस कंबख्त ने बी दुलारी को निहायत सदमा पहुंचाया और मेरे घर में डांका डालकर मुझे लूट लिया, उसी शोहदे ने आप को शायद खूबही धोखा दिया है ! ! ! "

नसीरुद्दीन,—" आह, यह माजरा क्या है ? जल्द बतलाओ, बी आसमानी ! मेरी दिलरुबा दुलारी कहां है ? "

आसमानी,—" ज़रा, आहिस्ते २ गुफ्तगू कीजिए, क्योंकि दुलारी इसके बगलवाले कमरे में गशी की हालत में पड़ी हुई है ।"

नसीरुद्दीन,—" मैं अभी उसे देखना चाहता हूं । "

आसमानी,—"ज़रा, ठहरिए और सुनिए,—अगर इस वक्त आप

वहां जायंगे तो उसकी हालत देखकर अजब नहीं आप बेखुदी में मुबतिला होकरकोई ऐसी कार्रवाई कर बैठेंकि जिससे उस बेचारी की जानों पर आ बने; इसलिये मसलहत तो यह है कि इस वक्त आप उसके देखने का इरादा छोड़दें।"

नसीरुद्दीन,—"नहीं, यह गैरमुमकिन है कि यहां आकर और उसकी ऐसी हालत सुन कर मैं उसे एक नज़र देखने से भी बाज़रहूं; लेकिन हां, इस बात का मैं वादा करता हूं कि सिर्फ दूरसे उसे एक नज़र देखकर फ़ौरन यहां वापस चला आऊंगा।"

आसमानी,—"खैरमर्ज़ीखुदा की! जबकिआप ज़िदही करते हैं तो चलिए; लेकिन इतना याद रखियेगा कि इसवक्त दुलारीका जीना या मरना आपहो के हाथ है।"

ग़रज़ यह कि आसमानी नसीरुद्दीन को उस कमरे के बगलवाले कमरे में लेगई, जिसमें, दुलारी एक उम्दः छपरखट पर बेहोशी के आलम में पड़ी हुई थी! वह सूखकर कांटा हो गई थी, चेहरा निहायत ज़र्द पड़ गया था, आंखें धँस गई थी, गाल पिचक गए थे और चेहरे पर एक तरह की मुर्दनी छाई हुई थी! गशी आलम में ही, उस वक्त; जब कि नसीरुद्दीन उसके पलंगके करीब आकर खड़ा हुआ था, दुलारी के मुहं से यक ब यक धीरे से कलमा निकल गया,—"आह, प्यारे नसीरुद्दीन!"

नाज़रीन! अपनी माशूकाकी यह हालत देख और उसके मुहं से अपना नाम सुन कर नसीरुद्दीन इस कदर बेचैन हुआ कि एक चीख़ मार कर वह वहीं ज़मीन में गिर गया और बेहोश हो गया! उस के बेहोश होकर गिरतेही दुलारी ने अपनी आंखें खोल कर धीरे से आसमानी से कहा,—"इन्हें अब जल्द यहां से लेजाओ!

आसमानी,—"तुम चुपरहो और अपना स्वांग नबिगाड़ो।"

इसकेबाद आसमानी केइशारा करतेही पियारी और इमामबांदी जो वहीं परदे की आड़ में खड़ी हुई थीं बाहर निकल आई

और आसमानी ने उन दोनों की मदद से शाहज़ादे को थाम थून कर दूसरे कमरे में मसनद पर ला लिटाया। इसके बाद वे दोनों तो वहां से चली गईं और आसमानी शाहज़ादे के बदन पर गुलाब का अर्क छिड़क और लखलखा सुंघा कर उसे होश में लाई। होश में आने पर भी कुछ देर तक उसकी बदहवासी दूर न हुई और वह इधर उधर देखता हुआ वहंकी वहंकी बातें करता रहा। उसकी यह हालत देखकर आसमानी ने कहा,—

"हज़रत! इसी दहशत से मैं आपको वहां नहीं लेजाना चाहती थी!"

नसीरुद्दी मसनद पर उठ कर बैठ गया और अपने होशोहवाश को दुरुस्त करके कहने लगा,

"आह, आसमानी! यह मैं क्या देख वो सुन रहा हूं! अल्लाह! मैं बेतरहठगागया,—लेकिनखैर, अब पेश्तर मैं तुम्हाराकुल दास्तान सुनलूं, तब अपनाबयान करूंगा! अफ़सोस, बड़ा ग़ज़बहोगया!"

उसकी बातें सुन कर आसमानी कहने लगी,—"इस वक़् आप के दुश्मनों की तबीयत कुछ नासाज़ होगई है; इसलिये बिहतर होगा अगर इस वक्त वह मनहूस दास्तान आप न सुन कर कोई दूसरा वक्त उसके सुनने के लिये मुकर्रर करेंगे।"

नसीरुद्दीन,—"नहीं, नहीं, अब मेरी तबीयत बदस्तूर दुरुस्तहो गई है, चुनांचे तुम देर न करो और फ़ौरन अपने दास्तान को सुनाजाओ (जेब में से घड़ी निकाल और देखकर) देखो, बारह बज गए और मुझे तीन बजे से पेश्तर ही महल के अन्दर दाखिल हो जाना चाहिए।"

आसमानी,—"जी, मेरे दास्तान के लिये तीन घंटे काफ़ी हैं लेकिन इस वक्त आपकी हालत देखकर मेरा जी आगे पीछे हो रहा है, वरन्‌ और कोई उज़्र मुझे नहीं है।"

नसीरुद्दीन,—"आह, अब तुम नाहक देर कर के मुझे परेशान

न करो और अब अपनी दास्तान पूरी करो। तुम इसे सही मानो कि अब मेरी तबीयत बिलकुल ही सही है।"

आसमानी,—"ख़ैर, जैसी मर्ज़ी आपकी!"

नसीरुद्दीन,—"जल्द कहो!"

आसमानी,—"सुनिये,—आपको याद होगा कि मैं आपको उस मनहूस कबरिस्तान में आने के वास्ते कह कर लौट आई थी!"

नसीरुद्दीन,—"अजी, यह तो बिलकुल ताज़ी बात है!"

आसमानी,—"ख़ैर तो मैं आपसे रुख़सत हो कर यहां आई और बी दुलारी को अपने मकान पर ले जानेका बहानाकरके उसे मैं अपने साथ ले कर उसी कबरिस्तानकी तरफ़ चली। मैं दुलारी को लिये हुई सीधी उसी कबरिस्तान की तरफ़ जाती, लेकिन बी इमाम बांदी ने मेरे घर तलक पहुंचाने के लिये अपनी लौंडी दुलारी के साथ करदी थी, इसवास्ते लाचारीसे मुझे पेश्तर अपनेमकान पर ही आना पड़ा। वहांजाकर मैंने लौंडीको कुछपैसे देकर तुरत वापस कर दिया और इसकेबाद ज्योंही मैं उठीऔर सदरदरवाज़ा खोलकर बाहर निकलने लगीकिबीस पच्चीस नकाबपोश डांकुओंने मेरे घरमें घुस, मेरे मुहँ में लत्ता ठूंस बोजकड़ कर मेरे हाथपैर रस्सी से बांध दिये और बाद इसके सदर दरवाज़ा बन्द करकेवे सबकेसब मकानके अन्दर आकर मेरे माल मता को लूट खसोट कर पोट बांधने लगे। उन कंबख़्तों ने मेरे अजीब वो बेशकीमत दो ताज़ी कुत्तोंको भी मार डाला था, जिनकीकबरें इसी घर में मैंनेबनाई हैं, जोआपको मैं अभी दिखला आई हूं।

"मुझे उन कंबख़्तों ने एक दालान में डालदियाथा औरउनमें से एक, जो सभों का सरदार मालूम देता था, बेहोश दुलारी को उसी कमरे में उठा लेगया जिसमें आज कुछ घंटे पहिले आप तशरीफ़ ले गए थे; क्यों कि उन छः डाकुओं के यक ब यक आपड़ने सेदुलारी बे होश होकर ज़मीन में गिर गई थी।

"गरज़, वह बदज़ात सरदार बेहोश दुलारी को उसी कमरे में उठा लेगया और उसे होश में लाने की तर्कीबें करने लगा। बहुत देर के बाद, जब कि दुलारी होश में आई, तो वह निहायत शोरोगुल मचाने लगी, लेकिन उस सरदार ने उसके भी मुंह में लत्ता ठूंस दिया और अपनी बद ख़्वाहिश उससे ज़ाहिर करने लगा।"

नसीरुद्दीन,—(गुस्से से दांत पीस कर)" तो क्या उस हरामी पिल्ले ने दुलारी के साथ कोई— — — —"

आसमानी,—" हुज़ूर, ज़रा सब्र करें और अख़ीर तक सुनलें।

नसीरुद्दीन,—" ख़ैर, जल्द कहो!"

आसमानी,—" सुनिए, आजकल हैदराबाद से कुछ डाकू सौदागरों के भेष में लखनऊ आए हुए हैं, जिनके सरदार का नाम रुस्तम है। उस वारदात के दो रोज़ पेश्तर, जिसका कि हाल मैं बयान कर रही हूं, उसी बदज़ात रुस्तम ने न मालूम क्योंकर दुलारी को देख लिया और उसी के घर पर उसने मुझे भी देखा। पस, जब मैं दुलारी के मकान से अपने घर को आने लगी, तो वही रुस्तम मेरा पीछा करता हुआ मेरे घर आ और हज़ार दीनारों की एक थैली मेरे आगे रखकर दुलारी से मुलाकात करने की ख़्वाहिश मुझसे ज़ाहिर करने लगा! मैंने यह सुनकर उसकी थैली और उसके नापाक चेहरे पर थूका और गालियां देकर उसे अपने मकान से बाहर चले जाने के लिये कहा! मेरी बेरुखी देखकर वह दांत पर दांत मसमसा कर यों कहता हुआ चला गया कि,—" अगर मैं हैदराबाद के डाकुओं का सर्दार होऊंगा और मेरा नाम रुस्तम होगा तो मैं तुझसे समझ लूंगा!"

नसीरुद्दीन,—" आह, तो तूने इसकी ख़बर मुझे क्यों न दी!"

आसमानी,—" साहब, यही बेवकूफ़ी तो मेरी और दुलारी की भारी बर्बादी का सबब हुई! मगर ख़ैर, मैंने उसकी धमकी की कुछ भी पर्वा न की और उसे एक महज़ लौंडा समझ कर मैंने यह वाहियात हाल न तो आपही से कहा और न बेचारी दुलारी ही से।"

नसीरुद्दीन,—"यह तुमने बहुत बुरा किया, जो यह हाल फ़ौरन मुझ पर ज़ाहिर न किया। मैं तुरत उसे जलती भट्टी में डलवा दिए होता।"

आसमानी,—"बेशक, यह मुझसे बड़ी भूल हुई। ख़ैर, तो यहीं रुस्तम डाकू दुलारीको जब बहुत डराने धमकानेवो लालच देनेलगा, पर दुलारीने बराबर इन्कार कियातो उसने गुस्से में आकर एक लोहे की मुहर लाल करके दुलारी की एक जांघ में दागदी और दूसरी जांघ में एकछुरी मारदी। इसके बाद वह यों बकता झकता और मेरे हाथ में से महलसराके अंदर जानेके हुक्मनामे-वाली अंगूठा ले,यों कहता हुआ मकान से बाहर चला गया कि,—"आसमानी, तुझे तो मैं कच्चा ही खाजाऊंगा और दुलारी पर शाही दर्बार में नालिश करके उसे मैं अपने कब्ज़े में लाऊंगा; क्योंकि उस मुहर के ज़ोर से यह मैं आसानी से साबित कर दूंगा कि दुलारी मेरी जोरू है!!!"

यह बात सुनकर नसीरुद्दीन मारे गुस्सेके बदहवास होगया और दांत पर दांत मसमसा कर बोला,—"आह, कंबख्त, हरामी पिल्ले, बदज़ात, मूज़ी! तुझेमैं जलती आग में फूंक कर मोमयाई बनाऊंगा; लेकिन आसमानी! अब मैं उस ज़ख़्म और मुहर को अभी देखना चाहता हूं!"

आसमानी,—"लेकिन, जनाब शाहज़ादे साहब! यह क्योंकर मुमकिन है! क्योंकि वे दोनों जांघ में ऐसी बेपर्दगी की जगह पर हैं कि जो आपको भला क्यों कर दिखलाए जा सकते हैं!"

नसीरुद्दीन,—"क्यों? क्या वह मेरी माशूका नहीं है?"

आसमानी,—"है, और ज़रूर है! लेकिन जब तक कि शरा के बमूजिब उसे आप अपनी मलका न बनालें, भला उसकी पोशीदः जगह के ज़ख़्म को क्यों कर देख सकते हैं?"

नसीरुद्दीन,—"लेकिन, अब तक, अब दुलारी अच्छी न हो ले, निकाह क्योंकर होसकता है?"

आसमानी,—" हां, बात तो ऐसीही है।"

नसीरुद्दीन,—" ख़ैर, तो तुम सिर्फ़ इतना तो बतलादो कि उस मुहर में उस बदमाश ने क्या इबारत रक्खी है?"

आसमानी,—" रुस्तम, फ़तहअली और वारिसअली वग़ैरह की ख़ाहिश रंडी दुलारी !!!"

नसीरुद्दीन—" हरामज़ादे, बेईमान, सूअर के पिल्ले, दोज़खी कुत्ते, पाजी, बदमाश !!!"

आसमानी,—" हुज़ूर! दुलारी इस ग़म से जीएगी नहीं! आह, वह बेहोशी के आलम में भी आपका नाम कभी कभी ले उठती है।"

नसीरुद्दीन,—" आह, मैंने भी सुना था, जो अभी तक मेरे जिगर पर नक़्श है।"

आसमानी,—" अच्छा, हुज़ूर! अब आप बयान करें कि हुज़ूर पर क्या बीती और हुज़ूर की ख़िदमत में कौन दुलारी पहुंची!"

इस पर नसीरुद्दीन ने वे कुल अहवाल मुफ़स्सिल तौर से बयान किए, जो नाज़रीन जान चुके हैं;पस यहां पर फिर उनके दोहराने की ज़रूरत नहीं है। ग़रज़ यह कि जब उसकी ज़बानी कुल हाल आसमानी ने सुना, तो वह निहायत हैरान हुई और बोली,—

" हुज़ूर, इन डाकुओं ने तो बड़े ग़ज़ब का काम किया! हुज़ूर से करोड़ों के माल भी उड़ा ले गए और इक़रारनामें के सादे स्टाम्प पर दस्तख़त भी करा लेगए!!!"

नसीरुद्दीन—" लेकिन सबसे ज़ियादह ख़ूबी का काम तो उन कंबख़्तों ने यह किया कि मैं यह मुतलक़ न जान सका कि वह औरत दुलारी नहीं, बल्कि कोई और ही मक्कारा है!"

आसमानी—" देखिए, हुज़ूर! अब ख़ुदा को याद कीजिए कि जिसमें वह परवरदिगार दुलारी को जल्द सेहत बख़्शे!"

नसीरुद्दीन,—" उसका इलाज तो ख़ूब मुस्तैदी के साथ हो रहा है न!"

आसमानी,—" हां, हुज़ूर ! अपने भरसक तो सभी कुछ होरहा है, आइन्दः खुदा की मर्ज़ी ! "

नसीरुद्दीन,—' तो ऐसा क्यों न करो कि उसे मेरे नज़रबाग में लेचलो। वहां मैं अपने हकीमों से उसकी दवादारू कराऊंगा और खुद ख़िदमत करूंगा।"

आसमानी,—" लेकिन उसकी मां शायद इसे मंज़ूर न करे।"

नसीरुद्दीन,—" क्यों ? इसमें क्या बुराई है ? "

आसमानी,—" बुराई तो कुछ भी नहीं है, लेकिन वह बगैर शादी हुए, आपके यहां नहीं जाना चाहती।"

नसीरुद्दीन,—" नहीं, तुम इस बात की कोशिश करो और दुलारी की मां को समझा बुझा कर राज़ी करो। वह जैसी दुलारी कोमां है वैसोही मेरा भी है, उससे तुम यहां कहो कि वह मेरे यहांअपनीबेटी, को लेकर चले और इस बातका इतमीनान रक्खे किअगर नसीरुद्दीन के लुतफ़े में फ़र्क नहीं है तो उसकी ज़बान में भो कभी फ़र्क न पड़ेगा और वह दुलारी को अपनी मलका ज़रूर बनाएगा।"

आसमानी,—" बेहतर, मैं उसकी मां से इस अम्र में बात चीत करके हुज़ूर से अर्ज़ करूंगी। "

नसीरुद्दीन,—" सिर्फ़ बात चात नहीं, बल्कि उन्हें मेरे नज़रबाग में चलने के लिये राज़ी करो।"

आसमानी,—" बिहतर ! "

नाज़रीन, शायद आप यह बात बख़ूबी समझते होंगे कि दुलारी अब मज़े में है और उसका ज़ख्म भरने पर आ गया है। पस, अपना ऐसा स्वांग उसने आसमानी के सिखलाने से ही नसीरुद्दीन को दिखलाया और उन दोनोंकी आपसमें जितनी बातें हुईं, उन्हें सुनकर वह दिलही दिलमें निहायत खुश हुई और आसमानीको उसने अपनी पूरी मददगार समझा। लेकिन, वाह ! मक्कारा आसमानी ने भी कैसे ढंग की बातें गढ़ीं कि नसीरुद्दीन को उसकी बातोंमें बनावट की ख़र

बू न आई और दुलारीकी खुशकिस्मती सातवें फ़लक तलक बढ़गई!

किस्सह कोताह, अपने नज़रबाग में, शामके वक्त हाज़िर होने का हुक्म आसमानी को देकर नसीरुद्दीन उठ खड़ा हुआ और जाते वक्त एक मर्तबः फिर दुलारीको देखकर तब वह उस मकान से बाहर हुआ। उस वक्त रात के तीन बज गए थे। उस वक्त भी आसमानी उसके साथही आई थी।

नसीरुद्दीन पहिले आसमानीके मकानपर आया लेकिन वहां वह ठहरा नहीं। उसने दोसौ अशरफ़ियों की थैली आसमानीको दे और अपने गुलाम कादिर को अपने साथ ले वह उस। (आसमानी) से रुख़सत हुआ और चुपचाप अपने महल में आकर सो रहा; लेकिन दुलारी की हालत पर ख़याल करके उसे ज़रा नींद न आई। कभी वह रह रह कर अपने अनूठे और नौलखे हार का ख़याल करके हाथ मलता, कभी अपनी एक करोड़ के लागत की जवाहरात की पेटीका ध्यान करके झींखता, कभी एकरारनामे के स्टाम्प पर दस्तख़त करने के नतीजे पर गौर करके रोता और कभी उसी (नकली) दुलारी से एक मर्तबः फिर मिलनेके वास्ते बेचैन होता था। गरज़ यह कि शाहज़ादा नसीरुद्दीन इसी क़िस्म के तरह तरहके ख़यालों में रातभर उलझा रहा और जब उसे दुलारी,—असली दुलारी के इश्क ने बहुत ही सताया तो उसी वक्तसे उसने खाना पीना तर्क करके अपने तई ख़ासा मजनूं बनाना शुरू किया।
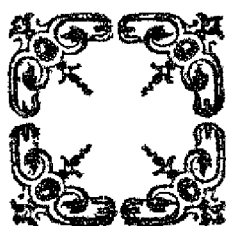
चौदहवां बयान।

सुबह का सुहावना वक्त है जब कि दुलारी एक साफ़ औ सुहावने कमरेमें बैठी हुई कोई किताब देख रही है और उसी के पास उसकी मां पियारी और इमामबांदी भी बैठी हुई कसीदे काढ़ रही हैं। आपसमें उन तीनोंकी कुछ मामूली बातें भी होती जाती हैं और साथही साथ पियारी और इमामबांदी दुलारी की शादीके बारेमें तरह तरह के मनसूबे भी बांधती जाती हैं, जिन्हें दुलारी बड़े चावसे सुनती, पर उस बारेमें खुद कोई बात चीत नहीं करतीहै। इतने ही में एकाएक दुलारी बोल उठी,—

"अल्लाह, आज अब तक बी आसमानी न आई?"

"लो, बेटी! मैं याद करते ही आ पहुंची;" यों कहती और हंसती हुई आसमानी भी वहीं आकर बैठ गई और सबकी सब खिल खिला कर हंस पड़ीं।

इमामबांदी ने कहा,—"वल्लाह, तुम तो नाम लेते ही आ टपकी! तुम्हारी बड़ी उम्र है!"

आसमानी,—"अय, तौबः! अब मैं ढेर जीकर क्या करूंगी!"

पियारी ने हंसकर कहा,—"अल्लाह आलम! अभी बी आसमानी! अभी तुम हुई के दिनकी हो!"

यह सुनकर दुलारी खिलखिला कर हंस पड़ी और आसमानी की तरफ देखकर कहने लगी,—"क्यों, बड़ीअम्मा! क्या अभी तुम्हारे दूधके दांत नहीं टूटे हैं?"

आसमानी,—"अय, बलाएं लूं! मैं सदके, मैं कुर्बान!!! अरी मेरी दुलारी बेटी! मेरे दूधके दांत अभी कहां टूटे! उन्हें तो तेरा बेटा तोड़ेगा!"

यों कहकर उसने वहीं पर खेलते हुए दुलारी के बेटी और बेटेको उठाकर अपने कलेजेसे लगा लिया और योंही देर तक उन सभोंमें तरह तरह की चुहल की बातें होती रहीं

इसके बाद आसमानी का इशारा पा और दुलारी के बेटी बेटे को लेकर पियारी और इमामबांदी वहांसे उठ गई और निराला देखकर दुलारी ने कहा,—

"बड़ी अम्मा! तुमने तो गज़ब किया, सितम ढाहा और कमाल किया! वल्लाह, तुम्हारी कार्रवाइयां तो ऐसी उम्दः हुई कि जिसका नाम!"

आसमानीको अब दुलारी बड़ी अम्मा कहने लग गई थी। सो उसकी बातें सुनकर आसमानीने कहा,—"अरी बेटी! ऐसे ऐसे लौंडों को फुसलाना आसमानी के बाएं हाथका काम है; लेकिन ख़ैर, अब तुम यह तो बतलाओ कि शाहज़ादे के नज़रबाग में चलोगी!"

दुलारी,—"जैसी तुम्हारी राय हो!"

आसमानी,—"मेरी अगर राय पूछती हो तो ज़रा खिंची रहो और उसे अपने इश्क़ में ज़रा जलभुन कर कबाब हो जाने दो, तभी अक्सीर बनेगी!"

दुलारी,—"बेहतर, ऐसाही करूंगी!"

आसमानी,—"इस बारेमें जी चाहे तो अपनी मां और बी इमामबांदी से भी मशविरा करलो।"

दुलारी,—"मैंने बात चलाई थी, जिसपर उन दोनों ने भी यही रायदी, जैसी कि अभी तुमने ज़ाहिर की है; और अख़ीर में उन दोनोंने तुम्हारी सलाह परही यह बात छोड़ दी है।"

आसमानी,—"ठीक है। तो मैं आज शामको उससे मिलूंगी और साफ़ कह दूंगी कि बगैर शादी किए, वह न तो तुम्हारे नज़रबाग में आवेगी न तुम्हारे कोई तोहफेही लेगी और न अब मुलाकातही करेगी।"

दुलारी,—"बहुत ठीक!"

आसमानी,—"ख़ैर तो अब इस वक्त मैं जाती हूं, क्योंकि मुझे कई कामहैं। शाम को मैं शाहज़ादे से नज़र बाग में मिलूंगी और जो कुछ हाल होगा, उसका बयान मैं कल तुमसे करूंगी।"

यों कहकर आसमानी वहांसे रुख़सत हुई।

पन्द्रहवां बयान ।

नसीरुद्दीनहैदरकी बेचैनी यक ब यक इतनी बढ़ीकि जिसे देख कर उसके दोस्त अहबाब निहायत ताज्जुब करने लगे! क्यों कि इधर कुछ दिनोंसे नसीरुद्दीनको खुशदेखकर उसके दोस्त यही समझनेलगे थे कि,-'अब इसने शायद दुलारी का बिलकुल खयाल दिल से भुला दियाहै !' लेकिन बाद कुछ दिनों के जब उसने फिर साबिक दस्तूर वहशीपन अख्तियार किया तो लोगों ने उसे बहुत कुछ समझाया, लेकिन सब बेकार हुआ और उसने खाना पीना कतई छोड़ दिया।

बादशाह गाज़िउद्दीनहैदर ने और बादशाह—बेगमने भी उस को बहुत नसीहत की, लेकिन उसने किसीकी एक न सुनी और सभोंसे यही कहा कि,—'अगर बादशाह मुझे दुलारीके साथ शादी करने की इजाज़त न देगा, तो मैं अपनी जान देदूंगा।'

गरज़ यह कि जब लोगोंने—खासकर बादशाह और बाद शाह बेगमने देखा कि,—'वाकई यह लौंडा अपनी ज़िद न छोड़ेगा और बगैर आबोदाने के अपनी जान ही खोदेगा, तो बादशाह गाज़िउद्दीनहैदर ने अपनी मलका (बादशाह-बेगम) से सलाहकर के नसीरुद्दीनहैदर को दुलारीके साथ शादी कर लेनेकी इजाज़त दी और तब उसने ब दस्तूर खाना पीना शुरू किया।

यह बात मैं लिख आयाहूं कि नसीरुद्दीन ने अपने नज़रबागमें दुलारी को ले जानेके वास्ते आसमानी को बहुत ताकीद की थी लेकिन आसमानीने उससे मिल कर साफ़ जवाब दे दिया और कह दिया कि,—"जबतक शादी न होगी,दुलारी यहां नहीं आवेगी।"

इस जवाबको सुनकर, नसीरुद्दीन निहायत ग़मगीन हुआ, लेकिन आसमानीने उसे दिलासा देकर राज़ी किया। नसीरुद्दीनने बहुत चाहा कि,—'फिर दुलारीसे मुलाकात हो;' लेकिन इसे भी आसमानी ने मंजूर न किया और कहा कि,—'दुलारी अब उसी दिन मिलेगी, जब कि आपके साथ उसकी शादी होगी।'

ग़रज़, इधर तो आसमानी रोज़ ब रोज़ नए नए फ़िकरे सुनाकर नसीरुद्दीनके दिलको ख़ून करने लगी और उधर दुलारी का इलाज निहायत मुस्तैदीके साथ होने लगा।

इस बातको तो अब लखनऊ के हर ख़ासो आम जान गए थे कि, 'शाहज़ादे नसीरुद्दीन के साथ दुलारी की शादी ज़रूर हो होगी;' इस लिये इमामबांदी निहायत मुस्तैदी के साथ उसकी ख़िदमत करने लगी, जिसमें वह ख़ुश हो! पियारी और आसमानी खूब दौड़ धूप करने लगीं और दुलारीकी दूसरी जांघमें भी जिस में कि रुस्तमने वह छुरा छापदी थी, आसमानी की रायसे नश्तर लगाया गया था और वह ज़ख़्म दिन ब दिन भरता आता था। इसके अलावे दुलारीकी बड़ी हिफ़ाज़त की जाती थी, जिसमें फिर किसी तरफ़से आकर रुस्तम कोई फ़साद न मचावे। उधर फ़तह अली और वारिसअली भी रुस्तम और उसकी मां की बख़ूबी खोज ढूंढ कररहे थे, लेकिन उन दोनोंका पता नहीं लगता था।

आसमानी अब एक बहुत ही उम्दः और आलीशान मकान में आरही थी और उसने अब दो एक लौंडी ग़ुलामोंको भी रख लिया था; क्यों कि शाहज़ादे नसीरुद्दीन हैदर ने उसे एक उम्दः मकान ख़रीद दिया था।

अब नसीरुद्दीन खूब ख़ुश नज़र आताहै, शादीकी तैयारियां खूब धूम धामके साथ की जारही हैं और दुलारी भी धीरे धीरे अच्छी होरही है।

ख़ैर अब मैं इस क़िस्से को तूल न देकर मुख़्तसर तौरपर ही लिखना मुनासिब समझता हूं।

सन् १८२६ ई० माह फ़ेब्रुअरी की २२ वीं तारीख़ को खूब धूमधाम के साथ दुलारी की शादी अवधके शाहज़ादे और लखनऊके बादशाह ग़ाज़ीउद्दीनहैदर के इकलौते बेटे नसीरुद्दीनहैदरके साथ होगई और दुलारीका नाम 'मलिका ज़मानी' रक्खा गया।

उस तारीख़से दुलारी तो नसीरुद्दीन के नज़रबाग़ में रहने लगी थी और पियारी साबिकदस्तूर इमामबाड़े हीके घर रहती थी। आसमानी अब ज़ियादहतर दुलारी हीके पास रहतीथी लेकिन दुला-री को अब आसमानी फूटी आँखों नहीं सुहातीथी, पर ज़ाहिरामें वह आसमानीसे कुछ नहीं कहती थी, और बातिन में यही चाहती थी कि,—'किसी तरह यह चुड़ैल दूर ही रहे तो अच्छा!'

इसकी वजह यही थी कि दुलारी निहायत ओछी तबीयत की औरत थी और खुदगरज़ी उसके रोएं रोएं में कूट कूट कर भरी हुई थी, इसलिये वह आसमानी के अब अपने पास इस गरज़ से नहीं फटकने देना चाहिती थी कि जिसमें उसे आसमानी की मुट्ठी में न रहना पड़े। और यह बात भी थी कि वह अपनी सारी ख़राबियों को, जिनका कि हाल कहा जा चुका है जड़ बुनियाद आसमानी ही को समझती थी और शाहज़ादे नसीरुद्दीन के पास से जो किसी मक्कारी दुलारी ने बहुत सा ज़र व जवाहिर ठग लिया था, इसे भी वह आसमानी ही की कारवाई समझती थी! क्योंकि आसमानी ने जब दुलारी के उस कबरिस्तान में फटकार बताई थी तो उस (दुलारी) के बहुत से पोशीदे हाल उसने बयान किए थे, जिन्हें दुलारी भूली न थी। पस, वह आसमानीसे बहुत डरती थी और उसे एक ख़ासी शैतान की ख़ाला ही समझती थी। पस, वह यह नहीं चाहती थी कि,—'ऐसी मक्कारा कुटनी के ताबे होकर रहना पड़े' इसलिये उसने ज़ाहिरामें तो आसमानीसे कुछ न कहा, लेकिन अपने दिलको उसकी तरफ़से धीरे धीरे खैंचना शुरू किया!

आसमानी भी छटी हुई शैतानकी ख़ालाथी! वह उड़ती चिड़िया पहचानती और पानीमें आग लगाती थी, सो भला उससे दुलारीकी चालें कब छिप सकती थीं! मतलब यह कि उसने भी दुलारी के अन्दरूनी मतलबको बखूबी समझ लिया और धीरे धीरे खुद ब खुद 'कनाराकशी' करना शुरू किया, मगर ज़ाहिरदारी में दोनों में से

किसीने भी वट्टा न लगने दिया।

अबसे मैं दुलारी को बराबर 'मलिका ज़मानी' लिखूंगा, और उस बात को साबित करूंगा कि उसने नसीरुद्दीन को किस तरह अपना गुलाम बना लिया था और बादशाहत का असली लुत्फ़ कहां तक उठाया था! मतलब यह कि उसने अपनी ख़ूबसूरती, चालकी, ख़ुशअख़लाकी, तबीयतदारी, हुनरमंदी, अकलमंदी वो दूरअन्देशी वगैरह मददगारों की मदद से नसीरुद्दीन ऐसे ऐयाश शख़्स को बिलकुल अपने ताबे कर लिया और बड़ी शानोशौकत से उसने महलसरा की बेगमों पर धीरे २ अपना बख़ूबी दबदबा जमाया। हां; जबतक बादशाह गाजिउद्दीनहैदर जीता रहा, तबतक तो वह सिर्फ़ नसीरुद्दीन की ही मालिका बनी रही, लेकिन बाद उसके इन्तकाल करने के वह सारी बादशाहत की मालिक बन बैठी थी।

मलिका ज़मानी बड़ी किस्मतवर औरत थी कि उसके साथ नसीरुद्दीनहैदर की शादी होने के कुछ ही दिनों के बाद अवध की बादशाहत का तख़्त उसके लिए ख़ाली होगया! यानी २८ अक्टूबर, सन् १८२७ ई० को बादशाह गाजिउद्दीनहैदर कज़ा कर गया और बड़े धूम धाम के साथ नसीरुद्दीनहैदर लखनऊ के बादशाही तख़्त पर बैठा! फिर क्या था! फिर तो मलिका ज़मानी ने अपनी ख़ूबही शानोशौकत दिखलाई और भरपूर अपना अमल दख़ल जमाया। यहां तक कि अब नसीरुद्दीन की मां,—बादशाहबेगम वो नसीरुद्दीन की दीगर बेगमें भी दिलही दिल में उससे डरने लग गई थीं और सभी उसकी ख़ुशामद में लगी रहती थीं।

ऐसे वक्त में आसमानी बेचारी को कोई पूछता न था। गो, ज़ाहिरा में मलिका ज़मानी ने उसे कभी नहीं दुतकारा था लेकिन अब आसमानी दबी बिल्ली के म्वाफ़िक रहती थी और महलसरा के अन्दर उसे कोई नहीं पूछता था। नसीरुद्दीन भी अब उसकी तरफ़ मुख़ातिब नहीं होता था; लेकिन फिर भी आसमानी गाफ़िल न थी और वह भीतर

ही भीतर किसी मज़बूत पाए का सहारा पाकर किसी गैरी ढा कार्रवाई की बंदिश बांध रही थी, जिसका हाल आगे चल कर लिख जायगा।

इतना सब होने पर भी नसीरुद्दीन अपने बेशकीमत जवाहिरात और नौलखेहार के ठगनेवाली नकली दुलारी को नहीं भूला था और उसने उस अजीब औरत और रुस्तम डाकू के पता लगाने के बोझको आसमानी ही पर डाल दिया था, क्योंकि उसे किसी इकरारनामेको सादे स्टाम्प पर दस्तखत करने का हर दम ख़याल बना रहता था।

आसमानी भी रुस्तम और उसकी मां ज़हूरन के तलाश में जी जान से लगी हुई थी, क्यों कि उसकी सारी बर्बादी का डब्बा, जिसे उसके ख़याल से रुस्तम ले गया था, उसकेकब्ज़े सेनिकल गया था; लेकिन उन दोनों मां बेटों का कहीं भी पता निशान नहीं लगता था।

मलिका ज़मानी ने अपना पाया मज़बूत करने केलियेअपनी मां 'पियारी' और फ़तहमुराद की बहिन 'करीमुन्निसा' वो फ़तहमुराद की चाची इमामबांदी को पास बुला कर महल में रक्खा और फ़तहअलीऔर वारिसअली कोशाहीदरबार मे बड़ेबड़े ओहदेदिलवा कर नव्वाब की खिलत दिलवा दी। बाद इसके इमामबांदी की खुशामद से खुश हो कर उसने इमामबांदी की लड़की जमालुन्निसा को भी महल में बुला लिया और उसके शौहर कासिमबेग को भी नव्वाब की खिलत दिलवा कर शाहीदरबार में एकबड़ा ओहदा दिला दिया। क्यों कि उसने हुस्नपरस्त बादशाह को यह बात भली भांति समझादी थी कि,—'ये लोग बड़े खानदान के हैं, लेकिन गर्दिश से इस तबाही हालत में आ गए थे, वगैरह वगैरह! अपने को भी दुलारी ने दिल्ली के बादशाही खानदान की बतलायाथा।

अपनीमां ज़हूरनके साथ रुस्तमकहीं "लखनऊसे बाहरनहींगया था, वह वहीं पर किसीकी पूरी मदद से रूपोश हो कर चैन सेहलुवा पूरी उड़ता था, इसलिये मलिका ज़मानी की कार्रवाइयों की सारी

ख़बर उसे उसके उसी पोशीदः मददगार से बराबर मिलाकरती थी, जिसे सुन कर वह दिल ही दिल में कुढ़ता, दांत पीसता और ठंढी सासें भरा करता था, लेकिन बेचारा कर क्या सकता था !

एक दिन किसी ढब से, यायों समझिये कि अपने किसीपोशीदा मददगार की मदद से, रुस्तम रात के वक्त दुलारी की ख़्वाबगाह में यक ब यक पहुंच गया। उस वक्त वह अकेली थी; लेकिन रुस्तम को देख कर वह घबरा गई और बोली,—" अल्लाह, तुम यहां कैसे आ पहुंचे ? "

रुस्तमने कहा,—" मेरी खुशकिस्मती ने मुझे यहां तलक पहुंचा दिया। सुनो, बेगम मलिका ज़मानी ! अब तुमसे मैं किसी किस्म का ताल्लुक नहीं रक्खा चाहता और न तुम्हारी मर्जी के खिलाफ़ कोई काम ही किया चाहता हूं। पसतुमसे मैं सिर्फ इतनीही मदद चाहता हूं कि तुम पुराने रिश्ते या दोस्ती का ख़याल कर के मुझे भी शाही दरबारसेकिसी उमदः ओहदे केसाथ नवाबीकी खिल्अत दिलवा दो।"

दुलारी बड़ी चालाक औरत थी। सो उसने बेमौका समझ कर रुस्तम की कुल कार्रवाइयों का, जो किउसने दुलारी केसाथकी थी, ज़िक्र छोड़ कर, औरबात बनाकर कहा,—" वल्लाह, यहतो बहुतही आसान बात है ! ऐसा तो मैं कल ही करा दूंगी। अच्छा, तुम अपने मकान का पता मुझे बतला दो और यह भी ज़ाहिर कर दो कि तुम किस रास्ते से या किसकी मदद से बे धड़क यहां तक चलेआए ! "

रुस्तम ने उसकी बात सुन कर अपने मकान का झूंठापता दिया और कहा,—" जिस रास्ते से मैं आया हूं, उसका पता तुम अगर मेरे साथ चलो तो जान सकती हो; क्यों कि उस रास्ते का हाल मैं बयान नहीं कर सकता; इसका सबब यही है कि मैं उस मकान का नाम नहीं जानता। और मैं किसीकी मदद से यहां नहीं आया हूं; मुझे खुदा ने यहां तक पहुंचाया है। "

लेकिन मलिका ज़मानी को उसके साथ जाना मंज़ूर न था, क्यों

कि वह दिल ही दिल में उससे बहुत ही ख़ौफ़ खाती थी, इसलिये उसने सिर्फ़ इतना ही कहा कि,—" ख़ैर, रास्ता मैं फिर देख लूंगी, क्यों कि तुम मेरे पास आख़िर बराबर आओहीगे। पस, इस वक्त अब रुख़सत होवो।"

इतना कह कर दुलारी ने बड़ी मुहब्बत के साथ रुस्तम को अपने गले लगा कर उसके गालों को चूम लिया।

इन सब कार्रवाइयों को आड़ में खड़ी हुई आसमानी देख रही थी। सो वह चट कमरे में जा पहुंची और बोली,—" हुज़ूर आदाब अर्ज़ है!"

उसकी आवाज़ सुन कर मलिका ज़मानी निहायत शर्मिन्दः हुई और बोली,—"ओ, आसमानी! शायद तुम इन्हें पहचानता होगी! ये मेरे एक पुराने दोस्त हैं!"

आसमानी ने कहा,—"जी हां, बल्कि पुराने शौहर मियां रुस्तम!"

मलिका ज़मानी,—"वाह, तब तो तुम इन्हें बख़ूबी पहचानती हो!"

आसमानी,—" जी हां, लेकिन ख़ैर, अब अगर हुज़ूर हुक्म दें तो लौंडी इनके साथ साथ जाकर रास्ता देख आवे!"

मलिका ज़मानी,—" ओफ़! तो तुमने कुल बातें भी सुनी हैं!"

आसमानी,—" इत्तिफ़ाक से ऐसा हुआ क्योंकि मैं भी ऐन वक्त पर पहुंच गई थी और मेरे आजाने से इतना और भी हुआ कि मैंने कमरे की ड्योढ़ी की हिफ़ाज़त भी की!"

इसके बाद मलिका ज़मानीने रुस्तमको रुख़सत करके रास्तेका हाल दर्याफ्त करने की नीयत से आसमानी को उसके साथ किया।

आसमानी रुस्तमको पाकर निहायत ख़ुश हुईथी और उसेफांसने की फ़िक्र में लगी थी। वह चाहती थी कि रुस्तम को महलके अंदरही गिरफ्तार कराकर उसेमरवा डालूं, लेकिन ऐसा करनेसे उसे उसका इनआम क्योंकर मिलता! इसलिये वह चुपचाप थी, लेकिन एक अंधेरी कोठरी में पहुंच कर रुस्तम ग़ायब होगया और आसमानी परीशान

होकर मलिका ज़मानीके पास लौट आई थी ! उसने गो, सच्चा हाल अपनी नाकामयाबी का मलिका ज़मानी को सुनाया, लेकिन उसने आसमानी की बात पर यकीन न करके उसकी इस बात को भी झूठी और शरारत समझा; लेकिन इस वारदात से वह आसमानी से कुछ दब ज़रूर गई थी !

नाज़रीन ! यही मलिका ज़मानी हाथ में मोमी शमादान लिए हुई उस वक्त मेरे रूबरू आ खड़ी हुई थी, जबकि आसमानी मुझे सुरंगके रास्ते से शाहीमहलसरा के अन्दर लेगई थी !!!

अब इसके आगे का किस्सा चौथे हिस्से में आप लोग देखें।

तीसरा हिस्सा खतम।

आगे का हाल चौथे हिस्से में देखो।